प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, भविष्यवक्ता और तन्त्र-मन्त्र विशेषज्ञ

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

मन्त्र–साधनाओं पर एक प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक रचना



गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

मन्त्र-साधना वास्तव में जीवन में पूर्णता लाती है, इसके माध्यम से हम आने वाली बाधाओं और कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं तथा आर्थिक उन्नति भी प्राप्त कर सकते हैं।

पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा, बच्चों का बौद्धिक-विकास, पति-पत्नी सम्बन्धों में मधुरता, शत्रु-भय से मुक्ति, कन्या-विवाह, व्यापार-वृद्धि जैसे और भी अनेकानेक कार्य मन्त्रों की शक्ति से सिद्ध किए जा सकते हैं, इसीलिए इन्हें जीवन का प्रकाश-स्तम्भ कहा गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ज्योतिषाचार्य, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र विद्या विशारद और भविष्यवक्ता डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से प्राप्त मन्त्र-साधनाओं द्वारा इस पुस्तक को प्रामाणिक और महत्वपूर्ण बना दिया है।

हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित तंत्र-मंत्र पर आधारित पुस्तकें

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

- श्मशान भैरवी
- हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियां
- रहस्यमय अज्ञात तन्त्रों की खोज में
- गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य
- तन्त्र साधनाएं
- तन्त्र : गोपनीय रहस्यमयी सिद्धियां
- नवीन अंक ज्योतिष

गॉर्डन स्मिथ

- लोक परलोक का आत्मादूत

जे. डी. गोयल

- मृत्यु के बाद : क्या, कहां और कैसे?

विलियम जे. औस्बी

- हिप्नोटिज़्म

पं गोपीनारायण मिश्र

- भारतीय ज्योतिष

हिन्द पॉकेट बुक्स
देश-भर के प्रमुख रेलवे, रोडवेज व अन्य बुक स्टालों से लें, न मिलने पर हमें लिखें।
जे-40, जोरबाग लेन, नई दिल्ली-110003

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली



हिन्द पॉकेट बुक्स

अपनी बात

यूं तो हमारा जीवन ग्रहों से संचालित है और ज्योतिष के माध्यम से हम अपने भाग्य को पढ़ सकते हैं तथा आने वाले समय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु जीवन में पूर्णता मन्त्रों के माध्यम से ही सम्भव है।

आने वाले समय में जो दुर्घटनाएं हैं, परेशानियां या बाधाएं हैं, अड़चनें या कठिनाइयां हैं, वे ज्योतिष के माध्यम से दूर नहीं हो सकतीं। उन प्रतिकूल घटनाओं को दूर करने में मात्र मन्त्र ही सहायक हैं। मन्त्रों के माध्यम से हम आने वाले जीवन के कांटों को दूर कर अपना रास्ता सुगम और सरल बना सकते हैं।

मन्त्र साधना वास्तव में जीवन की पूर्णता ही है। इसके माध्यम से जहां एक तरफ़ हम आने वाली बाधाओं और कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं, वहीं इसके माध्यम से हम अपने जीवन में आर्थिक उन्नति भी ला सकते हैं, परिवार की समस्याओं को भी दूर कर सकते हैं।

बालकों की बुद्धि का विकास, पति-पत्नी के सम्बन्धों में मधुरता, शत्रुओं को परास्त करना, कन्या का विवाह, व्यापार में वृद्धि और ऐसे सैकड़ों कार्य सम्पन्न कर सकते हैं, जो हमारे जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इसीलिए मन्त्रों को जीवन की 'सर्चलाइट' कहा गया है, जिसके प्रकाश में व्यक्ति तीव्रता से आगे बढ़ सकता है और जल्दी-से-जल्दी मंज़िल को पा सकता है।

इस पुस्तक में वे दुर्लभ मन्त्र दिए गए हैं, जो सर्वथा गोपनीय रहे हैं। उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से प्राप्त मन्त्र-साधनाओं के समावेश ने इस पुस्तक को अत्यधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण बना दिया है। यह एक संग्रहणीय पुस्तक है, जो

प्रत्येक घर में रखने योग्य है। इसके माध्यम से आप अपने जीवन की प्रत्येक समस्या को सुलझा सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक प्रत्येक पाठक के लिए महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होगी।

—डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर-342001 (राजस्थान)

सद्गुरुदेव नारायणदत्त श्रीमाली की ज्ञान-यात्रा

वेद ही सभी प्रकार की विद्याओं के आदि स्रोत हैं। ऋषियों ने वेदों के आधार पर अपनी-अपनी व्याख्या उपनिषदों में स्पष्ट की और यही ज्ञान आगे चलकर पुराण संहिता आदि के रूप में स्पष्ट हुआ। जो ज्ञान हमारे प्राचीन ऋषियों ने दिया, वही ज्ञान मानव जीवन का आधार है। आज हम मानव सभ्यता के विकास की बात करते हैं। यह विकास उचित दिशा में हुआ है, लेकिन इसके साथ-ही-साथ जीवन का सार्वभौमिक सिद्धान्त –

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भ्रदाणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

अर्थात सारे व्यक्ति रोग-शोक से रहित हों, सब लोग अपने जीवन में प्रसन्नता का अनुभव करें और स्नेह में निरन्तर वृद्धि हो, दुःख का सदैव नाश होता रहे। यह सिद्धान्त वेदों में ब्रह्मा के श्रीमुख से उद्धृत है, लेकिन आज यह सिद्धान्त कहां फलित हो रहा है? उन्नति की इस अन्धी दौड़ में मनुष्य ने बाहर की यात्रा तो बहुत तेज़ी से की, नए-नए आविष्कार, दूरस्थ ग्रहों की यात्रा, विश्व में संचार सम्पर्क सब-कुछ बढ़ गया। जीवन के हर पक्ष के लिए विज्ञान ने नवीन रचनाएं कीं, लेकिन उससे भी महत्त्वपूर्ण स्थिति यह है कि क्या आधुनिक विज्ञान मनुष्य को अपने भीतर की यात्रा कराने में समर्थ हो सका? इतनी उन्नति के बावजूद संसार में असन्तोष, हिंसा, लूट-खसोट, व्यभिचार, अत्याचार, असुरक्षा की भावना बढ़ती ही जा रही है। आपसी प्रेम और सद्भाव क्यों कम हो रहा है? मनुष्य के जीवन में सुख के सभी उपकरण हैं, लेकिन अन्तर्मन में आनन्द के उपकरण कहां खो गए?

ये ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिनका समाधान हमारे वेदों, उपनिषदों में स्पष्ट है। ज्योतिष, आयुर्वेद, योग, साधना, तपस्या इन्हीं से निकली हुई शाखाएं हैं।

विज्ञान हमारी वैदिक संस्कृति में मूल रूप से विद्यमान रहा है, इसीलिए चरक जैसे

महान चिकित्सक, सुश्रुत जैसे शल्य चिकित्सक, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे खगोलशास्त्री भी हुए हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धान्तों की स्थापना की। इन्हीं के साथ महान ज्ञानी ऋषि भी हुए हैं – शंकराचार्य, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, अत्रि, कणाद, वेद व्यास, जिन्होंने जीवन के सिद्धान्तों की व्याख्या की। उनके ज्ञान का मूल आधार यह था कि किस प्रकार मनुष्य अपने जीवन में जन्म से मृत्यु तक की यात्रा स्वस्थ शरीर और चित्त के साथ कर सके। इसके लिए मन्त्रों की रचना हुई। तन्त्र विज्ञान अर्थात क्रिया विज्ञान का विकास किया गया और उसके लिए आवश्यक उपकरण यन्त्र का निर्माण हुआ। ब्रह्मांडीय शक्ति, जिसे देव शक्ति माना गया, उसके और मनुष्य के बीच तारतम्य बैठ सके, उसी हेतु साधना विज्ञान विकसित किया गया। ऋषियों का निश्चित सिद्धान्त था कि ब्रह्मांडीय शक्ति अनन्त है और इस अनन्त ऊर्जा से मनुष्य निरन्तर शक्ति प्राप्त कर सकता है। उस शक्ति को अपनी शक्ति के साथ संयोजन कर, योग कर वह जीवन के दुखों का निराकरण कर सकता है। देवी-देवता, सम्मोहन, आकर्षण, साधना, विज्ञान, मन्त्र, अनुष्ठान, यज्ञ, मुद्राएं इसी सिद्धान्त का प्रकट स्वरूप हैं। ऋषियों की परम्परा में इस साधना ज्ञान का विकास इस शताब्दी में नवीन रूप से अद्वितीय सिद्ध पुरुषों द्वारा किया गया है।

ऐसी ही विशेष दिव्यता के साथ हर युग में ईश्वरीय सत्ता का स्वरूप इस धरा पर महापुरुषों के रूप में प्रकट होता ही है, जो अपने ज्ञान, अपने जीवन चरित्र और अपनी चेतना द्वारा पूरे भूमंडल को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। ऐसे युग-द्रष्टा मनुष्य के जीवन में ज्ञान की क्रान्ति लाते हैं, हमारे जीवन का यह सौभाग्य है कि इस घटाटोप अन्धकार-भरे भौतिकता के आडम्बर में बंधी, अपने मूल मूल्यों से विमुख होती जा रही भारतीय संस्कृति को **सद्गुरुदेव परहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली** जैसे महान व्यक्तित्व अवतरित हुए, जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण इस बात में व्यतीत हुआ कि किस प्रकार मानव-मूल्य उदात्त हो, व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं की इच्छा के अनुसार प्रसन्नचित्त जीवन जी सके, अपनी आत्मा का प्रकाश स्वयं देख सके और उसे हर समय यह पूर्ण विश्वास रहे कि उसके पास भौतिकता के साथ आध्यात्मिक सत्ता, ईश्वरीय शक्ति, आराध्य शक्ति, गुरु शक्ति सदैव है, जो उसे जीवन के गहरे अन्धकार-भरे कुएं से बाहर निकालकर शुभ्र प्रकाश चेतना से आप्लावित अवश्य करेगी। उन्होंने यह मार्ग दिखलाया कि भौतिकता और आध्यात्मिकता दो विपरीत ध्रुव नहीं हैं, दोनों का संगम मनुष्य के जीवन में अति आवश्यक है –

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुर्विद्यया ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥

सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली, जिनका संन्यस्त नाम **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** है, ने इस ज्ञान को जन-जन की भाषा में विस्तृत रूप से प्रदान करने हेतु अपने जीवन में संकल्प लिया। इसकी पूर्ति के लिए पूज्यश्री ने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया, उन अज्ञात रहस्यों की खोज की, जिनके कारण मानव जीवन परिष्कृत और मधुर बन सकता है। उन्होंने संसार में रहकर सांसारिक जीवन को भी पूर्णता के साथ जिया, क्योंकि उनका यह सिद्धान्त था कि गृहस्थ जीवन की समस्याओं के पूर्ण ज्ञान हेतु गृहस्थ बनना आवश्यक है। अनुभव प्राप्त कर ही शुद्ध ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित सैकड़ों ग्रन्थों में मनुष्य के जीवन में त्रास को मिटाकर सन्तोष और तृप्ति प्रदान करने की भावना निहित है। इसी क्रम में उन्होंने मन्त्र-शास्त्र, तन्त्र-शास्त्र, सम्मोहन विज्ञान, ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद आदि को वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप से स्पष्ट किया।

अपने जीवन की 65 वर्षों की यात्रा में मानव जीवन के लिए उन्होंने ज्ञान का अमूल्य भंडार खोल दिया, क्योंकि उनका कहना था कि ज्ञान ही शाश्वत है। इसी क्रम में उन्होंने सन् 1981 में **'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान'** मासिक पत्रिका प्रारम्भ की, जिसके माध्यम से सारे रहस्यों को स्पष्ट किया। आज लाखों घरों में पहुंच रही इस ज्ञान प्रदीपिका ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर स्थापित कर दी है। यह पत्रिका ज्ञान का वह भंडार है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने के साथ-साथ जीवन को उर्ध्वमुखी गति प्रदान करने की दिशा में क्रियाशील बनाने का सार्थक प्रयास है।

अपना कार्य पूर्ण कर देने के पश्चात् 3 जुलाई, 1989 को सांसारिक काया का त्याग कर वे परमात्मा के साथ अवश्य समाहित हो गए, परन्तु आशीर्वादस्वरूप उनके द्वारा स्थापित **'अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार'** और **'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान'** मासिक पत्रिका पूर्ण रूप से गतिशील है। उनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान ही इसका आधार है और ज्ञान ही इस अजस्र गंगा में लाखों शिष्य सम्मिलित हैं। अपने पूज्य पिताश्री के मार्ग पर चलते हुए यह ज्ञान की गंगा निरन्तर प्रवाहित होती रहे, इसी दिशा में सदैव प्रयत्नशील हूं।

श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-342001 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 011-27182248

नन्दकिशोर श्रीमाली
सम्पादक
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

दिन का प्रारम्भ गुरु स्मरण से

प्रत्येक दिन हमारे लिए एक नए जीवन का आरम्भ होता है। शास्त्रों में लिखा है कि जीवन का प्रारम्भ और अन्त गुरु-स्मरण से होना चाहिए। इसी प्रकार हमारे दिन का प्रारम्भ और अवसान गुरु-स्मरण से ही उचित है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा, साधना, उपासना व्यर्थ है, जब तक कि जीवन में गुरु न हो। महाभारत के शान्ति पर्व में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा आदि के समय अपने दाहिने हाथ की ओर गुरु का आसन बिछा देना चाहिए और यह भावना मन में लानी चाहिए कि मेरे पास गुरु बैठे हैं और उनके निर्देशन में ही मैं पूजा, अनुष्ठान, व्रत, उपवास या कोई भी कार्य सम्पन्न कर रहा हूं।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि जब तक गुरु का आसन बिछाकर गुरु-स्तवन न किया जाय, तब तक किसी भी पूजा या साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती।

साधक चाहे पुरुष हो या स्त्री, प्रत्येक के जीवन में गुरु का महत्त्व और स्थान आवश्यक है। उसे चाहिए कि वह प्रातः उठते समय गुरु-स्तवन करे और उसके बाद ही दैनिक कार्य में प्रवृत्त हो।

वसिष्ठ ने कहा है कि स्नानादि से निवृत्त होकर साधक या गृहस्थ आसन पर बैठ जाए, अपने दाहिनी ओर गुरु का आसन बिछा ले, उस पर बैठे गुरु की कल्पना करे या उसका चित्र अथवा मूर्ति हो तो उसे अपने सामने रखे और निम्न गुरु-पाठ करे। उसके बाद ही अन्य किसी प्रकार की पूजा, व्रत-साधना या अनुष्ठान आदि सम्पन्न करे –

ओऽम् नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यां
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥ 1॥

ऐंकारह्रींकाररहस्ययुक्त –
श्रींकारगूढ़ार्थमहाविभूत्या
ओंकार गूढ़ार्थमहाविभूत्या
नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 2 ॥
होत्राग्निहोत्राग्नि हविष्यहोतृ –
होमादिसर्वाकृतिभासमानम् ।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्यां ॥ 3 ॥
कामादिसर्पव्रजगारुड़ाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपादकाभ्याम् ॥ 4 ॥
अनंतसंसारसमुद्रतार–
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां ।
जाड्यब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमोनमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 5 ॥
ओऽम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

मयूरेश स्तोत्र : चिन्ता एवं रोग निवारण हेतु दुर्लभ स्तोत्र

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गण नायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन-सदन॥
(मानस 1,1 सो.)

शास्त्रों में कहा गया है कि भगवान गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले, कार्यों में सिद्धि देने वाले तथा जीवन में पूर्णता देने वाले हैं, इसीलिए, 'कलौ चंडी विनायकौ' कहा गया है, अर्थात कलियुग में दुर्गा एवं गणेश ही पूर्ण सफलता देने में सहायक हैं।

विश्व के समस्त साधक इस बात पर एकमत हैं कि प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम गणपति का ध्यान या उनकी पूजा करना आवश्यक है। देवताओं ने भी सर्वप्रथम् गणपति की पूजा को स्वीकार किया है। यही नहीं, अपितु भगवान शिव ने भी कार्य की सफलता के लिए सबसे पहले गणपति की साधना को आवश्यक बताया है।

यों तो गणपति से सम्बन्धित सैकड़ों, हज़ारों स्तोत्र हैं, परन्तु उनमें 'मयूर स्तोत्र' का महत्त्व सर्वोपरि है। यह स्तोत्र अपने-आप में चैतन्य और मन्त्रसिद्ध है, अतः इसका पाठ ही पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

घर में आने वाली बाधाओं, बच्चों के रोग निवारण, घर में सुख-शान्ति, उन्नति तथा प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए 'मयूरेश स्तोत्र' को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इन्द्र ने स्वयं इस स्तोत्र के द्वारा गणपति को प्रसन्न कर विघ्नों पर विजय प्राप्त की थी।

इस स्तोत्र का पाठ पुरुष और स्त्री समान रूप से कर सकते हैं। हमारे जीवन में प्रत्येक दिन का प्रारम्भ मयूरेश स्तोत्र से होना चाहिए।

पूजा विधि

सर्वप्रथम साधक को स्नान कर आसन पर बैठ जाना चाहिए। आसन ऊनी अथवा सूती वस्त्र का हो सकता है। साधक को पूर्व की तरफ़ मुंह करके बैठना चाहिए, अपने सामने गणपति की मूर्ति या चित्र स्थापित कर लेना चाहिए। इस प्रकार की पूजा या साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

सबसे पहले साधक या साधिका को भक्तिपूर्वक गणपति को प्रणाम करना चाहिए और निम्न ध्यान करना चाहिए –

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥
सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं
दन्तं पाशांकुशेष्टान्युरुकरविलसद्बीजपूराभिरामम्।
बालेन्दुद्यौतमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रं गण्डं
भोगीन्द्रं बद्धमूषं भजत गणपतिं रक्तवस्त्रांगरागम्॥

तत्पश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करना चाहिए, जिससे कि हम जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें। यात्रा पर रवाना होते समय या प्रत्येक कार्य करने से पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण करना सिद्धिदायक माना गया है।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्ष्यो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

इसके बाद गणपति की षोडशोपचार पूजा होनी चाहिए, जिसमें निम्नलिखित उपचार माने गए हैं –

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमनीय, 6. स्नान, 7. वस्त्र, 8. यज्ञोपवीत, 9. गन्ध, 10. पुष्प (दूर्वा), 11. धूप, 12. दीप, 13. नैवेद्य, 14. ताम्बूल, 15. प्रदक्षिणा, 16. पुष्पांजलि।

सावधानियां

1. गणपति की पूजा में तुलसी पत्र का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध है।
2. गणपति को दूर्वादल अत्यन्त प्रिय है।
3. अर्घ्य में जल के अतिरिक्त निम्न आठ वस्तुएं होती हैं –
   1. दही, 2. दूर्वा, 3. कुशाग्र, 4. पुष्प, 5. अक्षत, 6. कुंकुम, 7. पीली सरसों और 8. सुपारी।
   इन आठ वस्तुओं को एक पात्र में लेकर गणेश जी को अर्घ्य दिया जाता है।
4. जो पदार्थ न हो उसके स्थान पर अक्षत का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. सभी देवताओं को पुष्प प्रिय हैं, परन्तु निम्न प्रकार के पुष्प निषिद्ध हैं –
   (क) जो कीड़ों से दूषित हों।
   (ख) जो बासी हों।
   (ग) जो पेड़ या पौधे से नीचे गिरे हुए हों।
   (घ) अधखिले पुष्प सर्वथा वर्जित हैं।
   (च) देवता पर चढ़ा हुआ, बाएं हाथ में रखा हुआ, पहनी हुई धोती के पल्ले में लाया हुआ अथवा जल से धोया हुआ पुष्प भी त्याज्य होता है।
   (छ) पुष्प देवता पर चढ़ाते समय अधोमुख नहीं होना चाहिए।
   (ज) फूल तोड़ने का काम स्नान से पूर्व करना चाहिए तथा तुलसी दल का चयन स्नान के बाद उचित है।
   (झ) फूल को वस्त्र या हाथ से न लाकर पात्र विशेष में लाना चाहिए।
   (ट) शुष्क और अपवित्र पुष्प पूजा में सर्वथा त्याज्य है।
   (ठ) कुशा या दूर्वा से देवता पर जल छिड़कना पाप माना जाता है। ऐसा जल वज्रपात तुल्य माना जाता है।

गणपति की पूर्ण पूजा कर साधक को चाहिए कि वह 'मयूरेश स्तोत्र' का पाठ करे। यह स्तोत्र समस्त प्रकार की चिन्ताओं तथा परेशानियों को दूर करने वाला, समस्त प्रकार के भौतिक सुख, आर्थिक, व्यापारिक उन्नति, व्यापार में लाभ, राज्यकार्य में विजय तथा समस्त उपद्रवों का नाश करने में पूर्णतः समर्थ है।

स्त्री या बालक भी स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं। किसी भी वर्ण या जाति का व्यक्ति इस पाठ को श्रद्धापूर्वक कर सकता है। स्त्रियों को चाहिए कि वे रजस्वला होने के दिन से सात दिन तक गणपति पूजन न करें।

गणपति की पूजा में सुगन्धित द्रव्य तथा घी का दीपक विशेष महत्त्वपूर्ण है। साधक को चाहिए कि वह नित्य अपने पूजा कार्य में इस स्तोत्र को सम्मिलित कर ले तथा सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं मयूरेश स्तोत्र का पाठ करे। गायत्री स्मरण भी इसके बाद किया जाना चाहिए।

यह स्तोत्र अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण, त्वरित सफलतादायक, विघ्नों, बाधाओं और कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ तथा रोग निवारण, सफलता और जीवन में समस्त प्रकार की भौतिक सुविधाओं को प्रदान करने में समर्थ एवं सर्वश्रेष्ठ है।

चिन्ता एवं रोग-निवारण के लिए

मयूरेश स्तोत्रम् ब्रह्मोवाच

पुराण पुरुषं देवं नाना क्रीड़ाकरं मुदाम्।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
परात्परं चिदानन्दंनिर्विकारं हृदि स्थितम्।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया।
सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
नानादैत्यानिहन्तारं नानारूपाणि विभ्रतम्।
नानायुधधरं भक्त्वा मयूरेशं नमाभ्यहम्॥
इन्द्रादिदेवतावृन्दरेभिष्टुमहर्निशम् ।
सद्सद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरे विभुम्।
सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्।
भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्।
समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्॥
सर्वज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्॥
अनेककोटिब्रह्मांड नायकं जगदीश्वरम्।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्॥

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्॥
कारागृह गतानां च मोचनं दिनसप्तकात्।
आधिव्याधिहरं चैव मुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्॥

अद्भुत चमत्कारी बजरंग बाण

महावीर हनुमान शारीरिक शक्ति के प्रतीक हैं। वे अतुलनीय पराक्रमी, बलवान और साहसी हैं तथा कलियुग में उनकी साधना पूर्णतः फलदायक है। हनुमान जी दुष्ट शक्तियों और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाले हैं, उनकी शारीरिक शक्ति के सामने विपरीत परिस्थितियां और बाधाएं उसी प्रकार दब जाती हैं, जिस प्रकार पर्वत के नीचे छोटा-सा तिनका।

हनुमान, बजरंग, महावीर के साथ उन्हें 'वायुपुत्र' भी कहा जाता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन ने अपनी ध्वजा पर उनके चिह्न को अंकित कर वायु अर्थात प्राणों पर विजय प्राप्त की थी। इसीलिए उनको 'वायुपुत्र' कहा जाता है। प्राणों पर अर्थात चंचल चित्त पर विजय प्राप्त करने के लिए और मन पर पूर्णतः नियन्त्रण करने के लिए भी हनुमान की साधना सर्वोपरि मानी गई है। जिस व्यक्ति का पूजा या साधना में ध्यान नहीं लगता हो उसके लिए हनुमान-उपासना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कही गई है। इसकी कृपा से मन और प्राण स्थिर होते हैं तथा साधना शक्ति के साथ-साथ साधक की मनःशक्ति भी बढ़ जाती है।

शारीरिक व्याधि, घर में भूत-प्रेत आदि की बाधाएं, मानसिक परेशानियां आदि के निवारण में यह स्तोत्र रामबाण की तरह है, जिसके घर में इसका नित्य पाठ होता है उसके घर में साक्षात महावीर विराजमान रहते हैं और किसी प्रकार की कोई बाधा उसके घर में व्याप्त नहीं होती।

पूजा कैसे करें

साधक को चाहिए कि वह अपने सामने हनुमान जी का चित्र या उनकी मूर्ति रख ले और पूरी भावना तथा आत्मविश्वास से उनका मानसिक ध्यान करे। यह विचार करे कि हनुमान जी की दिव्य और बलवान शक्तियां मेरे मन में प्रवेश कर रही हैं, मेरे चारों ओर के अणु उत्तेजित हो रहे हैं और यह सशक्त वातावरण मुझे और मेरी मनःशक्ति

को बढ़ाने में सहायक हो रहा है। धीरे-धीरे इस प्रकार का अभ्यास करने से साधक के मन में शक्ति का स्रोत खुलने लगता है और एकाग्रता पर नियन्त्रण होने लगता है। जब ऐसा अनुभव हो, तब बजरंग बाण की सिद्धि समझनी चाहिए। इसके बाद हनुमान जी की मूर्ति या तस्वीर की चन्दन, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए और श्रद्धायुक्त प्रणाम कर नीचे लिखी स्तुति करनी चाहिए –

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं। दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्॥
सकलगुण निधानं वानराणामधीशं। रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि॥
(श्री रामचरितमानस 51, श्लोक 3)

अर्थात जो अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत सुमेरु के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन (को ध्वंस करने) के लिए अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी और श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त हैं, उन पवनसुत श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

इस प्रकार की स्तुति कर साधक को चाहिए कि वह अपने पास दाहिने हाथ की तरफ़ एक आसन बिछा दे, जैसा कि शास्त्रों में उल्लिखित है कि जब भी बजरंग बाण का पाठ किया जाता है, श्री हनुमान जी स्वयं आसन पर आकर बैठते हैं। हनुमान जी की पूजा में इत्र, सुगन्धित द्रव्य एवं गुलाब के पुष्पों का प्रयोग निषिद्ध है। साथ ही साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर बैठे। साधक को लाल वस्त्र का लंगोट पहनना ज़्यादा अनुकूल माना गया है। शास्त्रों के अनुसार स्त्रियों को बजरंग बाण का पाठ नहीं करना चाहिए, परन्तु वे हनुमान जी की मूर्ति या तस्वीर के सामने दीपक या अगरबत्ती जला सकती हैं। तेल का दीपक जलाना चाहिए और उन्हें गुड़ का भोग लगाना चाहिए।

साधक को चाहिए कि वह बजरंग बाण कंठस्थ कर ले। यों नित्य पाठ करने से स्तोत्र स्वतः ही कंठस्थ हो जाता है, प्रातः काल के अलावा शाम को या रात्रि को सोने से पूर्व भी इस स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है, परन्तु जब भी इसका पाठ करे पृथ्वी पर ऊनी वस्त्र का आसन बिछाकर मन में हनुमान जी का ध्यान कर पाठ करे।

यदि साधक यात्रा पर हो, तब भी वह रेल में यात्रा के समय इसका पाठ कर सकता है। धीरे-धीरे साधक अनुभव करेगा कि वह पहले की अपेक्षा ज़्यादा सशक्त है, विरोधियों पर हावी हो रहा है, उसका मन ज़्यादा एकाग्र हो रहा है और उसके पूरे शरीर में एक नई चेतना, एक नया जोश और एक नई शक्ति का प्रादुर्भाव हो रहा है।

किसी महत्त्वपूर्ण कार्य पर जाने से पूर्व भी यदि इसका पाठ किया जाए, तो उसे निश्चय ही सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

सूर्य का सर्व नेत्ररोगहर 'चाक्षुषोपनिषद्'

'चाक्षुषोपनिषद्' अत्यन्त गोपनीय और रहस्यपूर्ण मन्त्र है, जो स्वयं में ही, मन्त्रसिद्ध है, इसके लिए किसी भी प्रकार से अन्य साधना-विधि या क्रिया-पद्धति अपनाने की आवश्यकता नहीं है।

इस पुस्तक के माध्यम से यह पहली बार पूर्ण विधि-विधान के साथ स्पष्ट किया जा रहा है। यह गोपनीय होने के साथ अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और शीघ्र फलदायक है। आंखों के सभी प्रकार के रोग मात्र इस मन्त्र के पाठ से ही ठीक हो जाते हैं। हज़ारों लोगों का यह अनुभूत मन्त्र रहा है।

इसका वर्णन कृष्णयजुर्वेद में भी मिलता है। मेरे अपने जीवन में यह अनुभूत प्रयोग रहा है और मैंने जितने लोगों से यह मन्त्र पाठ करने के लिए कहा है उन सभी ने आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त की है।

विधान

रविवार को शुभ नक्षत्र और शुभ मुहूर्त में यह विधान प्रारम्भ करना चाहिए, हो सके तो अपने सामने सूर्य का चित्र रखना चाहिए। स्नान कर, शुद्ध सफ़ेद धोती पहनकर सूर्य को प्रणाम कर निवेदन करना चाहिए कि वह आंखों के समस्त रोग दूर करे। यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो वह अनुष्ठान प्रारम्भ करने के लिए अत्यन्त शुभ माना गया है। हस्त नक्षत्र युक्त रविवार से भी यह पाठ प्रारम्भ किया जा सकता है।

लाल कनेर तथा लाल चन्दन मिलाकर उसमें जल डालकर सूर्य को अर्घ्य देकर यह पाठ प्रारम्भ करना चाहिए। नित्य पाठ करना चाहिए तथा इस प्रकार नियमित रूप से बारह रविवार तक इसका प्रयोग करना चाहिए। ऐसा प्रयोग सम्पन्न होने पर असाध्य रोग भी दूर होते देखे गए हैं। रविवार को एक समय बिना नमक का भोजन करना साधना में पूर्ण सफलतादायक माना गया है।

नियमित दवा, धर्मानुष्ठान, पुण्य कर्म आदि से भी जब रोग शान्त नहीं होता, तो उस रोग को पूर्वजन्म कृत पाप से उत्पन्न समझना चाहिए। यह मन्त्र इस प्रकार के पूर्वजन्म के रोग को भी दूर करने में सहायक होता है।

'परशुराम कल्पसूत्र' में 'चाक्षुषोपनिषद्' के बारे में बताया गया है कि इसकी साधना से दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। 'वीरसिंहावलोक' ग्रन्थ में बताया गया है कि यह सोलह मन्त्रों से सम्बन्धित समष्टिरूपिणी विद्या है, मूलाधार से ध्यान केन्द्रित करके इसका जप करना चाहिए। 'चरक संहिता' में बताया गया है कि जो मनुष्य इस विद्या को सिद्ध कर लेता है, उसे भूमि में गड़ा हुआ धन भी साफ़-साफ़ दिखाई देने लग जाता है। 'अष्टांगहृदय ग्रन्थ' में बताया गया है कि ऐसा व्यक्ति दिव्यदृष्टि से सम्पन्न होता है और उसे जीवन में कभी भी नेत्रों से सम्बन्धित रोग नहीं होता।

विनियोग

अस्याश्चक्षुष्मतीविद्याया ब्रह्मा ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः। श्रीसूर्यनारायणो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। स्वाहा कीलकम्। चक्षुरोगान्निवृत्तये जपे विनियोगः।

ध्यान

सामने सूर्यनारायण का चित्र रखकर निम्नलिखित ध्यान करना चाहिए –

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पै कन्दुकं विभ्रती करैः।
रौप्यसिंहासनारूढ़ां देवीं चक्षुष्मती भजे॥

ओऽम् सूर्याक्षितेजसे नमः खेचराय नमः, असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

वयः सुपर्णो उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाघमानः। अपध्वान्तसूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्। पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः॥ इति षोडशम्-समष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिः सिद्धिप्रदा।

लेखक को एक साधक हिमालय में मिला था, जिसे सूर्यत्राटक सिद्धि था। उसने सूर्योदय से सूर्यास्त तक बिना पलक झपकाए सूर्य को एकटक देखकर इस त्राटक को सिद्ध किया था। उसके अनुसार चाक्षुषोपनिषद की विधि इस प्रकार से भी है –

प्रयोग विधि

शुक्ल पक्ष के रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। नेत्ररोगी साधक को चाहिए कि वह नित्य ग्यारह पाठ करे, परन्तु रविवार के दिन 108 पाठ अवश्य करे। इससे पूर्व नेत्ररोगी साधक को चाहिए कि वह सूर्य की पूजा करने के बाद कांसे की थाली में शुद्ध जल भरकर ऐसे स्थान पर रखे, जहां उस जल में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ता हो। साधक को उस जल पर नज़र रखते हुए पाठ करना चाहिए। बैठते समय साधक का मुंह पूर्व की तरफ़ हो तथा मात्र सफ़ेद धोती पहने हुए हो। पाठ पूर्ण होने पर किया हुआ जप सूर्य नारायण को अर्पित करके नमस्कार करना चाहिए, फिर कांसे की थाली में रखे हुए शुद्ध जल से अपने अधखुले नेत्रों पर छिड़काव करना चाहिए। जल छिड़कने के बाद पांच मिनट तक दोनों आंखें बन्द रखे, इसके बाद वह अपना दैनिक कार्य कर सकता है।

पाठ समाप्त करने के बाद नित्य ॐ वचौदा असिवचो मे देहि स्वाहा' मन्त्र से गौ-घृत की दस आहुतियां अग्नि में देनी चाहिए। रविवार को बीस आहुतियां देनी आवश्यक है तथा दिन में एक बार बिना नमक का भोजन करना चाहिए। यदि आहुति न दे सके, तो कोई आपत्ति नहीं, परन्तु पाठ के बाद नित्य यज्ञाहुति दी जा सके तो उत्तम माना गया है।

चक्षुष्मती विद्या का पाठ

ॐ चक्षुष्चक्षु तेजः स्थिरो भव। मां पाहिपाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमया मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय, यथाहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यादि यानि पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ओऽम् नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्य-भास्कराय। ओऽम् नमः करुणाकराय मृताय। ओऽम् नमो भगवते श्री सूर्याक्षितेजसे नमः। ओऽम् खेचराय नमः। ओऽम् महासेनाय नमः। ओऽम् तमसे नमः। ओऽम् रजसे नमः। ओऽम् सत्याय (सत्त्वाय) नमः। ओऽम् असतो मा सद्गमय। ओऽम् तमसो मा ज्योतिर्गमय। ओऽम् मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान्छुचिरूपः हंसो भगवानछुचिरूपः प्रतिरूपः।

ओऽम् विश्वरूपे घृणिन जातवेदसे हिरण्मयै ज्योतिरूपं तपन्तम्।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येक्ष सूर्यः॥
ओऽम् नमो भगवते श्री सूर्यायादित्यायाक्षितेजसे – होवा हिनि स्वाहा॥
ओऽम् वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्र प्रियमेधा ऋषयो नाघमानाः॥

अप ध्वान्तमूपुर्णहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्स्मान्निधयेव बद्धान् ॥
ओऽम् पुण्डरीकाक्षाय नमः। ओऽम् पुष्करेक्षणाय नमः।
ओऽम् कमलेक्षणाय नमः। ओऽम् विश्वरूपाय नमः।
ओऽम् श्री महा विष्णवे नमः। ओऽम् सूर्यनारायणाय नमः।
ओऽम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थ

हे चक्षु के अभिमानी सूर्यदेव, आप चक्षु के तेज रूप में स्थिर हो जाएं। मेरी रक्षा करें, रक्षा करें, मेरी आंख के रोगों का शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें। जिससे अन्धा न होऊं, कृपया वैसा ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले, मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दें, जल से उखाड़ दें। ओऽम् (सच्चिदानन्दस्वरूप) नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले दिव्यस्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार। ओऽम् करुणाकर अमृतस्वरूप को नमस्कार। ओऽम् भगवान सूर्य को नमस्कार। ओऽम् नेत्रों के प्रकाश भगवान सूर्यदेव को नमस्कार। ओऽम् आकाश विहारी को नमस्कार। परमश्रेष्ठ स्वरूप को नमस्कार। ओऽम् (सबमें क्रिया शक्ति उत्पन्न करने वाले) रजोगुणरूप भगवान सूर्य को नमस्कार। (अन्धकार को सर्वथा अपने भीतर लीन करने वाले) तमोगुण के आश्रयभूत भगवान सूर्य को नमस्कार। हे भगवन्, आप मुझको असत् से सत् की ओर ले चलिए, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलिए, मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए। उष्णस्वरूप भगवान सूर्य शुचिरूप है। हंसस्वरूप भगवान सूर्य शुचि तथा अप्रतिरूप है। उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं है। जो ब्राह्मण इस चक्षुष्मती विद्या का नित्य पाठ करता है, उसे नेत्र-सम्बन्धी कोई रोग नहीं होता। उसके कुल में कोई अन्धा नहीं होता। आठ ब्राह्मणों को इस विद्या का दान करने पर, इसको ग्रहण करा देने पर, इस विद्या की सिद्धि होती है।

फरवरी, 1977 के स्वास्थ्य पत्रिका में भी इस सम्बन्ध में एक विवरण प्रकाशित हुआ था, जिसमें गुजरात के प्रसिद्ध डॉक्टर श्री नरहरि भाई के अनुभव का विवरण था। उन्होंने लिखा था कि एक बार उन्हें भयंकर नेत्र रोग हुआ। इसमें आंख का पर्दा फट जाता है और आंखों की रोशनी चली जाती है। सर्जनों के प्रयत्नों से भी जब कुछ नहीं हो सकता, तो वे पूरी तरह से निराश हो गए। उन्हीं दिनों अचानक उनके घर महात्मा पूज्य अवधूत बाबा आए जो कि इससे पूर्व भी कई बार उनके घर आ चुके थे। अवधूत बाबा ईश्वर के दर्शन प्राप्त अवतारी पुरुष माने जाते हैं। डॉक्टर साहब

की प्रार्थना पर उन्होंने 'चक्षुष्मतीविद्या' प्रदान की और उपर्युक्त प्रयोग बताया।

इस अनुष्ठान के विधिपूर्वक करने से डॉक्टर साहब को पूर्ण रूप से नेत्र ज्योति प्राप्त हुई। बिना ऑपरेशन के यह सफलता संसार का आश्चर्य है। डॉक्टर साहब जीवित हैं, और अब भी उनकी नेत्र-ज्योति पूर्ण रूप से सही है। उनका कहना है कि इस 'चक्षुष्मतीविद्या' के प्रभाव से मेरी नेत्र-ज्योति बनी हुई है, अन्यथा मैं कब का अन्धा हो गया होता। उन्होंने इस विद्या की प्रतियां छपवाकर निःशुल्क वितरित की हैं, जिससे हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया है।

स्त्रियां भी इस प्रयोग को कर सकती हैं, परन्तु ऋतुकाल में इसका प्रयोग निषिद्ध है। सदि साधक स्वयं सक्षम नहीं हो तो किसी ब्राह्मण से भी यह पाठ एवं अनुष्ठान सम्पन्न कराकर लाभ ले सकता है। पर ऐसी स्थिति में ब्राह्मण पाठ समाप्त करने के बाद संकल्प करे कि मैंने जो पाठ किया है उसका फल अमुक यजमान को प्राप्त हो। बारह रविवार तक अनुष्ठान सम्पन्न होने के बाद बारह ब्राह्मण या बारह छोटे-छोटे बालकों को खीर खिलानी चाहिए और उन्हें सफ़ेद वस्त्र दान देने चाहिए। जिन्हें संस्कृत उच्चारण में असुविधा होती हो, उन्हें हिन्दी अनुवाद का पाठ करना चाहिए, इससे भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा विधान भी है।

रामचरितमानस : मन्त्र-सिद्धि

रामचरितमानस की कुछ विशिष्ट चौपाइयों और दोहों को वेद मन्त्र के समान पवित्र और मन्त्र रूप माना गया है, जिनका उच्चारण, मनन, चिन्तन सम्पुट आदि से साधकों को आशातीत लाभ होता है।

जब भी कोई पंक्ति ईश्वर के अंश से प्राणवान हो जाती है, तो उसमें एक विशिष्ट चैतन्य और दिव्यता आ जाती है।

मानस की प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक छन्द साधक के लिए मन्त्र स्वरूप हैं, अतः साधक को जिस कामना पूर्ति में रुचि हो, उसे मन्त्र रूप में उसी चौपाई, दोहे या सोरठे का सम्पुट के समान प्रयोग करना चाहिए, इससे उसे निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है। यह बात केवल अनुमान पर आधारित नहीं है, अपितु वर्तमान समय में भी मानस के कई भक्त और साधक हैं, जिनको इस प्रकार का सम्पुट देकर पाठ करने से विशेष लाभ हुआ है तथा कामना पूर्ति में सफलता प्राप्त हुई है।

रामचरितमानस पाठ

रामचरितमानस भक्ति प्रधान ग्रन्थ होने के साथ-साथ साधना प्रधान ग्रन्थ भी है। इसमें लोककल्याणकारी मन्त्र हैं और इन मन्त्रों का सकाम और निष्काम दोनों प्रकार से अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है।

सर्वप्रथम साधक को प्रातःकाल उठकर लगभग नौ बजे स्नान आदि से निवृत होकर आसन पर बैठ जाना चाहिए। सामने आसन बिछाकर श्रीराम की मूर्ति या चित्र स्थापित करना चाहिए, जिसमें लक्ष्मण, सीता और हनुमान भी साथ हों।

इसके सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर पूर्ण विधि-विधान के साथ श्रीराम की पूजा करनी चाहिए और अपने सामने रामचरितमानस ग्रन्थ रखकर उसकी भी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि ग्रन्थ के पास ही हनुमान जी के

लिए लाल वस्त्र का आसन बिछा हो, ऐसा कहा जाता है कि जहां पर भी रामचरितमानस का पाठ होता है, वहां श्री हनुमान निश्चित रूप से उपस्थित रहते हैं।

इसके बाद रामचरितमानस का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए और दूसरे दिन उसी समय, अर्थात 24 घंटों में, पूरे रामचरितमानस का पाठ सम्पन्न हो जाना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पाठ का क्रम टूटे नहीं और 24 घंटे अनवरत रूप से पाठ होता रहे। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रधान ग्रन्थ के सामने जो आसन बिछा हुआ है, उस पर कोई-न-कोई अवश्य बैठा रहे और पाठ करे, यह पाठ सस्वर होना चाहिए। दूसरे दिन लगभग नौ बजे जब पाठ समाप्त हो तो श्रीराम और हनुमान की भक्ति भाव के साथ आरती करनी चाहिए।

निष्काम पाठ में मात्र पाठ होता है, परन्तु सकाम पाठ में प्रत्येक विश्रान्ति के बाद सम्पुट दिया जाता है, जो एक बार बोला जाता है।

कुछ ग्रन्थों में मानस पाठ की समाप्ति के बाद हवन करने का भी विधान है। सम्पूर्ण पाठ होने के बाद 108 आहुतियां सम्पुट मन्त्र की दी जाती हैं। इस यज्ञ से अष्टांग हवन किया जाता है, जिसके लिए निम्न बारह पदार्थ प्रयुक्त किए जाते हैं –

1. तिल, 2. जौ, 3. चावल, 4. चीनी, 5. श्वेत चन्दन चूर्ण, 6. अगर, 7. तगर, 8. कपूर, 9. केसर, 10. नागरमोथा, 11. पंच-मेवा – गोला, किसमिस, छुआरा, अखरोट, बादाम आदि, 12. घृत।

प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम वजन की होनी चाहिए। यदि साधक चाहे तो इससे कम वजन की आहुति अग्नि में छोड़ सकता है। सम्पुट मन्त्र पूरा होने के बाद अन्त में 'स्वाहा' या 'श्री रामाय स्वाहा' शब्द बोलकर आहुति अग्नि में छोड़नी चाहिए। अन्त में पूर्णाहुति शुद्ध घृत की देनी चाहिए। इस प्रकार रामचरितमानस का अखंड पाठ निश्चय ही सिद्धि और सफलता देने में सहायक है।

मैं नीचे विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए कुछ मानस-मन्त्र दे रहा हूं, जिससे कि सामान्य साधक लाभ उठा सकें –

चक्षुष्मती विद्या का पाठ

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं।
यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पत्ति बिनहि बोलाए।
धरमसील पहं जाहि सुभाए॥

दरिद्रता मिटाने के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के॥
जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं।
सुख सम्पति नाना विधि पावहिं॥

जीविका प्राप्ति के लिए

विस्व भरण पोषण कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

विघ्ननाश के लिए

सकल विघ्न व्यापहि नहि तेही।
राम सुकृपा बिलोकहि जेही॥

सर्व विपत्ति नाश के लिए

राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगत विपत्ति भंजन सुखदायक॥

संकट नाश के लिए

दीन दयाल विरुद सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

भूत-प्रेत बाधा निवारण के लिए

प्रनवऊं पवनकुमार, खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार, बसहि राम सर चाप धर॥

अपयश नाश के लिए

रामकृपा अवरैब सुधारी।
विबुध धारि भई गुनद गोहारी॥

शत्रुता नाश के लिए

बयरु न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई॥

मुक़दमे में विजय प्राप्ति के लिए

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विग्यान निधाना॥

आकर्षण के लिए

जा पर जा कर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु सन्देहू॥

विद्या प्राप्ति के लिए

गुरु गृह गए पढ़न रघुराई।
अलप काल विद्या सब पाई॥

यात्रा की सफलता के लिए

प्रविसि नगर कीजै सब काजा।
हृदय •राखि कोसलपुर राजा॥

विवाह के लिए

तब जन पाइ वसिष्ठ आयसु
ब्याह साज संवारि कै।
मांडवी श्रुतकीर्ति उरमिला
कुंअरि लई हंकारि कै॥

लड़ाई-झगड़े में अभय प्राप्ति के लिए

कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किए सुरवृन्द।
भालु कोल सब हरषे जय सुखधाम मुकुन्द॥

प्रभु कृपा प्राप्ति के लिए

सत्यसंघ छांड़े सर लच्छा।
काल सर्प जनु चले सपच्छा॥

ऐश्वर्य एवं राजपद प्राप्ति के लिए

लगे सवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान।
होइ सगुन मंगल सुखद, करहि अपसरा गान॥

भक्ति प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपा सिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि देहु, प्रभु दया करि राम॥

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी।
कवि उर अजिर नचावहि बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भांती।
जासु कृपा नहि कृपा अघाती॥

मनोरथ प्राप्ति के लिए

मोर मनोरथ जानहुं नीके।
बसहुं सदा उर पुर सबहीं के॥

इच्छित वर प्राप्ति के लिए

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषि न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे॥

सर्वमनोरथ सिद्धि के लिए

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिपुरारि॥

श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिए

गावहि छवि अवलोकि सहेली।
सिय जयमाल राम उर मेली॥

आनन्दोत्सव के लिए

प्रमुदित पुर नर-नारि सब सजहि सुमंगलचार।
एक प्रविसहि एक निर्गमहि भीर भूप दरबार॥

माया-मोह की निवृत्ति के लिए

तजि माया सेइअ परलोका।
मिटहि सकल भवसम्भव सोका॥

पुत्र प्राप्ति के लिए

प्रेम मगन कौसल्या, निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता, बाल चरित कर गान॥

सर्वसुख प्राप्ति के लिए

सुनहि विमुक्त बिरत अरु विषई।
लहहि भगति गति सम्पति सई॥

संशय, शोक, भय नाश के लिए

संशय, शोक निबिड़ तम भानुहि।
दनुज गहन घन दहन कृसानुहि॥
जनकसुता समेत रघुवरहि।
कस न भजहु भंजन भव भीरहि॥

ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिए

साधक नाम जपहि लय लाएं।
होहि सिद्ध अनिमादिक पाएं॥

सर्वरोग निवृत्ति के लिए

रघुपति भगति सजीवन मूरी।
अनूपान श्रद्धा मति पूरी॥

सर्वपीड़ा नाश के लिए

जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल।
सो कृपालु मोहि तो पर, सदा रहउ अनुकूल॥

दुःखहरण के लिए

करई आरती आरतिहर के।
रघुकुल कमलबिपिन दिनकर के॥

हनुमान जी की प्रसन्नता के लिए

सुमिरि पवन सुत पावन नामू।
अपने बस करि राखो रामू॥

समस्त प्रकार के दुःख आदि को शान्त करने के लिए

मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी॥
दीनदयालु विरुद सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

दारिद्रय निवारणार्थ लक्ष्मी प्रयोग

साधकों और पाठकों के लिए लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूं। इन मन्त्रों का प्रयोग कोई भी गृहस्थ, साधक या स्त्री कर सकती है। ये मन्त्र गोपनीय होने के साथ-साथ पूर्ण प्रभावशाली एवं तुरन्त फलदायी हैं। इन मन्त्रों को सिद्ध करने में यदि कहीं त्रुटि भी रह जाती है, तो कोई हानि नहीं होती, अतः किसी भी साधक को बिना संकोच इन मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

लक्ष्मी बीज मन्त्र

यह एक अक्षर का लक्ष्मी बीज मन्त्र है, अतः साधक चाहे तो इस बीज मन्त्र का मानसिक जप लगातार कर सकता है। चलते, बैठते, उठते, सोते समय भी इस मन्त्र का जप मन-ही-मन नियमित रूप से होता रहना चाहिए। इससे निश्चय ही उसे आर्थिक उन्नति तथा सफलता प्राप्त होती है। इसके लिए किसी भी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं और न मन्त्र को सिद्ध करने की ज़रूरत है। सामान्यतः पांच लाख जप होने पर सफलता दिखाई देने लगती है, पर मन्त्र की गणना करने की ज़रूरत है।

मन्त्र

श्रीं

चतुराक्षरी लक्ष्मी मन्त्र

यह मन्त्र पूर्ण सफलतादायक है तथा साधक को या गृहस्थ को प्रातः नित्य एक माला इस मन्त्र की जपनी चाहिए। सवा लाख मन्त्र जपने पर यह सिद्ध होकर सफलता देने लग जाता है। साधक को स्नान कर, सामने लक्ष्मी का चित्र रखकर, नित्य एक माला या पांच मालाएं नियमित रूप से फेरनी चाहिए। सवा लाख मन्त्र जप होने के बाद भी साधक चाहे तो आगे मन्त्र जप कर सकता है। इसके लिए अन्य किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। इसमें किसी भी माला का प्रयोग हो सकता है, परन्तु यदि कमलगट्टे की माला का प्रयोग किया जाए, तो विशेष सफलता प्राप्त होती है। यह माला मन्त्र-चैतन्य, मन्त्र-सिद्धि और प्राण-प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए।

मन्त्र

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं

दशाक्षर लक्ष्मी मन्त्र

यह पांच लाख मन्त्र जपने पर सिद्ध होता है। नित्य तीन मालाएं नियमित रूप से फेरनी चाहिए तथा इसके लिए कमलगट्टे की माला का प्रयोग किया जाना चाहिए। जब पांच लाख मन्त्रों का जप पूर्ण हो जाए तब एक कुमारी कन्या को खीर का भोजन कराकर वस्त्र दान देना चाहिए। इससे यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ओऽम् नमः कमलवासिन्यै स्वाहा

व्यापार लक्ष्मी मन्त्र

यह मन्त्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है और दस लाख मन्त्र जप होने पर इसे सिद्ध माना जाता है। इस मन्त्र का श्रीयन्त्र के सामने जप किया जाए, तो विशेष सफलता मिलती है। श्रीयन्त्र के सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर नित्य एक बार या तीन बार माला फेरनी चाहिए। कमलगट्टे की माला आवश्यक है। जब दस लाख मन्त्र जप हो जाएं, तब उस धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त श्रीयन्त्र को दुकान में या व्यापार-स्थल पर स्थापित कर देना चाहिए। इस कलियुग में भी व्यापारी बन्धु इस यन्त्र एवं मन्त्र का चमत्कार अनुभव कर सकते हैं।

मन्त्र

ओऽम्श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद।
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओऽम् महालक्ष्म्यै नमः॥

दारिद्र्य विनाशक लक्ष्मी मन्त्र

जिसके भाग्य में दरिद्रता लिखी हो, जिसके जीवन में किसी भी प्रकार की आर्थिक उन्नति उपाय करने पर भी नहीं होती हो, उसके लिए यह मन्त्र रामबाण की तरह है, नित्य प्रातः एक, तीन या पांच मालाएं, निम्नलिखित मन्त्र की फेरनी चाहिए। माला कमलगट्टे की होनी आवश्यक है। माला फेरते समय सामने लक्ष्मी का चित्र हो तथा शुद्ध घृत का दीपक जलता रहे। बारह लाख मन्त्र का जप होने पर यह लक्ष्मी सिद्ध हो जाती है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं
दारिद्र्य विनाशके
जगत्प्रसूत्यै नमः।

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र

जीवन में सभी प्रकार की उन्नति तथा भौतिक सुख प्राप्त करने के लिए यह मन्त्र सिद्ध

करना चाहिए। इस मन्त्र को पुरुष या स्त्री कोई भी सिद्ध कर सकता है। इसके लिए कोई विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। मन्त्र का बारह लाख बार जप होने पर लक्ष्मी सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

साधक को चाहिए कि वह सामने सिद्ध लक्ष्मी का चित्र रखे और अगरबत्ती व दीपक जलाकर, कमलगट्टे की माला से जितनी बार भी हो सके, निम्नलिखित मन्त्र का जप करे। जब 12 लाख बार मन्त्र का जाप हो जाए, तो पांच कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर उन्हें वस्त्र व द्रव्य दे। इस प्रकार सिद्ध लक्ष्मी सिद्ध होने पर धन, धान्य, ज़मीन, भवन, कीर्ति, आयु, यश, प्रसिद्धि, वाहन, पुत्र, स्त्री, स्वास्थ्य तथा समस्त प्रकार के भौतिक सुख स्वतः ही प्राप्त होने लगते हैं।

मन्त्र

ओऽम्श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः

वास्तव में मैंने ऊपर जो कुछ लक्ष्मी से सम्बन्धित मन्त्र व प्रयोग बताए हैं, वे अनुभूत हैं, मैंने स्वयं इन्हें सिद्ध करके देखा है, और ये पूर्ण रूप से सहायक तथा फलदायक रहे हैं। यही नहीं, अपितु जिन साधकों ने इन मन्त्रों को सिद्ध किया है, वे आज भौतिक दृष्टि से अत्यन्त उन्नति पर हैं।

कुछ प्रामाणिक सिद्ध साबर मन्त्र

जीवन में मन्त्रों का सर्वोपरि प्रभाव है, इसमें भी साबर मन्त्र अत्यन्त गोपनीय और रहस्यपूर्ण होते हैं। साबर मन्त्रों की यह विशेषता होती है कि वे सरल भाषा में होने के साथ-साथ निश्चित प्रभावपूर्ण और फलदायक होते हैं। इन मन्त्रों को सिद्ध करने में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी नहीं आती। कोई भी गृहस्थ, साधु या संन्यासी इन मन्त्रों को सिद्ध करके समाज की भलाई कर सकता है।

इस पुस्तक के द्वारा ये साबर मन्त्र पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं और ये सभी मन्त्र अनुभूत हैं, साथ-ही-साथ लेखक ने इन मन्त्रों को सिद्ध करके देखा है कि ये प्रभावपूर्ण हैं, इन मन्त्रों को पुरुष या स्त्री कोई भी सिद्ध कर सकता है।

भूत, प्रेत, रोग आदि दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को घोर-घोर इन घोर काजी की किताब घोर, मुल्लो की बांग घोर, रैगर की कुंड घोर, धोबी की कुंड घोर, पीपल का पात घोर, देव की दिवाल घोर, आपकी

घोर बिखेरता चल, परकी घोर बैठाता चल, वज्र का किवाड़ तोड़ता चल, सारका किवाड़ तोड़ता चल, कुनकुनसो बन्द करता चल, भूत को, पलीत को, देव को, दानव को, दुष्ट को, मुष्ट को, चोट को, फेट को, मेले को, घरेले को, उलके को, बुलके को, हिडके को, भिडके को, आपरी को, पराई को, भूतनी को, पलीतनी को, डंकिनी को, स्यारी को, भूचरी को, खेचरी को, कलुए को, मलबे को, उनको मथबाय के ताप को, तिजोरी को, माथा की मतबाय को, मगरा की पीड़ा को, पेट की पीड़ा को, सांस को, कांस को, मुसाण को, कुणकुणसा मुसाण, कचिया मुसाण, भूकिया मुसाण, कीटिया मुसाण, चीडी चापेटा का मुसाण, नुला मुसाण, इन्हों को बन्द करि, एडी की एडी बन्ध करि, पीड़ी की पीड़ी बन्ध करि, जांघ की जाड़ी बन्ध करि, कटया कड़ी बन्ध करि, पेट की पीड़ा बन्ध करि, छाती की शूल बन्ध करि, सरिकी सीस बन्ध करि, चोटी की चोटी बन्ध करि, नोनाडी बहत्तर कोठा रोम-रोम में घर, पिंड में दख़ल कर, देश बंगाल का मनसारा मसेबड़ा, आकर मेरा कारण सिद्ध करे, तो गुरु उस्ताद से लाजे शब्द साचा पिंड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधान

यह मन्त्र इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि सरल है। अभी तक गोपनीय रहा है और लेखक ने इसे सिद्ध करके देखा है कि यह पूर्ण रूप से प्रभावशाली है, साथ ही सभी प्रकार के ज्वर, ग्रह-दोष, भूत-प्रेत-पिशाच आदि के उपद्रव आदि को समाप्त करने, घर की बाधा दूर करने आदि में पूर्ण रूप से सहायक है।

सिद्ध करने का तरीक़ा

साधक रविवार को कपड़े पहनकर जंगल में या घर के एकान्त में दक्षिण की तरफ़ मुंह करके बैठ जाए। सामने लोबान या धूप जला ले तथा अपने शरीर पर इत्र लगा ले। साधक किसी भी प्रकार के कपड़े पहन सकता है। तेल का दीपक बराबर जलाए रखे। तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है। 11 रविवार यह मन्त्र करने पर सिद्ध होता है, तथा प्रत्येक रविवार को 101 माला इस मन्त्र की फेरनी चाहिए। जब 11 रविवार पूरे हो जाएं, तो उस दिन जंगल में जाकर कुछ भांग या सुलफा छोड़ देना चाहिए।

मन्त्र सिद्ध होने पर सात बार इस मन्त्र को पढ़े, तो सभी प्रकार की बाधाएं, भूत-प्रेत आदि को दूर कर सकता है। सिद्ध करने पर साधक को चाहिए कि वह सामने उपद्रवग्रस्त व्यक्ति को बैठाकर हाथ में लोहे की कील लेकर इस मन्त्र को सात बार पढ़े, तो निश्चय ही भूत-प्रेत चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और यदि किसी भी प्रकार का बुख़ार हो, तो वह उसी समय उतर जाता है।

नज़र झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु को, ॐ नमो नज़र जहां पर पीर न जानी, बोले छलसों अमृतवानी, कहो नज़र कहां ते आई, यहां की ठोर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरो कहा ठाम, किसी की बेटी कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी कहां को जाया, अबही बसकर ले तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के शिर पड़े जाहार पीर नज़र से रक्षा करे, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधान

यह सही तथ्य है कि बालक को, सुन्दर स्त्री को या किसी को भी नज़र लग सकती है। नज़र लगने पर वह बीमार हो जाता है, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता और दिनोदिन वह शारीरिक रूप से कमज़ोर होता जाता है तथा कुछ समय बाद उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

सिद्ध करने का तरीक़ा

यह मन्त्र जप मंगलवार से प्रारम्भ कर शनिवार को समाप्त करना चाहिए तथा प्रतिदिन इसकी 151 मालाएं फेरनी चाहिए, साधक को दक्षिण की तरफ़ मुंह कर तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। शनिवार की शाम को जब मालाएं पूरी हो जाएं, तो एक किलो गेहूं उबालकर जंगल में जाकर फेंक देने चाहिए तथा फेंकने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। इस प्रकार से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर मोर-पंख से मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर नज़र झाड़ दें, तो निश्चय ही उसकी नज़र उतर जाती है और वह स्वस्थ हो जाता है।

ख़ूनी बवासीर दूर करने का मन्त्र

ॐ उमती उमती चल स्वाहा।।

विधान

एक लाख बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध होने पर जब कोई बवासीर का मरीज़ सामने आवे, तब इस मन्त्र को 21 बार पढ़कर लाल सूत में गांठ दें। इस प्रकार तीन गांठें देकर बवासीर के रोगी के दाहिने पैर के अंगूठे में वह लाल सूत बांध

दें, तो खूनी बवासीर समाप्त हो जाती है। इस प्रकार का विधान सात दिन तक नियमित रूप से करना चाहिए।

सुख-प्रसव मन्त्र

यदि किसी गर्भिणी स्त्री को कष्ट हो और प्रसव नहीं हो रहा हो, तो निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर दूध को अभिमन्त्रित कर स्त्री को पिलावें, तो तुरन्त सुख-प्रसव हो जाता है। यह मन्त्र 21 हज़ार बार जपने से सिद्ध होता है और सिद्ध होने पर मात्र तीन बार मन्त्र पढ़कर दूध को अभिमन्त्रित कर गर्भिणी को पिला देने से कार्य सफल हो जाता है।

मन्त्र

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनी चल-चल भ्रमय पुष्पं
विकासय-विकासय स्वाहा ॥

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, कालो बिच्छू कांकर वालो, उत्तर बिच्छू न कर टालो, उतरे तो उतारूं, चढ़े तो मारूं गुरूडमोरपंख हकालू, शब्द साचा, पिंड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधान

एक लाख जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाए, तो जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा है, उसे सामने बैठाकर, उस स्थान पर दोनों हाथों से तेज़ी से हाथ फेरते हुए मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़ने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

सर्प के काटने का मन्त्र

शिवरात्रि से आरम्भ करके दूसरे दिन शाम तक लगातार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें गणना नहीं होती। मात्र शिवरात्रि के प्रारम्भ से दूसरे दिन सूर्यास्त तक जितनी बार भी मन्त्र जपा जाए वही ठीक है, पर आसन से उठना नहीं चाहिए।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाए, तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर जहां सांप ने काटा

हो, उस स्थान पर बुहारी से झाड़ दें, तो निश्चय ही सर्प-विष उतर जाता है और व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।

मन्त्र

ॐ नमो सर्पा रे, तू थूलमथूला मुख तेरा बना कमल का फूला, रे सर्प्पा बांधू तेरी दादी भुवा, जिनने तोको गोद खिलाया, सर्पा रे सर्पा बांधू तेरा रतन कटोरा, जा मैं तोकू दूध पिलाया,
सर्पा बीज, कीलनी बीज पान, मेरा कीला करे जो घाव, तेरी डाढ भस्म हो जाए, गुरु गोरख भी जाय जलाय, ओऽम् नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

बिक्री बढ़ाने का मन्त्र

भंवरवीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे जो डंडी, बिके जो माल भंवरवीर सोखे नहिं जाय।

सिद्ध करने का तरीक़ा

रविवार के दिन एक किलो काली उड़द अपने सामने रखकर सूर्योदय से सूर्यास्त तक इस मन्त्र का नियमित रूप से जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब यह मन्त्र सिद्ध हो जाए, तब कुछ काले उड़द लेकर 21 बार मन्त्र पढ़कर दुकान में बिखेर देवें। इस प्रकार तीन रविवार तक करने पर दुकान की बिक्री दुगुनी-तिगुनी हो जाती है, यह निश्चित है।

जैसा कि मैंने बताया है, साबर मन्त्र सरल भाषा में होते हैं और आज के अनास्था तथा वैज्ञानिक युग में विश्वास नहीं होता कि ये मन्त्र इतने शक्तिशाली हैं और इनसे कार्य सिद्ध किए जा सकते हैं।

परन्तु साधकों ने इन मन्त्रों को सिद्ध किया है और पूरी तरह से लाभ उठाया है। आप भी चाहें तो इस सत्य को परख सकते हैं।

विजय गणपति साधना : जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि

जीवन में किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व गणपति की पूजा आवश्यक मानी गई है। गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने वाले देवता माने गए हैं। यद्यपि गणपति के कई रूप प्रचलित हैं और अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों का ध्यान और पूजा का प्रचलन है। परन्तु सभी साधकों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है कि गृहस्थ जीवन के लिए विजय गणपति साधना सर्वश्रेष्ठ है। और यही एक मात्र साधना है, जो गृहस्थ जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में समर्थ है।

दक्षिण में विजय गणपति का भव्य मन्दिर है। महाराष्ट्र में प्रत्येक गृहस्थ अपने घर में विजय गणपति की स्थापना शुभ मानते हैं। बाली, जावा, सुमात्रा द्वीपों में भी विजय गणपति के मन्दिर हैं। विजय गणपति के बारे में साधकों की ऊंची राय है। मैं कुछ साधकों के विचार नीचे दे रहा हूं।

जिसके घर में विजय गणपति की मूर्ति या विग्रह नहीं है, वह घर श्मशान के तुल्य है।

— सीताराम स्वामी

धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, उन्नति, स्वास्थ्य, सुख, वाहन, सन्तान, पत्नी-सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, पति-सुख, आर्थिक उन्नति आदि सभी कुछ विजय गणपति में समाहित है, फिर वह गृहस्थ दुर्भाग्यशाली ही कहा जाएगा जिसके घर में ऐसा विग्रह स्थापित नहीं होगा।

— त्रिजटा अघोरी

'कलौ चंडी विनायकौ' के अनुसार कलियुग में देवी और गणपति ही शीघ्र फलदायक हैं। गणपति में भी विजय गणपति तुरन्त और पूर्ण फलदायी देवता है। जिसके घर में विजय गणपति की स्थापना नहीं होती या पूजा नहीं होती, उसके घर में उन्नति कैसे सम्भव है! वह व्यक्ति ठीक वैसा ही है जैसे कि गंगा के किनारे कोई प्यासा हो।

— मां योगत्रयी

वस्तुतः साधकों ने इस बात का अनुभव किया है कि विजय गणपति जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलतादायक है। गृहस्थ को चाहिए कि वे अपने पूजा स्थान में अन्य देवताओं के साथ-साथ गणपति विग्रह की भी स्थापना करें।

विजय गणपति

साधक को श्रेष्ठ शुभ समय में गणपति की मूर्ति बनानी चाहिए या किसी योग्य कारीगर से इस प्रकार की मूर्ति का निर्माण कराना चाहिए। जब गणपति विग्रह तैयार हो जाए, तो उसे पुष्य नक्षत्र में अभिषेक द्वारा साधना कक्ष में स्थापित करना चाहिए। इसके बाद षोडशोपचार पूजा करके विशेष मन्त्रों से संजीवन करना चाहिए और साथ-ही-साथ प्राण-प्रतिष्ठा पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करनी चाहिए।

धातु की गणपति मूर्ति ही श्रेष्ठ मानी गई है, क्योंकि वह कई पीढ़ियों तक सुरक्षित रहती है और इस प्रकार का विग्रह घर के पूजा स्थान में स्थापित होने से पूरा पूजा-कक्ष ही चैतन्य हो जाता है। जब गणपति विग्रह में प्राण-प्रतिष्ठा हो जाए तब गणेश गायत्री मन्त्र से उस पर अभिषेक करना चाहिए। इस अभिषेक में दूर्वा, जल और दूध का प्रयोग होता है तथा निरन्तर ग्यारह सौ गणेश गायत्री मन्त्र से अभिषेक होता है। गणेश गायत्री मन्त्र निम्नलिखित है –

एकादन्ताय विद्महे वक्रतुंडायै धीमहि।
तन्नो दन्तो प्रचोदयात्॥

जब अभिषेक सम्पन्न हो जाए, तो उस पर सर्वसिद्धि गणपति मन्त्र का जाप एक लाख बार करना चाहिए। यह मन्त्र निम्नलिखित है –

ओऽम् श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे।
सर्व सिद्धि प्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः॥

यह बत्तीस अक्षर का मन्त्र सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का फलदायक मन्त्र माना गया है। इस मन्त्र के एक लाख जप से गणपति विग्रह पूर्ण सिद्धिदायक हो जाता है।

इसके बाद इक्कीस हज़ार मन्त्रों से गणपति को चैतन्य किया जाता है। यह मन्त्र गणपति चैतन्य मन्त्र कहलाता है –

ॐ गं गां गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा

इस प्रकार जब वह विग्रह चैतन्य हो जाए तब अनन्त कालातीत साधना से उस

विग्रह को चैतन्य किया जाता है। इससे वह विग्रह या मूर्ति अनन्त समय तक फलदायक बनी रहती है।

ऊपर मैंने विजय गणपति साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट किए हैं। मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं की हैं और हज़ारों गृहस्थ लोगों को मन्त्र-ज्ञान और साधनाएं सिखाई हैं, जिससे कि वे जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति और पूर्णता प्राप्त कर सके हैं। परन्तु मेरा यह अनुभव है कि विजय गणपति साधना अत्यन्त ही श्रेष्ठ, आवश्यक और तुरन्त फलदायक है। प्रत्येक गृहस्थ के घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होना परम सौभाग्य का संकेत माना जाता है।

कुंडलिनी जागरण : जीवन का श्रेष्ठ वरदान

मनुष्य शरीर ईश्वर का श्रेष्ठ वरदान है और जो अपने शरीर को भली भांति समझ लेता है वह पूरे संसार को समझ लेता है। संसार में जितनी शक्तियां हैं, वे सारी शक्तियां व्यष्टि रूप से मनुष्य में जीवनी शक्ति है, शास्त्रों में प्राण शक्ति को ही जीवनी शक्ति कहते हैं। और इन प्राण शक्तियों की केन्द्रीभूत शक्ति को कुंडलिनी शक्ति कहा गया है। मनुष्य के शरीर की समस्त शक्ति, गति और क्रिया-शक्ति का आधार यही कुंडलिनी शक्ति है। यह शक्ति एक स्थान पर कुंडली बनाकर सांप के समान एकत्र होकर रहती है। इसीलिए इसे कुंडलिनी शक्ति कहा गया है। मनुष्य आत्म-कल्याण के लिए इस कुंडलिनी शक्ति को सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा ऊर्ध्व गति करके क्रम से षट्चक्र भेदन करके सहस्रार में ले जाने के लिए प्रयत्नशील होता है। जब वह इस प्रकार करने में समर्थ-सफल हो जाता है, तब उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है और इस दिव्य ज्ञान शक्ति के बल से वह अपने स्वरूप को देखकर कृतकृत्य हो जाता है। जन्म-मृत्यु के बन्धन से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।

कुंडलिनी शक्ति का स्थान

मनुष्य शरीर के मेरुदंड के दोनों पार्श्व में इड़ा और पिंगला नामक दो नाड़ियां हैं। इन दोनों नाड़ियों के मध्य में एक अति सूक्ष्म और नाड़ी है, जिसे सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं। इस नाड़ी के नीचे के भाग में चार दलों का त्रिकोणाकार एक कमल है, इस कमल पर कुंडलिनी शक्ति सर्पाकार में कुंडली बनाकर स्थित है –

पश्चिमाभिमुखी यो निगुदमेढान्तरालगा।
तत्रकन्दं सम ख्यात तत्रास्ति कुंडली सदा॥
सर्वेष्टा सकला नाड़ी सार्द्धत्रिकुटिलाकृतिः।
मुखे निवेश्य सा पुच्छ सुषुम्णा विवरे स्थिता॥

गुदा और लिंग के बीच में निम्नाभिमुख एक योनि मंडल है, जिसको कन्द स्थान कहा जाता है। इस कन्द स्थान में कुंडलिनी शक्ति समस्त नाड़ियों को वेष्टित करती हुई साढ़े तीन अंटे देकर, अपनी पूंछ मुख में लिये, सुषुम्ना नाड़ी के छिद्र को अवरोध करती हुई, सर्प के सदृश अवस्थान करती है।

यह कुंडलिनी शक्ति परमात्मा की शक्ति होती है, यह भयरहित तथा सोने के समान चमकने वाली है। हठ योग प्रदीपिका में कहा गया है कि –

कन्दोर्ध्व कुंडली शक्तिः सुप्ता मोक्षाय योगिनाम्।
बन्धनाय च मूढानां यस्तां वेत्ति स योगवित्॥

अर्थात कन्द के ऊपरी भाग में कुंडलिनी शक्ति शयन कर रही है, जो साधक या योगी इसको जगा देता है वह निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करता है। जो कुंडलिनी शक्ति को जगाने की युक्ति जानता है, वही वास्तव में योगी है।

कुंडलिनी शक्ति जगाने का अभ्यास स्वयं ही नहीं करना चाहिए क्योंकि बिना गुरु के इस अभ्यास में कई प्रकार की समस्याएं आ जाती हैं। एक बार मेरा एक शिष्य मुझसे साधारण जानकारी लेकर अपने घर जाकर कुंडलिनी शक्ति जाग्रत करने का अभ्यास करने लगा, परन्तु उसका अभ्यास ग़लत दिशा की ओर मुड़ गया और उसके मुंह से ख़ून गिरने लगा। तब वह बहुत ज़्यादा घबराकर मेरे पास आया और बड़ी कठिनाई से, योग साधना के अभ्यास से, पुनः उसके मुंह से ख़ून बहना बन्द किया गया। तब पता चला कि अभ्यास में मूलाधार के बाद कुंडलिनी ग़लत दिशा की ओर मुड़ गई थी, फलस्वरूप मुंह से रक्त-प्रवाह आरम्भ हो गया था। गुरु यह भली भांति देखता रहता है कि शिष्य की कुंडलिनी सही दिशा की ओर गतिशील है या नहीं, अतः कभी भूलकर भी बिना गुरु के इस प्रकार का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

अब मैं कुंडलिनी शक्ति के जागरण के लिए सामान्य अभ्यास की बात बता रहा हूं जिसे प्रत्येक साधक को अपनाना चाहिए।

1. सबसे पहले साधक को नेती, धोती, वस्ति आदि क्रियाओं के द्वारा देह की शुद्धि कर लेनी चाहिए।

2. इसके बाद आठ प्रकार के प्राणायाम करने चाहिए। परन्तु जो साधक इन आठ प्रकार के प्राणायाम के अलावा अन्य प्राणायाम का भी अभ्यास करता है, वह उचित ही है।

3. इसके बाद गुरु से महामुद्रा, महावेध, महाबन्ध, विपरीतकरणी, तारण, परिधान,

युक्तिचालन, शक्तिचालनी आदि आवश्यक मुद्राएं सीखनी चाहिए। इस बात का ध्यान रखें कि ये सभी प्राणायाम तथा मुद्राएं बन्ध त्रय के साथ ही करनी चाहिए।

4. इसके बाद राज योगविधि के अनुसार षट्चक्रों में भावनाएं देनी चाहिए।

प्रतिदिन का कार्यक्रम

1. साधक को नित्य पांच बजे उठना चाहिए।
2. दोनों प्रकार का भस्त्रिका प्राणायाम पांच से पच्चीस बार करना चाहिए।
3. फिर दोनों प्रकार की शक्तिचालनी मुद्रा पांच से दस तक।
4. फिर ताड़नमुद्रा चार प्राणायाम से एक सौ एक प्राणायाम तक।
5. परिधान युक्ति चालन पर प्राणायाम से एक सौ एक प्राणायाम तक।
6. फिर षट्चक्रभेदन की मानसिक क्रियाएं करनी चाहिए।

प्रातः काल इतना कार्य प्रत्येक साधक को करना चाहिए। यदि प्रातः काल समय न हो तो शाम को निम्न कार्यक्रम का अभ्यास करना चाहिए।

1. महामुद्रा – प्रत्येक पैर पर 5 से 25 तक।
2. महाबन्ध – प्रत्येक पैर पर 5 से 25 तक।
3. महावेध – उभय प्रकार का 5 से 10 तक।
4. विपरीतकरणी मुद्रा 5 से 10 तक।
5. इसके बाद जो बचे उसमें षट्चक्रभेदन की क्रियाएं और इनका अभ्यास करना चाहिए।

इस प्रकार यदि साधक नियमित अभ्यास करता है, तो वह जल्दी सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है। प्रारम्भ में साधक को ज़रूरत से ज़्यादा पसीना आ सकता है, परन्तु बाद में पसीना आना बन्द हो जाएगा और पूरे शरीर में बिजली जैसी चमक मालूम होगी। इसके बाद प्राण शक्ति के चलने का अनुभव होगा जैसे कि चींटी चल रही हो। इसके बाद मूलाधार चक्र का भेदन या कुंडलिनी शक्ति के ऊपर उठने का अनुभव होगा। ऐसी स्थिति आने पर साधक को नियमित रूप से गुरु के पास रहकर अनुभव करना चाहिए, क्योंकि मूलाधार से आगे जब कुंडलिनी शक्ति बढ़ने लगती है, तो कई बार वह मार्ग बदल देती है। फलस्वरूप रक्त-प्रवाह से सम्बन्धित और कई अन्य रोग होने की सम्भावना हो जाती है। परन्तु सद्गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलने

से किसी भी प्रकार की बाधा या रोग की सम्भावना नहीं रहती।

आगे चलकर साधना के बीच में कभी-कभी प्राण-वायु सुषुम्ना में चढ़ जाने पर कमर, सीना तथा कंठ में बन्धन जैसा अनुभव होने लगता है। परन्तु इससे साधक को घबराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद यह बन्धन स्वतः ही खुल जाता है।

षट्चक्र

मेरुदंड के भीतर ब्रह्मनाड़ी में पिरोए हुए छः कमलों की कल्पना की गई है। इन्हीं को षट्चक्र कहते हैं। प्रत्येक कमल के भिन्न दल हैं और प्रत्येक का रंग भी अलग-अलग है।

1. मूलाधार चक्र

इस चक्र की स्थिति रीढ़ की हड्डी के सबसे नीचे के भाग में 'कन्द' प्रदेश से लगे गुदा और लिंग के मध्य भाग में है। इस चक्र का जो कमल है, वह लाल रंग का है और उसमें चार दल हैं। इसे पृथ्वी तत्त्व का द्योतक माना गया है। यहीं पर साढ़े तीन अंटे लेकर सर्पाकार कुंडलिनी अपनी पूंछ को मुंह में दबाए हुए सुप्तावस्था में रहती है।

2. स्वाधिष्ठान चक्र

इस चक्र की स्थिति लिंग स्थान के सामने है। इसका कमल सिन्दूर वर्ण वाला तथा छः दलों का है। यह जल तत्त्व का द्योतक माना जाता है और अर्द्धचन्द्राकार है।

3. मणिपूरक चक्र

यह चक्र नाभि प्रदेश के सामने मेरुदंड के भीतर स्थित है, इसका कमल नील वर्ण वाला तथा दस दलों का है। इस चक्र का यन्त्र त्रिकोण है तथा इसे अग्नि तत्त्व का द्योतक माना गया है।

4. अनाहत चक्र

हृदय प्रदेश के सामने वाला यह चक्र लाल वर्ण के समान द्वादश दलों से युक्त है। इसे वायु तत्त्व का सूचक माना जाता है। जब कुंडलिनी शक्ति इस चक्र को पार करती

है, तो पूरे शरीर में एक विशेष चमक आ जाती है और सारी रीढ़ की हड्डी झनझनाने लगती है।

5. विशुद्ध चक्र

इस चक्र की स्थिति कंठ प्रदेश में है। इसका रंग धुएं के समान होता है तथा यह सोलह दलों का है। इसे आकाश तत्त्व का द्योतक माना जाता है।

6. आज्ञा चक्र

यह चक्र भ्रूमध्य के सामने मेरुदंड के भीतर ब्रह्म नाड़ी में स्थित है। इसका कमल दो दलों वाला श्वेत रंग का होता है।

इन छः चक्रों के बाद मेरुदंड के ऊपरी सिरे पर सहस्र दल वाला चक्र है, जिस पर शिव विराजमान हैं। जब इन परम शिव से कुंडलिनी शक्ति का संयोग होता है, तब साधक को अखंड आनन्द की प्राप्ति और पूर्ण ध्यान प्राप्त होता है।

कुंडलिनी जागरण का अभ्यास योग्य गुरु के निर्देशन में ही सम्पन्न करना चाहिए, केवल पुस्तकों के आधार पर ऐसा अभ्यास करने पर कई बार जीवन की बाज़ी लग जाती है, और कच्चे साधक पागल के समान हो जाते हैं। सहस्रार चक्र को 'दशम द्वार' या ब्रह्मरन्ध्र भी कहते हैं। मेरी जानकारी के अनुसार इसका स्थान कनपटियों से दो-दो इंच अन्दर और भृकुटि से लगभग तीन इंच अन्दर बड़े मस्तिष्क के भीतरी भाग के लगभग मध्य में तथा कंठ में स्थित 'काक' से दो अंगुल ऊपर तथा मस्तिष्क के 'महा-विवर' नामक महाछिद्र के ऊपर छोटे से पोल में एक ज्योति पुंज के रूप में अवस्थित है।

सहस्रार में स्थित लाभ प्राप्त करने पर साधक या योगी सभी अवस्थाओं में स्वच्छन्द, सुखासीन तथा शोक एवं बन्धन से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार के योगी को 'अणिमादि' अष्टसिद्धियां, नव निधियां तथा समस्त प्रकार की विभूतियां प्राप्त होने लगती हैं। ऐसा योगी निश्चित ही त्रिकालदर्शी बन जाता है, उसका मोक्ष निश्चित है और वह हमेशा-हमेशा के लिए जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

वास्तव में वही मनुष्य धन्य है, जिसे सद्गुरु प्राप्त हो जाता है। वही भाग्यशाली कहलाता है, जो कुंडलिनी जागरण प्रक्रिया में रत होता है, और वही वास्तव में ब्रह्म स्वरूप माना जाता है, जो कुंडलिनी जागरण कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

पंचांगुली : भविष्य दर्शन की श्रेष्ठतम साधना

साधना और उसमें सफलता प्राप्त करना अब कुछ साधुओं या योगियों की बपौती नहीं रही, अपितु कोई भी व्यक्ति सही जानकारी प्राप्त कर, साधना से घर बैठे सफलता प्राप्त कर सकता है।

पंचांगुली साधना ऐसी ही एक दिव्य, सरल और सुगम साधना है, जो प्रत्येक साधक सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकता है। आवश्यकता है मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली देवी के चित्र की।

वस्तुतः यह साधना भविष्य ज्ञान हेतु श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है – प्रस्तुत लेख में साधना बिन्दुओं को सफलता से स्पष्ट किया है –

पंचांगुली साधना भारतीय जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, क्योंकि इसके माध्यम से भविष्य दर्शन पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है। यद्यपि भविष्य को ज्ञात करने का साधन ज्योतिष है और ज्योतिष हस्तरेखा विज्ञान आदि के माध्यम से व्यक्ति के भविष्य को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है, परन्तु प्राचीन समय से भारतवर्ष में यह प्रचलित है कि 'बिना इष्ट के सब-कुछ भ्रष्ट है।' इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी ज्योतिषी तब तक पूर्ण रूप से भविष्यवक्ता तथा यशस्वी नहीं बन सकता, जब तक कि उसके पास कोई सिद्धि या साधना न हो।

यद्यपि भविष्य को जानने के लिए कुछ सिद्धियां प्रचलित हैं परन्तु वे सब कठिन और तुरन्त फलदायक नहीं हैं, उनकी अपेक्षा पंचांगुली साधना को कोई भी व्यक्ति सिद्ध कर सकता है।

जैसा कि कर्ण पिशाचिनी के बारे में बताया जा चुका है कि उस साधना से किसी भी व्यक्ति के भूतकाल को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है, ठीक इसी तरह पंचांगुली

साधना से किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को पहचाना भी जा सकता है।

मैं पूरे भारत में घूमा हूं और सैकड़ों-हज़ारों तान्त्रिकों और साधकों के सम्पर्क में आया हूं। मैंने यह अनुभव किया है कि वही व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता, यश और सम्मान प्राप्त कर सकता है, जिसने जीवन में पंचांगुली साधना सम्पन्न कर ली है।

महाराष्ट्र में गोकुल भाई का नाम भविष्यद्रष्टा के रूप में विख्यात है। मैं उनसे सामान्य रूप से ही मिला था और जब मैंने भविष्य को जानने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि कल दोपहर तीन बजे की गाड़ी से तुम्हें दिल्ली जाना पड़ेगा, परन्तु यह यात्रा तुम्हें मार्ग में ही अधूरी छोड़नी पड़ेगी।

वास्तव में ही दूसरे दिन बिना कार्यक्रम के भी मुझे यात्रा करनी पड़ी थी, और मार्ग में यात्रा अधूरी छोड़कर मुझे वापस लौट जाना पड़ा था।

राजस्थान में सीकर जिले में मीठालाल जी प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं और सही रूप से देखा जाए, तो उन्हें ज्योतिष का ज्ञान नहीं के बराबर है। परन्तु वे जो कुछ भविष्यवाणी करते हैं, वह अक्षरशः सत्य उतरती है और दूर-दूर से लोग उनसे भविष्यफल जानने के लिए आते हैं।

वे एक भविष्यवाणी के सौ रुपए लेते हैं और फिर भी वहां भीड़ बनी रही है। मुझे याद है, मैं किसी कार्यवश उनके गांव के पास से निकल रहा था। मेरे साथ सेठ गोवर्द्धनदास जी थे। उत्सुकतावश हम पंडित जी के पास पहुंचे, बातचीत से ज्ञात हुआ कि उन्हें ज्योतिष का ज्ञान मामूली-सा ही है। सेठ जी ने सौ रुपए देकर जानना चाहा कि शाम तक मेरे साथ क्या घटना घटित होगी, तो पंडित जी ने बताया कि शाम को लगभग छः बजे तुम्हें पीठ में बिच्छू काटेगा।

हम हंस दिए और जीप लेकर आगे बढ़ गए। शाम को अपने गन्तव्य पर पहुंचकर सेठ जी होटल में रुक गए और अपना कुर्ता उतारकर खूंटी पर टांग दिया। परन्तु किसी कार्यवश उन्हें छः बजे बाहर जाने के लिए तैयार होना पड़ा और कुर्ता पहनते ही उनकी पीठ पर बिच्छू ने डंक मारा। जब कुर्ता खूंटी पर टंगा हुआ था, तभी कोई बिच्छू उस कुर्ते में घुस गया होगा। कुल मिलाकर मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इतनी सूक्ष्म भविष्यवाणी करने वाले को सामान्य व्यक्ति ईश्वर का ही अंश मान लेते हैं और उनसे मिलने के लिए लम्बी कतारें लग जाती हैं।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में उन्हें पंचांगुली साधना सिद्ध थी। वास्तव में ही वर्तमान समय में यह साधना आश्चर्यजनक फलदायक तथा सिद्धिदायक है। इसे किसी भी

वर्ण का व्यक्ति सिद्ध कर सकता है, और अपने जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। मैंने देखा है कि नौकरी में वे व्यक्ति ज़्यादा लोकप्रिय हो जाते हैं तथा उन्नति कर लेते हैं। जो इस प्रकार की भविष्यवाणी करने में समर्थ होते हैं। वे अधिकारियों के भी अत्यन्त प्रियपात्र बने रहते हैं। व्यापारी इस प्रकार की साधना से सम्पन्न होकर यह ज्ञात कर लेता है कि आने वाला समय कैसा है, क्या बाज़ार भाव होंगे तथा जिनसे व्यापार-विनिमय हो रहा है, वह धोखा तो नहीं दे देगा। इस प्रकार यह साधना जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूल रहती है। पाठकों की जानकारी के लिए इस साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट किए जा रहे हैं –

पंचांगुली साधना

इस साधना में यन्त्र आवश्यक है। शुभ दिन शुद्ध समय साधना स्थान को स्वच्छ पानी से धो लें। कच्चा आंगन हो तो गोबर से लीप लें। तत्पश्चात लकड़ी के एक समचौरस पट्टे पर श्वेत वस्त्र धोकर बिछा दें और उस पर चावलों से यन्त्र का निर्माण करें। चावलों को अलग-अलग पांच रंगों में रंग दें। यन्त्र को सुघड़ता से सही रूप में बनावें। यन्त्र की बनावट में ज़रा सी ग़लती सारे परिश्रम को व्यर्थ कर देती है।

तत्पश्चात यन्त्र के मध्य में ताम्र-कलश स्थापित करें, और उस पर लाल वस्त्र बिछाकर ऊपर नारियल रखें और फिर उस पर पंचांगुली देवी की मूर्ति स्थापित करें, इसके बाद पूर्ण षोडशोपचार से नौ दिन तक पूजन करें और नित्य पंचांगुली मन्त्र का जप करें। यह सही है कि आधुनिक समय में प्रत्येक स्थान पर प्रामाणिक विद्वान प्राप्त नहीं होते, जो कि यन्त्र का स्वरूप और विधि समझ सके, परन्तु साधना में प्रामाणिक पंचांगुली यन्त्र तथा पंचांगुली देवी का चित्र आवश्यक है।

सर्वप्रथम मुख शोधन कर पंचांगुली मन्त्र चैतन्य करें। पंचांगुली की साधना में मन्त्र चैतन्य 'ई' है, अतः मन्त्र के प्रारम्भ और अन्त में 'ई' सम्पुट देने से मन्त्र चैतन्य हो जाता है। मन्त्र चैतन्य के बाद योनि-मुद्रा का अनुष्ठान किया जाए, यदि योनि-मुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो, तो भूतलिपि-विधान करना चाहिए। इसके बाद यन्त्र पूजा करके पंचांगुली ध्यान करें।

पंचांगुली ध्यान

पंचांगुली महादेवी श्रीसीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासो शक्तिः त्रिदशेशितुः॥

पंचांगुली देवी के सामने यह ध्यान करके पंचांगुली मन्त्र का जप करना चाहिए।

पंचांगुली मन्त्र

ओऽम् नमो पंचांगुली परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौंसठ काम विहडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये गुणिमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्मध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे की माता पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ओऽम् ठं ठं ठं स्वाहा।

वस्तुतः यह साधना लम्बी और श्रम साध्य है। प्रारम्भ में गणपति पूजन, संकल्प, न्यास, यन्त्र पूजा, प्रथम वरण पूजा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और नवमावरण के बाद भूतोपसंहार करके यन्त्र में प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

इसके बाद पंचांगुली देवी को संजीवनी बनाने के लिए ध्यान, अन्तर्मातृका न्यास, बहिर्मातृका न्यास करनी चाहिए। यद्यपि इस सारी विधि को लिखा जाए तो लगभग चालीस-पचास पृष्ठों में आएगी, यहां मेरा उद्देश्य पाठकों को मात्र इस साधना से परिचित कराना है।

देश के श्रेष्ठ साधकों का मत है कि यदि साधक ये सारे क्रियाकलाप न करके केवल घर में मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली यन्त्र तथा संजीवनी सम्पुट युक्त मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली देवी का चित्र स्थापित कर उसके सामने नित्य पंचांगुली मन्त्र का 21 बार जप करें तो कुछ समय बाद स्वतः ही पंचांगुली साधना सिद्ध हो जाती है।

यह सुविधाजनक है, और इसमें किसी प्रकार की त्रुटि सम्भव नहीं होती। पाठकों के आग्रह बराबर हमें प्राप्त होते रहे हैं, अतः इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान से सिद्ध कराकर मन्त्र-सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली यन्त्र या संजीवनी-सम्पुट युक्त मन्त्र-सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली देवी का चित्र केन्द्र से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

वस्तुतः यह साधना सरल है। सामान्य साधक को लम्बे-चौड़े जटिल विधि-विधान में न पड़कर अपने घर में पंचांगुली देवी के चित्र की स्थापना कर लेनी चाहिए और नित्य प्रातः स्नान कर पंचांगुली मन्त्र का 21 बार उच्चारण करना चाहिए। कुछ समय बाद मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यह साधना सम्पन्न होकर वह सफल भविष्यद्रष्टा बन जाता है। साधक में जितनी उज्ज्वलता और पवित्रता होती है उसी के अनुसार उसे फल मिलता है।

प्रचंड तूफ़ान से टक्कर लेने वाला बगलामुखी यन्त्र

बगलामुखी-साधना भारत की प्राचीनतम एवं दस महाविद्याओं में से एक रही है। कलियुग में तो इसका प्रभाव पग-पग पर देखा जा सकता है।

शत्रुओं पर हावी होने, बलवान शत्रुओं का मान-मर्दन करने, भूतप्रेतादि को दूर करने, हारते हुए मुक़दमों में सफलता पाने एवं समस्त प्रकार से उन्नति करने में बगलामुखी यन्त्र श्रेष्ठतम माना गया है। जिसके हाथ पर यह यन्त्र बंधा होता है उस पर किया गया तान्त्रिक प्रभाव निष्फल रहता है।

पहली बार प्रामाणिक विवेचना के साथ यह महत्त्वपूर्ण लेख –

भारतीय तन्त्र-मन्त्र साहित्य अपने-आप में अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं रहस्यमय रहा है। ज्यों-ज्यों हम इसके रहस्य के मूल में जाते हैं, त्यों-त्यों हमें विलक्षण अनुभव होते हैं। इस साहित्य में कुछ तन्त्र-मन्त्र तो इतने समर्थ, बलशाली एवं शीघ्र फलदायी हैं कि चकित रह जाना पड़ता है। ऐसे ही यन्त्रों में एक यन्त्र है – बगलामुखी यन्त्र जो प्रचंड तूफ़ान से भी टक्कर लेने में समर्थ है।

भारत के लगभग सभी तान्त्रिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि बगलामुखी यन्त्र के समान और कोई अन्य विधान नहीं है, जो कि इतने वेग से और तुरन्त प्रभाव दिखा सके। एक तरफ़ जहां यह यन्त्र शीघ्र ही सफलतादायक है, वहीं दूसरी ओर विशेष अनुष्ठान एवं मन्त्र जप के द्वारा जो बगलामुखी यन्त्र सिद्ध किया जाता है, वह तुरन्त कार्य सिद्धि में सहायता प्रदान करता है। दुर्लभ मन्त्रमहार्णव में इसके बारे में लिखा है –

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि खेद्य प्रत्यय कारणम्।
यस्य स्मरणमात्रेण पवनोऽपि स्थिरायते।।

अर्थात इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद मात्र इसके स्मरण से ही प्रचंड पवन भी स्थिर हो जाता है।

भारत के श्रेष्ठ और अद्वितीय तान्त्रिकों ने भी एक स्वर से इस मन्त्र की सराहना की है।

जिस व्यक्ति के घर में यह यन्त्र है या जिस व्यक्ति ने अपनी भुजा पर इस यन्त्र को बांध रखा है, उस पर कभी भी शत्रु हावी नहीं हो सकते, न वह ज़हर से मर सकता है, न उस पर आक्रमण में सफलता पाई जा सकती है, और न उसकी अकाल मृत्यु ही सम्भव है। **– त्रिजटा अघोरी**

आज के युग में जब पग-पग पर शत्रु हावी होने की चेष्टा करते हैं और हर प्रकार से चारों तरफ़ शत्रु नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं तब उन्नति चाहने वाले व्यक्ति के लिए यह साधना या यह यन्त्र धारण करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य समझा जाना चाहिए। **– किंकर बाबा**

सारे यन्त्रों में बगलामुखी यन्त्र सर्वश्रेष्ठ है अद्भुत प्रभावशाली है तथा किसी भी प्रकार के मुक़दमे में पूर्ण सफलता देने में सहायक है। **– स्वामी बोधत्रय जी**

वैसे तो भारत में सैकड़ों यन्त्र हैं, परन्तु यह यन्त्र अपने-आप में महायन्त्र है और शत्रुओं का मानमर्दन करने में पूरी तरह से सक्षम है। **– स्वामी अरूपानन्द जी**

जो अपने जीवन में बिना किसी बाधाओं के प्रगति चाहता है, प्रगति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना चाहता है, उसके लिए बगलामुखी साधना या बगलामुखी यन्त्र धारण करना आवश्यक है। **– मां भारती**

इसकी साधना से मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन एवं विद्वेषण प्रयोग भली भांति सफलतापूर्वक सम्पन्न किए जाते हैं। जहां तक मेरा अनुभव है, इस मन्त्र की साधना से बांझ स्त्री मनचाही सन्तान प्राप्त कर सकती है। दरिद्र व्यक्ति के लखपती बनने के लिए मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है और प्रतिकूल मुक़दमे में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है, इसके साथ-ही-साथ शत्रुओं का मानमर्दन कर उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

परन्तु भूल से भी सामान्य व्यक्ति को इस प्रकार की साधना में नहीं बैठ जाना चाहिए, क्योंकि यह तलवार की धार के समान है। अतः यदि थोड़ी सी भी ग़लती हो जाती है, तो साधना करने वाला व्यक्ति ही समाप्त हो जाता है। मेरे अनुभव से बिना पूरा ज्ञान प्राप्त किए जिन लोगों ने इस साधना को प्रारम्भ किया, वे साधना काल में ही पागल होते देखे गए, और बड़ी कठिनाई से उन्हें सामान्य अवस्था में लाया गया।

अतः सामान्य पंडित भी इस प्रकार की साधना सम्पन्न कराने में हिचकिचाता है। जो भी व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न करना चाहे उसे चाहिए कि वह योग्य गुरु के निर्देशन में ही इस कार्य को सम्पन्न करे। और यदि पंडितों से यन्त्र सिद्ध करवाकर धारण करना चाहे तो योग्य पंडितों का चयन करके ही यह साधना सम्पन्न करवाए।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य बातें

बगलामुखी साधना में साधक को पूर्ण पवित्रता के साथ जप करना चाहिए और उसे पूरी तरह से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

साधक को पीले वस्त्र धारण करने चाहिए। धोती तथा दुपट्टा — दोनों पीले रंग में रंगे हुए हों। साधक एक समय भोजन करे। और बेसन से बनी हुई वस्तु का प्रयोग अवश्य करे।

साधक को दिन में सोना नहीं चाहिए, न व्यर्थ की बातचीत करे और न किसी स्त्री से किसी प्रकार का सम्पर्क ही स्थापित करे। साधना काल में बगलामुखी यन्त्र बनाकर उसे स्थापित कर उसके सामने मन्त्र जप करे।

साधना काल में बाल न कटवाएं और न क्षौर कर्म ही करें।

यह साधना या मन्त्र जप रात को ही होता है। अतः यह रात के 10 बजे से प्रातः 4 बजे के बीच करें, परन्तु जो साधना सम्पन्न कर चुके हैं, वे साधक या ब्राह्मण दिन को भी मन्त्र जप कर सकते हैं।

साधना काल में पीली गौ का घी प्रयोग में लें तथा दीपक में रुई का प्रयोग करें। उस रुई को पहले पीले रंग में रंग कर सुखा लें और इसके बाद ही उस रुई की बत्ती बनाएं। साधना में छत्तीस अक्षर वाला मन्त्र प्रयोग करना ही उचित है और यही मन्त्र शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

साधना घर के एकान्त कमरे में, देवी मन्दिर में, पर्वत शिखर पर, शिवालय में या गुरु के समीप बैठकर की जानी चाहिए। इसके मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कई प्रयोग हैं, अतः गुरु से आज्ञा प्राप्त कर उनके बताए हुए रास्ते से ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

इसे तन्त्रों में 'सिद्ध विद्या' कहा है, और इसके प्रयोग-प्रभाव तुरन्त दृष्टिगोचर होते हैं, अतः सावधानी के साथ इस प्रयोग को करना चाहिए। मोक्ष प्राप्ति के लिए क्रोध का दमन आवश्यक है और यह इस प्रयोग से सम्भव है, अतः मोक्ष प्राप्ति के

लिए भी इसका प्रयोग साधक और वैष्णव लोग करते हैं। साधना में कुलाचार का पूजन, वीर-साधन, चक्रानुष्ठान अवश्य ही करना चाहिए, जिससे कि कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

बगलामुखी यन्त्र

भगवती श्री बगला का पूजन यन्त्र साधना में आवश्यक है। जो कि चने की दाल से बनाया जाता है, अथवा ताम्र पत्र पर या रजत पत्र पर इसे अंकित कर इसका पूजन किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में तन्त्र ग्रन्थों में स्पष्ट है :

मध्ये योनि समालिख्य तद् बाह्ये तु षडस्रकम्।
तद् बाह्येऽष्टदल पद्म तद् बाह्ये षोडशच्छदम्।।
चतुरस्र-त्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम्।

ऊपर मैंने बगला यन्त्र बनाने के विधि स्पष्ट की है। इस प्रकार साधक को बगला यन्त्र बना लेना चाहिए। इसके बाद ही इस पर पूजन प्रयोग तथा संजीवनी मुद्रा के साथ-साथ प्राण-प्रतिष्ठा करके एक लाख या पांच लाख मन्त्र जप से इसे सिद्ध किया जाता है।

स्वामी श्री अनन्तानन्दनाथ इस विद्या के श्रेष्ठ जानकार हैं, और उन्होंने बगला महाशक्ति का रुद्रयामलोक्त अनुष्ठान सिद्ध किया हुआ है।

केवल इस साधना से वे श्रेष्ठतम साधक, सम्पूर्ण भारत में विख्यात और सभी शास्त्रों के पारदर्शी विद्वान होने के साथ-साथ संगीत-विद्या के श्रेष्ठतम उन्नायक हैं।

यद्यपि इस साधना की तीन पद्धतियां प्रचलित हैं, जिसमें रुद्रयामलोक्त पद्धति कठिन होने के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ कही जाती है, और इस प्रकार का मन्त्र प्रयोग करके किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

स्थान भय से मैं बगला साधना का पूर्ण प्रयोग यहां नहीं दे पा रहा हूं, परन्तु प्रामाणिक बगला मन्त्र और अत्यन्त गोपनीय ब्रह्मास्त्र विद्या तथा बगला कवच स्पष्ट कर रहा हूं —

विनियोग

अस्यः श्री ब्रह्मास्त्र-विद्या बगलामुख्या नारद ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमो हृदये। ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। ॐ नमः सर्वांगं श्री बगलामुखी देवता प्रसाद सिद्ध्यर्थ न्यासे विनियोगः।

आवाहन

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां मुखं स्तम्भिनि सकल – मनीहारिणि अम्बिके इहागच्छ सन्निधि कुरु सर्वार्थ साधय साधय स्वाहा।

ध्यान

सौवर्णामनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लसिनीम् हेमावांगरुचि शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम हस्तैर्मुद्गर पाशवज्ररसना सम्भिभ्रती भूषणै व्याप्तांगी बगलामुखी त्रिजगतां सस्तम्भिनो चिन्तयेत्।

मन्त्र

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां
वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय
बुद्धि विनाशय ह्रीं ओऽमूस्वाहा।

वस्तुतः इस छत्तीस अक्षरों वाले मन्त्र में ग़ज़ब की शक्ति और प्रभाव है जो कि विश्व में अन्यतम है इसका एक लाख या पांच लाख जप कर इसे सिद्ध कर लिया जाता है और फिर पुरश्चरण के लिए चम्पक-कुसुम से दशांश यज्ञ तथा इसका दशांश तर्पण करना चाहिए।

जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा हो या परेशानी, व्यापार में दिवालिया होने की स्थिति आ रही हो, या शत्रु हावी हो रहे हों, या मुक़दमे में विजय की सम्भावना क्षीण हो, तो इस प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए। बगलामुखी साधना में कहा गया है कि बगलामुखी माला मन्त्र अपने-आप में पूर्ण है, और जो साधक मात्र नित्य बगलामुखी माला मन्त्र जप कर लेता है, उसके जीवन में कोई बाधा व्याप्त नहीं होती। पाठकों के हित के लिए यह परम गोपनीय मन्त्र भी मैं इन पन्नों के माध्यम से पहली बार उजागर कर देता हूं –

मन्त्र

ओऽम् नमो भगवति ओऽम् नमो वीरप्रताप विजयैर्भगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्लींमुद्रय मुद्रय बुद्धि विनाशय विनाशय अपरबुद्धि कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शत्रुणां शिरो, ललाट मुख, नेत्र, कर्ण, नासिकोरु, पद अणअण, दन्तोष्ठ, जिह्वा, तुल, गुह्या, गुदा, कटि, जानु, सर्वांगेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय खें खीं मारय मारय, परमन्त्र, परयन्त्र, परतन्त्राणि छेदय, छेदय आत्ममन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुःख हर हर दारिद्र्यं निवारय निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणी, दुष्टग्रह, भूतग्रह, पाषाणग्रह, सर्वचाण्डालग्रह, यक्षकिन्नरकिम्पुरुषग्रह भूतप्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी ग्रहाणां पूर्वदिशा बन्धय बन्धय, वार्तालि मां रक्ष रक्ष, दक्षिण दिशा बन्धय बन्धय, किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशा बन्धय, बन्धय स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष ऊर्ध्वदिशां बन्धय बन्धय उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पाताल दिशां बन्धय बन्धय बगला परमेश्वरी मां रक्ष रक्ष सकल रागान् विनाशय विनाशय, शत्रु पलायनाम् जप चयोजनमध्ये राजजनस्त्रीवशां कुरु कुरु, शत्रुन् दह दह, पच पच, स्तम्भय, स्तम्भय मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

वस्तुतः यह मन्त्र सिद्ध करने के बाद यदि साधक इसका नित्य प्रयोग करता है, तो उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

जहां तक मेरा अनुभव है, और यह प्रामाणिक अनुभव है, वर्तमान समय में अधिकांश नेता, अभिनेता और उच्च स्तर के व्यापारी तथा उद्योगपति अपनी बांह पर बगलामुखी यन्त्र धारण किए रहते हैं। मैंने स्वयं कई उच्च उद्योगपतियों को यन्त्र सिद्ध करके दिए हैं। उन्होंने इसका तुरन्त तथा आश्चर्यजनक प्रभाव देखकर इसके प्रति पूर्ण श्रद्धा व्यक्त की। कलियुग में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक, अद्भुत, चमत्कारी है।

कर्ण पिशाचिनी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना से थोड़े-बहुत रूप में प्रत्येक भारतीय परिचित हैं। वर्तमान युग में जब 'चमत्कार' ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है। पर यह साधना गोपनीय रही है। जिनको ज्ञान है, उन्होंने इसे उजागर करना ठीक नहीं समझा, क्योंकि यह उनके हितों के प्रतिकूल था। इन पन्नों पर यह गोपनीय साधना पूर्ण प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट की गई है। साधकों को चाहिए कि वे योग्य गुरु के निर्देशन में ही साधना सम्पन्न करें, अकेले नहीं।

जोधपुर में रामकिशन नाम का एक व्यक्ति है, जो आते ही आपको आपके नाम से ही पुकारेगा और पूछेगा कि आप अमुक स्थान से आए हैं, आपकी कार का नम्बर यह है — आदि-आदि।

टौंक के पास स्वामी गिरजा स्वामी हैं, जो कि किसी व्यक्ति को देखते ही उसके भूतकाल के बारे में अक्षरशः सही बता देते हैं — यहां तक बता देते हैं कि एक दिन पहले आपने क्या भोजन किया, कौन-सी सब्ज़ी खाई, और यहां तक कि प्रातः आपने अपनी पत्नी से क्या-क्या बातें कीं। लखनऊ के पास एक तान्त्रिक रहते हैं जिनका नाम अवधूत बाबा है। वे बीती हुई कोई भी घटना ज्यों-की-त्यों बता देते हैं चाहे वह घटना कितनी ही गोपनीय हो। ये सारे उदाहरण भूतकाल की घटनाओं से सम्बन्धित हैं और भारत में ऐसे सैकड़ों साधु युवक व युवतियां हैं जो कि अनजान व्यक्ति को देखकर उसके भूतकाल के बारे में सब-कुछ बता देते हैं। यह अलग बात है कि वे इनके लिए हाथ देखने का, जन्मपत्री देखने का या ललाट की रेखाएं देखने का ढोंग करके आपको भूतकाल बताते हों, परन्तु सही बात यह है कि उन्हें कर्ण पिशाचिनी सिद्धि होती है जो कि अब गोपनीय नहीं रही, और काफ़ी लोग इस प्रकार की साधना सीखकर इधर-उधर चमत्कार दिखाते हैं।

मेरे एक परिचित युवक हैं — बोधसिंह — जो यहीं से कर्ण पिशाचिनी साधना

सीखकर तीन वर्ष पहले अमेरिका चले गए थे। पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा तो वे लखपती थे। न्यूयार्क में उन्होंने अपना स्वयं का मकान ख़रीद लिया, 2-3 उनकी कारें हैं, और अमेरिका में वे बोधसिंह पंडित के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे फर्राटे के साथ लच्छेदार अंग्रेज़ी बोल लेते हैं और किसी भी अनजान अमेरिकन व्यक्ति से मिलते ही उसे उसके नाम से पुकारकर उसे आश्चर्यचकित कर देते हैं। इसके बाद बोधसिंह पंडित उसके पुत्र का नाम, पत्नी का नाम, कार्य, आजीविका तथा घर में क्या-क्या सामान कहां-कहां रखा है, सही-सही बता देते हैं। यह सुनते ही अमेरिकन व्यक्ति उनके पांडित्य और ज्ञान से प्रभावित होकर झुक जाता है और उन्हें त्रिकालदर्शी मान लेता है, जब कि उन्हें मात्र कर्ण पिशाचिनी साधना ही ज्ञात है, जिसके माध्यम से भूतकाल की छोटी-से-छोटी घटना साधक बता देता है। जब सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हो जाता है, तो वह भविष्य के बारे में गप्पें मारने लगता है। सामने वाला व्यक्ति पूरी तरह से प्रभावित हो ही चुका होता है, अतः उसकी भविष्यवाणियों पर भी पूरा-पूरा विश्वास कर लेता है, जब कि भविष्यकाल की बताई घटना कतई सही नहीं उतरती। क्योंकि उसे ज्योतिष का ज्ञान नहीं के बराबर होता है।

वास्तव में कर्ण पिशाचिनी साधना कोई भी व्यक्ति सीख सकता है और जब वह यह साधना सिद्ध कर लेता है तो मन में ही प्रश्न करने पर कर्ण पिशाचिनी उसके कान में उसको सही-सही उत्तर बता देती है जो कि उसे स्पष्ट सुनाई देता है, परन्तु साधक के पास जो व्यक्ति बैठे होते हैं, उन्हें कुछ सुनाई या दिखाई नहीं देता। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को देखते ही साधक मन-ही-मन प्रश्न करता है कि यह व्यक्ति कौन है और क्या नाम है? तो उसी क्षण उसके कान में स्पष्ट आवाज़ आएगी कि इस व्यक्ति का नाम अमुक है और यह अमुक व्यापार करता है।

जीवन में जब इस प्रकार के तथाकथित साधु या त्रिकालदर्शी मिलें, जो कि भूतकाल सही-सही बता देते हों तो समझ जाना चाहिए कि उसे कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध है, पर भविष्य के बारे में बताई हुई उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। मैं आगे कर्ण पिशाचिनी साधना प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो कि प्रामाणिक है, पर साधक को मेरी गम्भीरतापूर्वक सलाह है कि वह किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही यह साधना सम्पन्न करे, क्योंकि कई बार साधना अधूरी हो जाने पर साधक पागल के समान भी हो जाता है।

प्रयोग 1

यह प्रयोग ग्यारह दिन का है। इसमें कांसे की थाली में सिन्दूर का त्रिशूल बनाकर

उसका पूजन करें और दिन में गाय के शुद्ध घी का दीपक जलाकर ग्यारह सौ मन्त्र जप करें। पीछे रात में भी इसी प्रकार त्रिशूल का पूजन कर घी और तेल दोनों का दीपक जलाकर ग्यारह सौ बार मन्त्र जप करें। इस प्रकार ग्यारह दिन तक प्रयोग करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है और उसके कान में प्रश्न का उत्तर सही-सही दे देती है। इसमें साधक को एक समय भोजन करना चाहिए और यथासम्भव काले वस्त्र धारण करने चाहिए। साधना काल में व्यर्थ बातचीत, स्त्रीगमन, पर-स्त्री से बातचीत सर्वथा वर्जित है।

मन्त्र

ॐ नमः कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागत-वर्तमानानि दर्शय-दर्शय मम भविष्य कथय-कथय ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

प्रयोग 2

यह प्रयोग भी कर्ण पिशाचिनी से सम्बन्धित है। आम की लकड़ी से बने पट्टे पर गुलाल बिछाकर अनार की क़लम से रात को एक सौ आठ बार मन्त्र लिखकर मिटाता जाए और लिखते समय मन्त्र का उच्चारण भी करता जाए। अन्त वाले मन्त्र का पंचोपचार पूजन करके इस मन्त्र का ग्यारह सौ बार उच्चारण करे फिर इस मन्त्र को अपने सिरहाने देकर सो जाए। इस प्रकार लगातार इक्कीस दिन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

साधक को चाहिए कि वह मन्त्र का होली, दीवाली या ग्रहण से प्रारम्भ करके इक्कीस दिन तक उसका प्रयोग करे। यह मन्त्र खाट पर बैठकर भी लिख सकता है और अन्त में उस पट्टे को सिरहाने देकर उसी खाट पर सो सकता है। इस बात का ध्यान रखें कि उस कमरे में उसके अलावा और कोई न सोये, और जहां पर बैठकर मन्त्र लिखे, उठे बिना वहीं पर उसे सो जाना चाहिए।

मन्त्र

ॐ नमः कर्णपिशाचिनी मत्तकरिणी प्रवेषे अतीतानागतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा।

प्रयोग 3

इस प्रयोग में साधक को चाहिए कि वह काले ग्वारपाठे को अभिमन्त्रित कर हाथ-पांवों

में लेप कर इस मन्त्र का नित्य पांच हज़ार जप करे। इस प्रकार इक्कीस दिन में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और उसे कान में सारे तथ्य स्पष्ट सुनाई देने लग जाते हैं।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा।

प्रयोग 4

विधि तीसरे प्रयोग की तरह ही है, पर निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं सनामशक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चंडरूपिणि वद वद स्वाहा।

प्रयोग 5

साधक को चाहिए कि वह मिट्टी और गाय के गोबर से पृथ्वी को लीपकर उस पर बहुत-सा कुश बिछा दे और भगवती कर्ण पिशाचिनी का पंचोपचार पूजन कर रुद्राक्ष की माला से नित्य दस हज़ार मन्त्र जप करे।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक साधना करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है।

मन्त्र

ओऽम् हंसो हंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि स्वाहा॥

प्रयोग 6

साधक लाल वस्त्र पहनकर रात को घी का दीपक जलाकर नित्य दस हज़ार मन्त्र जप करे, इस प्रकार इक्कीस दिन तक निम्नलिखित मन्त्र का जप करने से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मन्त्र

ओऽम् भगवति चंडकर्णे पिशाचिनि स्वाहा॥

प्रयोग 7

यह प्रयोग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है और कहते हैं कि व्यास जी ने स्वयं इस मन्त्र को सिद्ध कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी।

सर्वप्रथम आधी रात को अपने हृदय में कर्ण पिशाचिनी देवी का ध्यान करके रक्त चन्दन से मन्त्र लिखना चाहिए और उस पर रक्त चन्दन, बन्धूक पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए तथा 'ओऽम् अमृत कुरु कुरु स्वाहा' इस मन्त्र से यन्त्र को और लिखे हुए मन्त्र को प्रोक्षण करना चाहिए, तथा बाद में मछली की बलि देनी चाहिए। बलि निम्न मन्त्र से दी जानी चाहिए – **ओऽम् कर्णपिशाचिनि दग्धमीनबलि गृहण गृहण मम सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।।**

इसके बाद रात्रि को पांच हज़ार मन्त्र जप करना चहिए तथा प्रातः काल तर्पण निम्न मन्त्र से किया जाता है। "ओऽम् कर्ण पिशाचिनी तर्पयामि स्वाहा।"

इस प्रकार एक लाख जप करना चाहिए और उसका दशांश होम करने के बाद फिर दशांश तर्पण करना चाहिए।

ऐसा करने पर निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है और कठिन-से-कठिन समस्या और गोपनीय भूतकाल भी उसे स्पष्ट दिखाई देता है।

वस्तुतः ये साधनाएं आसान दिखाई देती हैं, परन्तु थोड़ी-सी भी त्रुटि साधक के लिए नुक़सानदायक हो सकती है। परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि ऊपर जो भी प्रयोग बताए हैं, वे प्रामाणिक हैं। साधकों ने मेरे सामने सिद्ध किए हैं और उन्हें तत्क्षण सफलता मिली है।

फिर भी प्रारम्भ में साधकों को यह सलाह दी जाती है कि उन्हें किसी गुरु के सान्निध्य में ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

कुबेर यन्त्र

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति कहे जाते हैं, इनकी साधना-उपासना देवताओं तक ने की है। शास्त्रों के अनुसार दरिद्रता निवारण, भाग्य-बाधा दोष की समाप्ति एवं अद्‌भुत आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नति के लिए यह साधना अत्युत्तम मानी जाती है।

बिरले भाग्यशाली ही अपने घर में कुबेर यन्त्र रख पाते हैं। इस लेख में इन सबका विवेशन पूर्ण प्रामाणिकता से किया गया है। इस मन्त्र का जप पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यदि यह सम्भव न हो तो किसी योग्य विद्वान से भी कुबेर मन्त्र के जप करवाए जा सकते हैं।

विधान

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए, इसके बाद उसकी केसर आदि से षोडशोपचार पूजा करके उसमें लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए। इसके साथ ही उसके पास कुबेर यन्त्र की स्थापना कर लेनी चाहिए।

कुबेर यन्त्र पूर्णतः गोपनीय रहा है। यद्यपि तन्त्र-मन्त्र से सम्बन्धित कई ग्रन्थों में कुबेर यन्त्र का वर्णन आया है, परन्तु इसका सही रूप में अंकन कहीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ। लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरु से इस यन्त्र का पूर्ण ज्ञान हुआ था। इसके बारे में कहावत है कि पिता को भी चाहिए कि वह अपने पुत्र को कुबेर यन्त्र का ज्ञान न दे। गुरु को भी चाहिए कि वह अपने जीवन में अपने अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही इस यन्त्र का ज्ञान दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु-सन्तों को ज्ञान ही है। अटकलबाज़ी के सहारे वे इसके बारे में कुछ-न-कुछ कह देते हैं।

यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धनदायक यन्त्र माना गया है। लगभग

सभी तान्त्रिकों और मन्त्र-मर्मज्ञों ने इस यन्त्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उनमें पूर्ण विधि-विधान के साथ कुबेर यन्त्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे कि वे धन-धान्य से समृद्ध रहते थे, हज़ारों शिष्यों का पालन-पोषण होता था। यदि वे आश्रम राजाओं से भी ज़्यादा समृद्ध माने जाते थे, तो उसका मूल कारण कुबेर यन्त्र का ही प्रभाव था।

मेरे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि यह यन्त्र अपने-आप में कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। इस यन्त्र की विशेषता है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है।

पिछले कुम्भ में स्वामी प्रवज्यानन्द जी ने लगभग दस हज़ार साधुओं को भोजन कराया था। एक छोटे से कमरे में वे स्वयं बैठ गए थे और अन्दर से उन्होंने खाद्य सामग्री बाहर देते रहने का उपक्रम किया था। सभी साधु आश्चर्यचकित थे कि इनके पास अवश्य ही कोई-न-कोई ऐसी साधना है, जिसके बल पर ये हज़ारों साधुओं को भोजन कराने में समर्थ हो सके हैं, जब कि वे अपने शरीर पर लंगोटी के अलावा और कोई वस्त्र नहीं पहनते। उनकी बगल में एक छोटा-सा झोला पड़ा रहता है और इस झोले में से वे खाद्य-पदार्थ निकाल-निकालकर लोगों को खिलाते रहते हैं।

मेरा उनसे मधुर सम्बन्ध है, और मैं उनसे मिल चुका था। अतः जब मैंने उनसे जिज्ञासा की कि उनके पास ऐसी कौन-सी साधना है जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और हज़ारों लोगों का पेट भरने में सक्षम हैं, तो उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए रहस्योद्घाटन किया कि उन्होंने कुबेर साधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यन्त्र है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और जितना भी द्रव्य वे चाहते हैं, प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वसिष्ठ आश्रम है। वहां पर भी एक साधु काफ़ी समय पहले रहते थे, जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे। उनके पास एक झोला था जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं तथा खाद्य पदार्थ निकालते रहते थे और उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी भी नहीं रहता था।

कुछ समय पहले उनका शरीर शान्त हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने इस लेखक को बुलाया था और अपने झोले से कुबेर यन्त्र निकालकर देते हुए कहा था कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है या मैं जीवन में जो कुछ प्राप्त कर सका हूं उसके मूल में यह कुबेर यन्त्र ही है। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम गृहस्थी में चले गये हो परन्तु फिर भी तुम्हारी आत्मा साधुवत है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त ऊंची भावना है, इसीलिए मैं यह कुबेर यन्त्र तुम्हें देना अपना कर्तव्य समझता हूं।

उनका यह कुबेर यन्त्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है और वास्तव में ही कलियुग में यह यन्त्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

पिछली दीपावली को मुझे देश के श्रेष्ठतम उद्योगपति के यहां पूजन के लिए निमन्त्रण मिला। यद्यपि मैं व्यस्त था, परन्तु उनका बहुत आग्रह था और पिछले बीस वर्षों से उनका मुझसे मधुर सम्बन्ध रहा है। व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन कराने की स्वीकृति दे दी।

जब मैं पूजन कराने के लिए बैठा, तो उन्होंने तिजोरी में से निकालकर एक यन्त्र मेरे सामने रखा और बताया कि पिछली तीन पीढ़ियों से हम इस यन्त्र की पूजा दीपावली की रात को करते हैं। मेरे पड़दादा को यह यन्त्र एक उच्च कोटि के महात्मा ने दिया था और कहा था कि इसे घर की एक तिजोरी में रख देना और नित्य एक बार इसका दर्शन कर लेना। साथ ही दीपावली की रात्रि को इसका पूरी तरह से पूजन करके पुनः तिजोरी में रख देना।

तब से हम प्रत्येक दीपावली को इस यन्त्र की पूजा करते आ रहे हैं। मेरे पिताजी ने यह यन्त्र मुझे दिया था और अब यह परम्परा बन गई है कि सबसे बड़े पुत्र को ही यह यन्त्र दिया जाए। आज हम जो कुछ भी हैं इस यन्त्र के फलस्वरूप ही हैं ऐसा मेरे पिता जी ने मुझे कहा था। मुझे ज्ञात नहीं है कि यह यन्त्र क्या है, और इस यन्त्र का क्या नाम है।

मैंने जब उस यन्त्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया, तो मैं सुखद आश्चर्य में डूब गया, क्योंकि वह यन्त्र सिद्धप्राण-प्रतिष्ठायुक्त कुबेर यन्त्र ही था। इसी प्रकार के यन्त्र को मैं आबू में नंगे बाबा से प्राप्त कर चुका था, और इसी यन्त्र को मैं कुम्भ में स्वामी प्रवज्यानन्द जी के पास देख चुका था।

वास्तव में यह यन्त्र अपने-आप में यन्त्रराज है और पूरे तन्त्र-मन्त्र के ग्रन्थों में इस यन्त्र को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। यह अलग बात है कि यह यन्त्र अपने-आप में गोपनीय रहा है और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यन्त्र धातु का बना होना चाहिए, साथ-ही-साथ यह केवल विजय काल में ही निर्मित होना चाहिए। जब इस यन्त्र का निर्माण हो जाए, तब पूर्ण विधि-विधान के साथ प्राण-प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए जिससे कि यह पूर्ण प्रभावयुक्त हो सके।

इस प्रकार का यन्त्र स्वयं ही सिद्ध होता है। किसी जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती। गृहस्थ को चाहिए कि शुभ स्थान पर इसको स्थापित कर

दे और नित्य इसके दर्शन करे तथा सम्भव हो तो इसके सामने अगरबत्ती व दीपक जलाए। यह यन्त्र जिसके घर में या जिसके पास होता है उसी को फलदायक होता है। जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है वहीं रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यह यन्त्र जिस घर में भी होता है उसी घर को ऊंचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।

इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने के बाद इस पर पांच लाख मन्त्र जप करने से चैतन्य होता है।

विधान

सर्वप्रथम इस यन्त्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए, फिर इस यन्त्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए –

विनियोग

अस्य कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः बृहती छन्दः।
शिवमिध धनेश्वरी देवता, दारिद्र्य विनाशने
पूर्ण समृद्धि सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

मनुजबाह्यविमान वरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भजतुर्दिलम्॥

विरोचन

इसके बाद करन्यास और अंगन्यास करना चाहिए। सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यन्त्र पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मन्त्र से अभिषेक करना चाहिए।

मन्त्र

ओऽम् श्रीं ओऽम् ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

तत्पश्चात दस हज़ार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजलि देनी चाहिए और उस यन्त्र पर निम्न कुबेर मन्त्र का पांच लाख मन्त्र जप करना चाहिए, तब यन्त्र सिद्ध होता है।

कुबेर मन्त्र

ओऽम् यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धि देहि दापय स्वाहा।

जब पांच लाख मन्त्र जप हो जाए तब उसका दशांश घृत यज्ञ करना चाहिए जिससे कि यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार का सिद्ध यन्त्र अपने-आप में ही दुर्लभ होता है और यह यन्त्र वास्तव में ही यन्त्रराज कहलाने योग्य है, क्योंकि जब आज के युग में सम्पत्ति आदि से ही मानव की प्रतिष्ठा आंकी जाती है, तब प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना चाहता है।

परन्तु केवल प्रयत्न या परिश्रम से ही कुछ सम्भव नहीं होता, परिश्रम के साथ-ही-साथ यदि मन्त्र आदि का सहारा लिया जाए, तो निश्चय ही वह पूर्ण उन्नति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि एवं पूर्ण सुख-सौभाग्य प्राप्त करने के लिए इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यन्त्र ही।

इस यन्त्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल इसके दर्शन ही पर्याप्त हैं। इस यन्त्र को घर के पूजा स्थान में, फैक्ट्री में, कारख़ाने में, उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। स्थापित करते समय भी किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत उन्नति देने में समर्थ है।

वास्तव में हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मन्त्र और साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके हैं। पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है –

सकल पदारथ है जग माहीं,
भाग्यहीन नर पावत नाहीं।

अतः इस प्रकार का यन्त्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर सकते हैं।

जीवन में पूर्णता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि, सुख-सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र-सुख, दीर्घायु, स्वास्थ्य एवं सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य प्रदान करने में यह यन्त्र समर्थ है, क्योंकि अष्टलक्ष्मी साधना का समावेश स्वतः ही कुबेर यन्त्र में हो जाता है।

रुद्राष्टाध्यायी

भगवान शंकर का सर्वाधिक प्रिय स्तोत्र रुद्राष्टाध्यायी है, जिसके आठ अध्याय हैं। रुद्राष्टाध्यायी सर्वत्र प्राप्य है, पर उसके विनियोग आदि पुस्तकों में नहीं मिलते, जो कि रुद्राष्टाध्यायी के अभिन्न अंग माने जाते हैं।

शिव प्रेमियों के लिए मैं नीचे रुद्राष्टाध्यायी के गोपनीय विनियोग एवं ध्यान प्रस्तुत कर रहा हूं –

।। श्री गणेशाय नमः।। ओऽम् अस्यश्रीरुद्राध्यायमहामन्त्रस्य। अघोरऋषिः। अमृतानुष्टुपछन्दः। संकर्षणमूर्तिस्वरूपोयोसावादित्यः स एवरुद्रोदेवता। ओऽम् नमस्तेरुद्र इति बीजम्। ओऽम् नमः शिवाय इतिशक्तिः। शिवतराय इतिकीलम्। श्रीरुद्राध्यायमहामन्त्रजपे विनियोगः। अथऋष्यादिन्यासः। ओऽम् अघोरऋषये नमः शिरसि। ओऽम् अमृतानुष्टुपछन्दसेनमः मुखे। ओऽम् संकर्षणमूर्तिस्वरूपोयोसावादित्यः स एवरुद्रोदेवतायै नमः हृदये। ओऽम् नमस्ते रुद्र इतिबीजाय नमः गुह्यो। ओऽम् नमः शिवाय इतिशक्तये नमः पादयोः। ओऽम् शिवतरायइति कीलकाय नमः इत्यस्त्रम्। ओऽम् श्रीरुद्राध्याय जपे विनियोगाय नमः सर्वांगम्। अथ करन्यासः। ओऽम् अग्निहोत्रात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। ओऽम् चातुर्मासात्मने मध्यमाभ्यां नमः। ओऽम् ज्योतिष्ठात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ओऽम् निरुढेपशुबन्धात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओऽम् सर्वकर्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। अथहृदयादिन्यासः। ओऽम् अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। ओऽम् दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। ओऽम् चातुर्मासात्मने शिखायै वषट्। ओऽम् ज्योतिष्ठात्मने कवचाय हुं। ओऽम् निरूढेपशुबन्धात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् सर्व कर्तात्मने अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

आपातालनभस्थलंत्रिभुवनंब्रह्मांडमौलिफुरत्।
ज्योतिष्फाटिक लिंगमौलिविलसत् पूर्णेन्दुराकामृतः

अस्त्रोकाप्लुतमेषमेवम निशंरुद्रानुवाकान् पठन।
ध्यायेदीप्सित सिद्धधृतपदं विप्रोभिषिर्चेष्छिवम् ॥ 1 ॥
ब्रह्मांडव्याप्तदेहायमभसि तरुचाभासमाना भुजगैः।
कंठेकालाकपर्द्दांकिरिडिचरुचिरांछन्द कोदंडहस्ता।
अक्षारुद्राक्षमालाप्रकटितविभवाशंभवामूर्तिभेदा।
रुद्राक्षंरुद्रसूक्तं प्रकटित विभवान् नः प्रयच्छन्तुसौख्यम् ॥ 2 ॥

पश्चिममुखध्यानम्

ओऽम् प्रालेयामलबिंदुकुंदधवलंगोक्षी रफेन प्रभं।
भस्माभ्यंग मनंगदेह दमनं ज्वालावलोलोचनम्।
ब्रह्मेंद्रादिमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितंयोगिभिं।
वंदेहंसकलं कलंकरहितंस्थाणोमुखैपश्चिमम् ॥ 3 ॥

उत्तरमुखध्यानम्

गौरंकुंकुमपिंजरंसुतिलकं व्यापांडुगल्लस्थलं।
भ्रूविक्षेपकटाक्ष वीक्षणलसत्संसिक्तवर्णो पलम्।
स्निग्धंबिंबफली धरंप्रहसितंनीलालकालं कृतं।
वंदेपूर्णशशांकमण्डल निभंवक्रंहरस्योत्तरम् ॥ 4 ॥

दक्षिण मुखध्यानम्

ओऽम् कालांभ्रभ्रमराज नाचलनिभंव्यवृत्ति पिंगेक्षणं।
मर्द्धेंदुद्धयनिः सृतांशुदशनंप्रोदिन्तदंष्ट्रांकुरम्।
सर्पप्रोतकपालशुक्ति सकलंव्याकीर्णसत्छेखरं।
वंदे दक्षिणमीश्वरस्यजटिलंभ्रू भंगरौद्रंमुखम् ॥ 5 ॥

पूर्वमुखध्यानम्

ओऽम् संवर्ताग्नितडित्प्रतप्तकनकसंसिद्धतेजोरुणं।
गम्भीरस्मितनिःसृतोग्रदशनंप्रोद्भासिता भ्रा धरम्।
बालेंदुधृतिलोलपिंगलजटाभारप्रबद्धोरगं।
वंदेसिद्धसुरासुरेचनमितंपूर्वा मुखंशूलिनः ॥ 6 ॥

मध्यमुखध्यानम्

व्यक्ताव्यक्तगुणोत्तरंसुवदनंषडविंशतत्त्वाधिकम्।
तस्मादूर्ध्वजवक्रम क्षयमितिध्येयंसदायोगिभिः।
वन्देतामसवार्जितेनमनसासूक्ष्माच्चसूक्ष्मंपरं।
शांतंपंचममीश्वरस्यवदनंखंव्यापितेजोऽयम्॥ 7॥

प्रमाण

विनाभस्मत्रिपुंडेणविनारुद्राक्षमालया।
पूजितोऽपि महादेवोनस्यात् तस्यफलप्रदः॥ 1॥
तस्मात्मृदापिकर्तव्यं ललाटेवैत्रिपुंडकम्।
'ओऽम् हुं नमः' इतिरुद्राक्षान्प्रत्येकंअभिमन्त्रय॥ 2॥
मालाधारयेदित्युक्तं तत्रैव।
पूजाधिकारार्थेचाक्षरजपउक्तस्तत्रैव भविष्ये॥ 3॥
महापातकयुक्तोवामन्त्रस्यास्यजपेयथा।
अधिकारी भवेत्सर्वइतिदेवोब्रवीच्छिव॥4॥
मीढुष्टमेतिचत्वारि व यं च यसुसंख्यया।
शतरुद्रीसमाख्याता यजुर्वेदेनभाषिता॥ 5॥
वेद वेदाब्धिरामाश्च रामरामाबृध्यकैकका।
द्वौ द्वौ मन्त्रौपृथक्प्रोक्तौनभकेचनकेतथा॥ 6॥
इत्येव पाठः समीचीनम्।
इतिध्यात्वा। मानसोपचारैः संपूज्यः।

इसके बाद साधक चाहे तो विशेष न्यास सम्पन्न कर सकते हैं। पाठकों के हितार्थ विशेष न्यास नीचे की पंक्तियों से स्पष्ट है।

विशेष न्यास

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहस्पतिदेवता बृहतीछन्दः हृदयन्यासे जपे विनियोगः॥

ओऽम् मनो ज्यूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यूर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यूयज्ञ (गूं) समिमन्द धातु॥

विश्वेदेवाः स इह मादयन्तामो सप्रतिष्ठ॥
ओऽम् हृदयाय नमः॥ 1॥

अबोद्धयग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः

अग्निदेवता त्रिष्टुप्छन्दः शिरीन्यासे जपे विनियोगः॥

ओऽम् अबोद्धयग्नि (हि) समिधा जननाम्प्रतिधेनुमिवायती मुषासम्। यह्वा इवप्प्रवयामुज्जिहाना (ह) प्प्रमानव (ह) सिस्रते नाकमच्छः। ओऽम् शिरसे स्वाहा॥2॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निदेवता त्रिष्टुपृछन्दः शिखान्यासे जपे विनियोगः॥

ओऽम् मूर्द्धानन्दिवो अरतिम्पृथिव्याद्वैश्वानरभूत आजातमग्गिनमु।। कवि (गूं) सम्भ्राजमतिथिंजनान्नामासन्ना पात्त्रजंनयन्त्र देवा (ह)॥ ओऽम् शिखायै वषट्॥ 3॥

मर्म्माणित इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्म्माणि देवता विराट्छन्दः कवचन्यासे जपे विनियोगः॥

ओऽम् मर्माणि ते व्वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजा मृते नानुवस्ताम्॥

उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणार्तुजयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु॥ ओऽम् कवचाय हुम्॥ 4॥

विश्वश्रक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भावेन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे जपे विनियोगः॥

ओऽम् व्विश्वतश्श्चक्षूरुतव्विश्श्त मुखो व्विश्वतोबाहुरुत व्विश्श्वतस्प्पात॥

सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमो जनयन्दे व एक (ह) ओऽम् नेत्रत्रयाय वौषट॥ 5॥

मानस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एकरुद्रो देवता जगतोछन्दः अस्त्रन्यासे जपे विनियोगः।

ओऽम् मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मानो अश्श्वेषु रीरिष (हि) मा नो व्वीरान्नरुद्धभामिनौ व्वधीर्हविष्म्मनत (ह) सदमित्वा हवामहे। ओऽम् अस्त्राय फट्॥ 6॥

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त शिव पर धाराभिषेक करते हुए पाठ आरम्भ करे।

पाठ विधि

1. प्रथम अध्याय से पांच अध्याय तक पाठ करें,
2. फिर नमस्ते (पंचम अध्याय के 16 या 66 मन्त्र)

3. फिर 1. एषतेरुद्रभागः 2. अवरुद्र, 3. नमस्ते रुद्र, 4. जाते रुद्र, 5. नर्तविदा, 6. विश्वकर्मा ह्यजानेष्ट, 7. मीढुष्टम्, 8. विकिरिद्रं, 9. सहस्राणि सहस्रसो 10. असंख्याता– मन्त्रों का उच्चारण करें,

4. फिर छठा अध्याय पुनः पढ़ें,

5. फिर सातवें अध्याय में निम्न मन्त्रों से पूर्व नमस्ते – (पंचम अध्याय के 16 या 66 मन्त्र पढ़ें)

1. प्रारम्भ में 2. सत्यंच में 3. ऊर्ध्व में 4. अश्माच 5. अग्निश्च 6. अ (गु) शुश्च 7. अग्निश्च 8. एकाच 9. चतस्रश्च 10. व्यविश्व 11. व्याजाय स्वाहा।

इस प्रकार पाठ पूरा माना जाता है।

अकाल मृत्यु टालने का सर्वोत्तम साधन : मृत्युंजय-विधान

'महामृत्युंजय-विधान' मन्त्रशास्त्र में क्रान्तिकारी मन्त्र तथा आश्चर्यजनक फलदायक प्रयोग है। बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है। भारत में ही नहीं विदेशों में भी 'महामृत्युंजय' की चर्चा रही है। प्रत्येक बालक, रोगी या अकाल मृत्यु से भीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त महामृत्युंजय यन्त्र धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है। महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए महामृत्युंजय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युंजय मन्त्र अपने-आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने-आप में महत्त्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है। नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं – लघु अनुष्ठान चौबीस हज़ार मन्त्र का होता है और इसके बाद 240 आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का होता है, जिसमें 1250 आहुतियां दी जाती हैं तथा महापुरश्चरण या महानुष्ठान चौबीस लाख मन्त्र जप का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में 27 माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान 40 दिन में 33 माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में 66 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए –

1. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देखकर करना चाहिए।

2. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ-ही-साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।

3. जहां जप करें वहां का वातावरण सात्त्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप प्रारम्भ करना चाहिए।

4. घी का दीपक लगातार जलता रहना चाहिए।

5. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।

6. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा-पूरा पालन करना चाहिए।

7. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं काटने चाहिए।

8. अनुष्ठान करने से पूर्व मन्त्र को संस्कारित करके ही पुनश्चरण करना चाहिए।

9. नित्य निश्चित संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।

10. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का 1,100 जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए 11,000 मन्त्र का जप तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए 1,00,000 मन्त्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मन्त्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं। उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हज़ारों-लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है, तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मन्त्र निम्नलिखित है, पर साधक को बीजयुक्त मन्त्र का ही जप करना चाहिए।

मन्त्र

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बध्नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

(ऋ. 7-51-12, यजुर्वेद 3-60)

अर्थात हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले 'उर्वारुक' की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं, अमृत से नहीं।

विधि

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु-स्मरण, गणेश-स्मरण, शंकर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ओऽम् मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ। अमुक यजमानस्य वा शरीरे अमुकपीड़ा निराशंद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थ श्रीमहामृत्युंजय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युंजयमन्त्र जपमहं करिष्ये।

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें–

ओऽम् अस्य श्रीमहामृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेव – कहोलवसिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ का जल छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मन्त्रों से सिर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए –

पुनः वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। पंक्तिगायत्र्युष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखैः सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्र देवतायै नमः हृदिः ह्रीं शक्त्यै नमः लिंगे, श्री बीजाय नमः पादयो।

करन्यास

ओऽम् हौं ओऽम् जूं सः भूर्भवः स्वः त्र्यम्बकं ओऽम् नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ओऽम् नमो भगवते रुद्राय अमृत मूर्त्तये मा जीवाय वद्ध तर्जनीभ्यां नमः।

ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ओऽम् हीं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बध्नात् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हीं हौं अनामिकाभ्यां नमः ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ओऽम् नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ओऽम् ह्रौं जूं सः भूर्भुवः त्रयम्बकम् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।

ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ओऽम् नमो भगवते रुद्राय अमृत मूर्तये मां जीवायं शिरसे स्वाहा।

ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।

ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बध्नात् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हीं हीं कवचाय हुं।

ओऽम् हौं जूं सः भुर्भूवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ओऽम् नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ओऽम् नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट्।

पदन्यास

त्रयम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रूवौः सुगन्धिनेत्रयोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः इव हृदये। बध्नात् जठरे। मृत्योः लिंगे। मुक्षीय ऊर्वौ। मां जान्वोः। अमृतात पादयोः।

ध्यानम्

फिर शंकर का ध्यान करें –

हस्ताम्भोजयुगस्यकुम्भयुगलादुद्धत्य तोयं शिरः,
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भो करौ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं यक्षं च मृत्युंजयम्॥

(सती खं. 38-24)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युंजय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाए हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिये हुए हैं, जिन्हें गोद में रखा हुआ है, सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें में मृगछाला धारण कर रखा है। उनका आसन कमल का है, उनके सिर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है जिससे शरीर भीग गया है। वे तिनेत्रयुक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। उनके बाईं ओर भगवती गिरिजा विराज रही हैं।

जप

ध्यान के बाद महामृत्युंजय का जप करना चाहिए। मन्त्र का स्वरूप इस तरह है –

ओऽम् हीं जूं सः, ओऽम् भूर्भुवः स्वः
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बध्नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
स्वः भुवः ओऽम् सः जूं हीं ओऽम्।

यह सम्पुट युक्त मन्त्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का माना जाता है। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए। जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण का अचूक विधान माना जाता है, हज़ारों का अनुभूत है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युंजय

ओऽम् जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा हो) पालय पालय सः जूं ओऽम्।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ग्यारह लाख मन्त्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र ने इसे सर्वरोग निवारक घोषित किया है।

मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनः॥

मन्त्र जप

यदि कोई साधक केवल मन्त्र जप करना चाहे उनके मृत्युंजय मन्त्र इस प्रकार हैं –

ओऽम् जूं सः सः जूं ओऽम्

लघुतम मन्त्र

महामृत्युंजय का लघुतम मन्त्र इस प्रकार है –

ओऽम् हौं जूं सः

बलिदान मन्त्र

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मन्त्र से भगवान मृत्युंजय को जायफल समर्पित करना चाहिए।

ओऽम् हीं हीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा।

वस्तुतः महामृत्युंजय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है। जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिए कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावे। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ 'महामृत्युंजय यन्त्र' धारण कर ही लेना चाहिए।

शिव-पूजन

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्राक्तंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
स्वच्छ स्वर्णपयोदं मौक्तिकजपावर्णोमुखैः पंचभिः
त्रयक्षैरचिंतमीशमिन्दुमुकुटं सोमेश्वराख्यं प्रभुम्।
शूलंटंक कृपाणवज्रदहनान्-नागेन्द्रघंटाकुशान।
पाशं भीतिहरं दधानममिताकल्पोज्ज्वलांगं भजे॥

सद्योजात-स्थापन

पश्चिमं पूर्णचन्द्राभं जगत् सृष्टिकरोज्ज्वलम्।
सद्योजातं यजेत् सौम्यं मन्दस्मित मनोहरम्॥

वामदेव-स्थापन

उत्तरं विद्रुमप्रख्य विश्वस्थितिकरं विभुम्।
सविलासं त्रिनयनं वामदेवं प्रपूजयेत्॥

अघोर-स्थापन

दक्षिणं नीलजीमूत प्रभं संहारकारकम्।
वक्रभ्रूकुटिलं घोरमघोराख्यं तमर्चयेत्॥

तत्पुरुष-स्थापन

यजेत् पूर्वमुखं सौम्यं बालार्क सदृशप्रभम्।
तिरोधानकृत्यपरं रुद्रं तत्पुरुषाभिधम्॥

ईशान-स्थापन

ईशानं स्फटिकप्रख्यं सर्वभूतानुकंपितम्।
अतीव सौम्यमोंकार-रूपं ऊर्ध्वमुखं यजेत्॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

ओऽम् नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः॥
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौलेवृषभाधिरूढ़।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
वाहाह्यामि देवेशमादिमध्यान्तवर्जितम्।
आधारं सर्वलोकानामाश्रितार्थ प्रदायिनम्॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि।

अक्षत छिड़क दें।

आसन

ओऽम् याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापनाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥
विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बरनिवासिने।
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पुष्प चढ़ावें।

पाद्य

ओऽम् यामिषुर्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवर्गिरित्रता इुकुरु माहि (गूं) सीः पुरुषंजगत्॥

नमः शर्वाय सौमाय सर्वमंगल हेतवे।
तुभ्यं संप्रददे पाद्यं श्रीकैलास निवासिने॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

चरणों में जल अर्पित करें।

अर्घ्य

ओऽम् शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छावदामसि।
यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म (गूं) सुमना असत्॥
अनर्घफलदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतस्य च।
तुभ्यमर्घ्य प्रदास्यामि द्वादशान्तनिवासिने॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्य समर्पयामि।

अर्घ्यपात्र में गन्धाक्षतपुष्प के साथ जल लेकर चढ़ावें।

आचमन

ओऽम् अद्धयवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्चसर्वाजभयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

छः बार आचमन करावें।

स्नान

ओऽम् असोयस्ताम्रो अरुणउतबभ्रुः सुमंगलः।
ये चैन (गूं) रुद्राअभितोदिक्षुश्रिताः
सहस्रशोवेषा (गूं) हेड ईमहे।
गंगाक्लिन्नजटाभार सोमसोमार्धशेखर।
नद्या मया समानीतै स्नानं कुरु महेश्वरः॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।
स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घंटावादन करें व स्नान करावें।

पयस्नान

ओऽम् पयः पृथिव्याम्पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि।
पयः स्नानान्ते शुद्धौदकस्नानं समर्पयामि।

पहले दूध व फिर जल से स्नान करावें।

दधिस्नान

ओऽम् दधिक्राव्यां अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु (गूं) षितारिषत्।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।
दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले दही से व फिर जल से स्नान करावें।

घृतस्नान

ओऽम् घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम्।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।
धृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले घी से व फिर जल से स्नान करावें।

मधुस्नान

ओऽम् मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव (गूं) रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नी वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले शहद से व फिर जल से स्नान करावें।

शर्करास्नान

ओऽम् उप (गूं) रसमुद्धयसम (गूं) सूर्य्य सन्त (गूं) समहितम्। अपा (गूं) रसस्ययो रसस्तं गृह्माभ्युत्तममुपयामगृहीतौसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहलाम्येषते योतिरिन्द्राय त्वां जुष्टतमम्। ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले चीनी से व फिर जल से स्नान करावें।

पंचामृतस्नान

ओऽम् पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्। ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि। पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले पंचामृत व फिर जल से स्नान करावें।

गन्धोदकस्नान

ओऽम् गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहये श्रियम्।

मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम्। चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि। गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पहले गुलाब जल से व फिर जल से स्नान करावें।

शुद्धोदकस्नान

ओऽम् शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनः। श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णयामा अवलिप्ता रौद्रा नमोरूपाः पार्जन्यः।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घंटावादन करके जल से स्नान कराएं व फिर आचमन कराएं।

वस्त्र

ओऽम् असो योवसर्पति नीलग्रीवी विलोहितः।
उतैनगोपा अदृश्रन् नदृश्रने नुदहार्यः सदृष्टोमृडयाति नमः।
दिगम्बर नमस्तुभ्यं गजाजिनधराय च।
व्याघ्रचर्मौत्तरीयाय वस्त्रयुग्मंददाम्यहम्।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत

ओऽम् नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोहन्तेभ्योकरन्नभूः।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्ध द्रव्य

ओऽम् त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बध्नान् मृत्यौर्मुक्षीय मामृतात्॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः सुगन्ध-द्रव्यं समर्पयामि।

भगवान को इत्र लगाएं।

भस्म

अग्निहोत्र समुद्भूतं विरजाहोमपावितम्।
गृहाण भस्म हे स्वामिन् भक्तानां भूतिदायक॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः भस्मं समर्पयामि।

भस्म अर्पित करें।

गन्ध

ओऽम् प्रमुंचधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्यौर्ज्याम्। याश्चते हस्त इषवः पराता भगवोवप।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि।

चन्दन चढ़ावें।

अक्षत

ओऽम् अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्ती षतस्वभान वोविप्रान्नविशष्ठ्युयामती योजान्। विन्द्रतेहरी।

अक्षतान् धवलान् देव सिद्धगन्धर्व पूजित।
सुन्दरेश नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव।
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत चढ़ावें।

पुष्प

ओऽम् विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां त उत। अनैशन्नस्यया इषव आभुरस्यनिषंधिः

तुरीयवनसंभूतं परमानन्दसौरभम्।
पुष्पं गृहाण सोमेश पुष्पचापविभंजन॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्वपत्र

ओऽम् नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमोः दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वे शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर-पाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम्॥

अंगपूजा

ओऽम् भवाय नमः पादौ पूजयामि। ओऽम् जगत्पित्रे नमः जंघे पूजयामि। ओऽम् मृडाय नमः जानुनीं पूजयामि। ओऽम् रुद्राय नमः ऊरु पूजयामि। ओऽम् कालान्तकाय नमः कटि पूजयामि। ओऽम् नागेन्द्रभरणाय नमः नाभिं पूजयामि। ओऽम् स्तव्याय नमः स्तनो पूजयामि। ओऽम् भवनाशनाय नमः भुजान् पूजयामि। ओऽम् कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि। ओऽम् महेशाय नमः मुखं पूजयामि। ओऽम् लास्यप्रियाय नमः ललाटं पूजयामि। ओऽम् शिवाय नमः शिरः पूजयामि। ओऽम् प्रणतार्तिहराय नमः सर्वाण्यंगानि

पूजयामि।

प्रत्येक बार गन्ध-अक्षत-पुष्प से सम्बन्धित अंग को अर्पित करें।

अष्ट पूजा

ओऽम् शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः, ओऽम् भवाय जलमूर्त्तये नमः, ओऽम् रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः, ओऽम् उग्राय वायुमूर्त्तये नमः, ओऽम् भीमाय आकाश मूर्त्तये नमः, ओऽम् ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः, ओऽम् महादेवाय सोममूर्त्तये नमः, ओऽम् पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प, बिल्वपत्र अर्पित करें।

परिवार पूजा

ओऽम् उमायै नमः, ओऽम् शंकरप्रियायै नमः, ओऽम् पार्वत्ये नमः, ओऽम् काल्यै नमः, ओऽम् कालिन्द्यै नमः, ओऽम् कोटिदेव्यै नमः, ओऽम् विश्वधारिण्यै नमः, ओऽम् गंगा देव्यै नमः, नवशक्तीन् पूजयामि, सर्वोपचारार्थ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प अर्पित करें।

ओऽम् गणपतये नमः, ओऽम् कार्तिकेयाय नमः, ओऽम् पुष्पदन्ताय नमः, ओऽम् कपर्दिने नमः, ओऽम् भैरवाय नमः, ओऽम् शूलपाणये नमः, ओऽम् चंडेशाय नमः। ओऽम् दण्डपाणये नमः, ओऽम् नन्दीश्वराय नमः, ओऽम् महाकालाय नमः। सर्वान् गणधिमान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ओऽम् अघोराय नमः, ओऽम् पशुपतये नमः, ओऽम् शर्वाय नमः, ओऽम् विरूपाक्षाय नमः, ओऽम् विश्वरूपिणे नमः, ओऽम् त्रयम्बकाय नमः, ओऽम् कपर्दिने नमः, ओऽम् भैरवाय नमः, ओऽम् शूलपाणये नमः, ओऽम् ईशानाय नमः, एकादशरुद्रान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्य

ओऽम् अहिरिव भोगैः पर्यति बहुज्यायां हेतिम्परिबाधमानः। हस्तध्नों विश्वावयुनानिविद्वान् पुमान् पुमा (गुं) सम्परिपातु विश्वतः॥

हरिद्रां कुंकुम चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम्।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

अबीर, गुलाल आदि चढ़ावें।

धूप

ओऽम् या ते हेतीभीर्दुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि।

अगरबत्ती जलाएं।

दीप

ओऽम् परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्त वारे अस्मिन्निधैहितम्।
साज्यवर्तिंयुतं दीपं सर्वमंगलकारणम्।
समर्पयामि पश्येदं सोमसूर्याग्निलोचन॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

प्रज्वलित दीपक पर घंटा वादन करते अक्षत छोड़ दें।

नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प प्रोक्षण करते हुए रुद्र गायत्री बोलें –

ओऽम् तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

फिर नैवेद्य पर धेनुमुद्रा दिखाते हुए निम्नांकित मन्त्र बोलें –

ओऽम् अवतत्य धनुष्ट्व (गुं) सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवौ नमः सुमना भव।।

नैवेद्यं षड्रसोपेतं विषाशन् घृतान्वितम्।
मधुक्षी रापूपयुक्तं गृह्यतां सोमशेखर॥

ओऽम् याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा आश्च पुष्पिणितः। बृहस्पति-प्रसूस्तानो मुचंत्व (गुं) हसः

यस्य स्मरण मात्रेण सफला सन्ति सक्रियाः।
तस्य देवस्य प्रीत्यर्थ इयं ऋतुफलार्पणम्॥

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि। फिर आसमुद्रा में निम्नांकित उच्चारण करें –

ओऽम् प्राणाय स्वाहा, ओऽम् अपानाय स्वाहा, ओऽम् व्यानाय स्वाहा, ओऽम् उदानाय स्वाहा, ओऽम् समानाय स्वाहा।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि, पूर्वापोषनं समर्पयामि।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि, उत्तरापोषन समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः करोद्धर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

भगवान के हाथों में चन्दन अर्पित करें।

ताम्बूल

ओऽम् नमस्ते आयुधायानातताय धृष्णवे।
उमाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्धयनार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा

ओऽम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्धयर्थे हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजन

ओऽम् इदं (गूं) हविः प्रवननम्मे अस्तु दशवीर (गूं) सर्वगण (गूं) स्वस्तये। आत्मसनि। प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजा बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।

ध्यान करें

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम्।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशंकरम्॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पचंवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम्।
नागंपाशं घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥
ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः नीराजनं दर्शयामि।

जल आरती

ओऽम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतये शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

प्रदक्षिणा

ओऽम् मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकम्मान उक्षन्त मुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोतरम्मानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः।।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पांजलि

ओऽम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह ना कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व साध्याः सन्ति देवाः।।

ओऽम् राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ओऽम् स्वस्ति। साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमैष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सर्वाभौमः सर्वायुष आन्तादा परार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोको भीगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामाविश्वेदेवाः सभासद इति।।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः मन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि।

नमस्कार

ओऽम् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

तव तत्त्वं न जानामि कोदृशोसि महेश्वर।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानांपतये नमः।।
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तु ते।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः।।

ओऽम् निधनपतये नमः। निधनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिंगाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिंगाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णलिंगाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यलिंगाय नमः। भवाय नमः। भवलिंगाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वलिंगाय नमः। शिवाय नमः। शिवलिंगाय नमः। ज्वालाय नमः। ज्वललिंगाय नमः। आत्माय नमः। आत्मलिंगाय नमः। परमाय नमः। परमलिंगाय नमः। एतत् सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग (गूं) स्थापयति पाणि मन्त्रं वित्रिम्।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः नमस्करोमि।

प्रार्थनापूर्वक क्षमापन

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत् पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे॥
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
क्षमस्व देवदेवेश क्षमस्व भुवनेश्वर।
तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥
असारे संसारे निजभजन दूरे जडधिया।
भ्रमन्तं मामन्धं परमकृपया पातुमुचितम्॥
मदन्यः को दीत-स्तव कृपण रक्षाति-निपुण।
स्त्वदन्यः को वा मे त्रिजगति शरण्यः पशुपते॥

विशेषार्घ्य

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

रक्ष-रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षकं।
भक्तानां अभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येन फलदोस्तु सदा मम।।

ओऽम् मानस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्रुद्र भामिनो बधीहैविष्यन्तः सदमित्वाहवामहे।

ओऽम् उमामहेश्वराभ्यां नमः विशेषार्घ्य समर्पयामि।

अर्घ्य-पात्र में जल, गन्धाक्षत-पुष्प, बिल्वपत्र, फल आदि मंगल द्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करें।

समर्पण

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्यार्चं तव दर्शनात्॥
देवी दाता च भोक्ता च दैवरूपमिदं जगत्।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि॥
साधुवासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्व कृपया देव गृहाणाराधनं मम॥

शंख या आचमनी का जल देव के दक्ष हस्त में देते हुए समस्त पूजा फल उन्हें समर्पित करें।

अनेनकृत पूजाकर्मणा श्रीसंविदात्मकः साम्बसदाशिवः प्रीयन्ताम्। ओऽम् तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद वैदिक, गृहस्थ या संस्कृत आरती कर पुष्पांजलि करें।

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥
जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ 1॥ ओऽम् हर हर.
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।

हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ 2 ॥ ओऽम् हर हर.
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ॥ 3 ॥ ओऽम् हर हर.
अक्षमाला वनमाला रुंडमाला धारी।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥ 4 ॥ ओऽम् हर हर.
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे ॥ 5 ॥ ओऽम् हर हर.
कर मध्ये दस मंडल चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ॥ 6 ॥ ओऽम् हर हर.
काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥ 7 ॥
ओऽम् हर हर.
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ओऽम् मध्ये ये तीनों एका ॥ 8 ॥ ओऽम् हर हर.
त्रिगुणा स्वामी की आरति जो कोई नर गावे
ज्योरां मन शुद्ध होय जावे, ज्योरां पाप परा जावे
ज्योरे सुख संपत्ति आवे, ज्योरां दुःख दारिद्र्य जावे
ज्योरे घर लक्ष्मी आवे
भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी
इच्छा फल पावे ॥ 9 ॥ ओऽम् हर हर.

जै शिव ओंकारा

मन भज शिव ओंकारा, मन रट शिव ओंकारा ॥
हो शिव भूरी जटावाला, हो शिव दीर्घ जटा वाला ॥
हो शिव भाल चन्द्र वाला, हो शिव तीन नेत्र वाला ॥
हो शिव ऊपर गंगधारा, हो शिव बरसत जनधारा ॥
हो शिव तीन नेत्र वाला, हो शिव गल बिच रुण्डमाला ॥
हो शिव कम्बु ग्रीव वाला, हो शिव भस्मी अंग वाला ॥
हो शिव फणिधर फण धारा, हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला ॥
हो शिव ओढ़त मृग छाला, हो शिव धारण मुण्डमाला ॥
हो शिव भूत प्रेत वाला, हो शिव बैल चढण वाला ॥

हो शिव पारवती प्यारा, हो शिव भक्तन हित कारा ॥
हो शिव दुष्ट दलन वाला, हो शिव पीवत भंग प्याला ॥
हो शिव मस्त रहन वाला, हो शिव दरसन दो भोला ॥
हो शिव परसन दो भोला, हो शिव बरसो जलधारा ॥
हो शिव काटो जमफांसा, हो शिव मेटो जमत्रासा ॥
हो शिव रहते मतवाला, हो शिव ऊपर जलधारा ॥
हो शिव ईश्वर ओंकारा, हो शिव बम बम बम भोला ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भोलेनाथ महादेव
अर्धांगी धारा। ओऽम् हर हर हर महादेव ॥

आरती किस प्रकार करें

शिव की आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान करके चार बार आरती उतारें, फिर नाभि कमल का ध्यान करके दो बार, फिर मुख का स्मरण करके एक बार तथा सर्वांग की सात बार, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारें। इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए छोड़ें और निम्न मन्त्र पढ़ें –

ओऽम् द्यौः (हू) शांतिरन्तरिक्ष (गूं) शांतिः (हि) पृथिवी शांतिरापः (ह) शांतिरोषधयः (ह) शांतिः (हि) वनस्पतयः (ह) शांतिर्विश्वेदेवाः (ह) शांतिः (हि) ब्रह्मशांतिः (हि) सर्व (गूं) शांतिः (हि) शांति रेवशान्तिः! (हि) सामाशान्तिरेधि ॥

आरती के बाद भक्तिभाव से सिर झुकाकर शिव स्तुति करें –

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकाले,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ 1 ॥
वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्यशशांक-वह्निनयनं वन्दे मुकुंदप्रियं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥ 2 ॥
शांतं पद्मासनस्थं शशधर मुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।
शं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगं वृहन्तम् ॥
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितम्

सांकुशं वामभागै,
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥ 3 ॥

फिर हाथों में पुष्प लेकर मन्त्र पुष्पांजलि पढ़ते हुए सदाशिव को पुष्प अर्पण करें।

ओऽम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेहनाकं महिमानःसचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ 1 ॥

ओऽम् राजाधिराज प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान् काम-कामायमह्यम् ॥ कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ 2 ॥

ओऽम् स्वस्ति साम्राज्य भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं परमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सर्वियुष आन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्र पर्यन्तायां मेकराडिति ॥ तदप्येष श्लोको भीगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे ॥ आविक्षितस्य काम प्रेर्व्विश्वे देवाः सभासद इति ॥ 3 ॥

(इति मन्त्र पुष्पांजलि समर्प्य)

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं च पदे पदे॥

श्री गुरु-पूजन

अस्थि-चर्मयुक्त देह को ही गुरु नहीं कहते, अपितु इस देह में जो ज्ञान समाहित है, उसे 'गुरु' कहते हैं। इस ज्ञान प्राप्ति के लिए उन्होंने जो तप और त्याग किया है, हम उन्हें नमन करते हैं, इस ऊर्ध्वमुखी ज्ञान प्राप्ति से जो तेजस्विता प्राप्त हुई है, हम उसका अभिनन्दन करते हैं।

हमने ईश्वर तो देखा नहीं, पर उसके सदृश गुरु को अवश्य देखा है, जो इस देह को दिव्य आलोकित कर उस ब्रह्म में लीन करने का सामर्थ्य प्रदान करता है, जो मानव का अन्तिम लक्ष्य है।

इसीलिए शास्त्रों में 'गुरु' का महत्त्व सभी देवताओं से ऊंचा माना गया है। गुरु का पूजन सबसे पहले किया जाता है, गुरु की वन्दना ईश्वर से भी पूर्व शास्त्रसम्मत कही गई है।

साधकों के उपयोगार्थ गुरु पूजन विधि नीचे की पंक्तियों में प्रस्तुत की जा रही है –

श्री गुरु ध्यान

द्विदल कमलमध्ये वद्धसंवित्समुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति
शमिततिमिरशोकं श्री गुरुं भावयामि॥
हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं
सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद्गुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं
चित्पुस्तकाभीष्टवरंदधानम्॥

श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

ओऽम् स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः।
ओऽम् स्वच्छप्रकाशविमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः।
ओऽम् स्वात्माराम पंजरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि
गुरवै नमः, आवाहयामि पूजयामि॥

आसन

ओऽम् इदं विष्णुर् विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा (गूं) सुरे स्वाहा।। श्री गुरुचरणेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

चरणों में पुष्प चढ़ावें।

पाद्य-स्नान

ओऽम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः स्थिरैरंगै स्तुष्टुवा (गूं) सस्तनूभिरव्यशेमहि देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं च समर्पयामि। पुनः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चरणों को उपचार अर्पित करके अच्छी तरह से पोंछ दें व वस्त्र अर्पित करें।

वस्त्र

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

चन्दन-अक्षत

ओऽम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बध्नान् मृत्योर्मुक्षीय् मामृतात्॥
ओऽम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बध्नादितोमुक्षीय मामृतात्॥
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः चन्दनं अक्षतान् च समर्पयामि।

पुष्प

ओऽम् नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः पुष्पं बिल्वपत्रं च समर्पयामि।

इसके पश्चात् अंष्टोत्तरशत आदि गुरु नामों से अर्चना करें। यदि श्री गुरु का ललाट पूजन करना हो तो यहां 'नमोस्त्वनन्ताय' आदि मन्त्रों से गन्धाक्षत-पुष्प अर्पित करें।

दीप

ओऽम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य

नैवेद्यप्रोक्षण – ओऽम् गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्।

ओऽम् नाभ्या आसीदन्तरिक्ष (गूं) शीष्णोर्द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यांभूमिर्दिशैः श्री त्रांत्तथालोकां अकल्पयन्।

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः नैवेद्य निवेदयामि नानाऋतुफलानि च समर्पयामि।

नीराजन

ओऽम् इदं (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर (गूं) सर्वगण (गूं) स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।

ओऽम् न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नैवा विद्युतो भाति कुतो यमग्निः। समेव भान्तमनुभाति सर्व तस्यभामा सर्वमिदं विभाति।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर्, दीपांकुरैरुज्ज्वलमुच्छ्रितैश्च।
घंटानिनादेन समर्पयामि, मृत्युंजयान त्रिपरान्तकाय।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः नीराजन दर्शयामि।

जल आरती

ओऽम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।

पुष्पांजलि

ओऽम् न कर्मणा न प्रजयाध्नैन त्यागैनैकै, अमृतत्वामानशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां बिभ्राजयते यद्यतयोविशन्ति॥
वेदान्तविज्ञान सुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद् यतयः शुद्धसत्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले, परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे॥
यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तौ वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥
ओऽम् विश्वतश्चक्षुंरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां घमति
सम्पत त्रैर्द्यावाभूमि जनयन् देव एकः॥
नाना-सुगन्ध-पुष्पाणि यथा कलोद्भवानि च।
पुष्पांजलिं मया दत्तां गृहाण गुरुनायक॥
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः मन्त्र-पुष्पांजलिं समर्पयामि।

नमस्कार-प्रार्थना-स्तुति

ओऽम् नमो स्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।
नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते।
वासनाद् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं
सर्वभूतनिवासोसि वासुदेव नमोऽस्तुते।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्॥
शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्॥
सूत्रभाष्यकृतो वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

विशेषार्घ्य

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः विशेषार्घ्य समर्पयामि।

समर्पण

देव देव गुरुदेव पूजां प्राप्त करोति यः।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरांकुरु।।
अनया पूजया श्रीगुरु प्रीयन्ताम। ओऽम् तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।

शुष्क जीवन में अमृतधारा का प्रवाह : शक्तिपात

शक्तिपात के बारे में काफ़ी कुछ सुना जाता है, पर इस बारे में कहीं पर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है कि शक्तिपात क्या है? क्यों ज़रूरी है? इससे क्या लाभ हैं? आदि-आदि। साधारण गृहस्थ ही नहीं, अच्छे-अच्छे साधक-योगी भी इसका समुचित उत्तर देकर जिज्ञासु को सन्तुष्ट नहीं कर पाते।

यहां इस कठिन, दुर्बोध और गूढ़ विषय को सरल-स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे इसके बारे में सम्यक् ज्ञान हो सके।

मानव जीवन ईश्वर की तरफ़ से इस सृष्टि को सबसे बड़ा वरदान है। प्रारब्ध से ही यह मानव जीवन प्राप्त होता है, 'विवेक चूड़ामणि' में भगवान शंकराचार्य ने कहा है –

जन्तूनां नर जन्म दुर्लभमतः पुंस्त्वं ततो विप्रता
तस्माद्वैदिक धर्ममार्ग परता बिद्वत्वमस्मात्परम्।
आत्मानात्म विवेचनं स्वऽनुभवो ब्रह्मात्मना संस्थिति-
र्मुक्तिर्नोशत जन्म कोटि सुकृतैः पुण्यैर्विना लभ्यते॥

अर्थात अत्यन्त सूक्ष्म जन्तु से विकास होते-होते दुर्लभ मनुष्य जन्मलाभ होता है, फिर इसके आगे मनुष्य में भी पुरुष जन्म है। इस पुरुष जन्म में भी जिसमें विप्रता या ब्राह्मणत्व के गुण आ जाते हैं और इसके आगे भी जिसमें धर्ममार्गपरता, विद्वत्ता और मन्त्र-तन्त्रों के प्रति ज्ञान, रुचि आदि का उद्भव होता है, वह जीवन वास्तव में ही धन्य कहलाता है।

दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त करके भी जो मनुष्य (या स्त्री) आत्ममुक्ति के साधन हेतु प्रयत्न नहीं करता, उससे बड़ा आत्महन्ता और कौन हो सकता है?

इतः कोन्वस्ति मूढ़ात्मा यस्तु स्वार्थ प्रमाद्यति।
दुर्लभं मानुषं देहं प्राप्य तत्रापि पौरुषम्॥

शक्तिपात क्या है?

मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म साक्षात्कार या मोक्ष प्राप्ति है। जब तक मनुष्य अपने-आप में ब्रह्म की स्थापना या स्थिति प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसे बार-बार जन्म लेकर भव-जन्म, रोग-शोक, दुख, सन्ताप आदि भोगते रहना पड़ता है।

जब आत्मा प्रयत्न करके पूर्ण स्वरूप प्राप्त करती है, तो वह ब्रह्मस्वरूप होने लगती है। पर इस ब्रह्मस्वरूपता से पहले शरीर स्थित मल पाक होना आवश्यक है, मल पाक से तथा इन्द्रियजन्य दोष समाप्त होने पर चित्त पर से मल का आवरण हट जाता है, अनुग्रह शक्ति का उदय होता है, फलस्वरूप शान्त और निर्मल आत्मा के दर्शन होने लगते हैं।

शक्तिपात गुरु के द्वारा ही सम्भव है। जब गुरु देखता है कि प्रयत्न करने पर भी शिष्य या साधक कुंडलिनी जागरण में या मन्त्र-सिद्धता में सफल नहीं हो रहा है, और उसके शरीर में उतनी शक्ति उत्पन्न नहीं हो रही है जितनी कि साधना की सफलता के लिए ज़रूरी है, तब गुरु अपने शरीर में स्थित ऊर्जा-शक्ति में से कुछ शक्ति शिष्य के शरीर में प्रवाहित करता है। इस क्रिया को ही 'शक्तिपात' कहते हैं।

वसिष्ठ ने श्रीराम को स्पष्ट शब्दों में बताया था कि शक्तिपात केवल गुरुकृपा से ही सम्भव है, और गुरुकृपा, शिष्य द्वारा सेवा से ही प्राप्त हो सकती है –

परिपक्वमला ये तानुत्सदन हेतु शक्ति पातेन।
जो जयति परे तत्त्वे स दीक्षयाचार्य मूर्तिस्थः॥

और इस शक्तिपात के द्वारा ही शिष्य को अलभ्य सिद्धियां एवं मुक्ति प्राप्त हो सकती हैं।

शक्तिपातेन संयुक्ता विद्यावेदान्त वाक्यजा।
यदा यस्य तदा यस्य विमुक्तिर्नात्र संशयः॥

वस्तुतः सद्गुरु अपनी करुणा के वशीभूत होकर शिष्य की सेवा से प्रसन्न हो 'शक्तिपात' के द्वारा उसे 'स्वयंवत' बना लेते हैं। श्री शंकराचार्य ने इस सम्बन्ध में 'शतश्लोकी' के प्रारम्भ में ही एक सुन्दर वर्णन किया है –

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवन जठरे सद्गुरोर्ज्ञान दातु।

स्पर्शश्चैतत्र कल्प्यः सनयति यदहो स्वर्णतामश्य सारम्।
न स्पर्शत्वं तदापि श्रित चरणयुगे सद्गुरुः स्वोयशिष्ये।
स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरुपम स्तेन वा लौकिकोऽपि॥

अर्थात त्रिभुवन में गुरु की उपमा देने लायक कोई दृष्टान्त नहीं है, गुरु के पारस से किसी वस्तु की उपमा नहीं दी जा सकती, क्योंकि पारस तो मात्र सोना ही बनाता है, किसी वस्तु को पारस नहीं बना सकता। परन्तु सद्गुरु तो अपने शिष्य को स्वयं के समान ही बना लेता है।

शक्तिपात करते समय गुरु अपने पास जो साधना एवं सिद्धियों का समुद्र है, वह शिष्य में उंडेल देता है और शिष्य में ऐसी क्षमता पैदा कर देता है कि उसमें उन सिद्धियों को समाहित करने की शक्ति आ जाए।

शिष्य चाहे मूर्ख हो, अल्पज्ञानी हो, अज्ञानी हो या कमज़ोर हो, पुरुष हो या स्त्री हो, गुरु जिसमें भी पात्रता देखता है, और उसकी सेवा से प्रसन्न होता है, उसमें शक्तिपात कर लेता है।

शक्तिपात करते समय गुरु जब शिष्य को अपने गले लगाता है, तब उसके शरीर में कम्पन होने लग जाता है, आनन्द के अतिरेक से आंसू बहने लग जाते हैं। पसीना छूट जाता है, सारा शरीर रोमांचित हो उठता है तथा शिष्य एक अनिर्वचनीय प्रकाश से भर जाता है।

देहपातस्थता कम्पः परमानन्द हर्षणे।
स्वेदो रोमांच इत्येतच्छक्तिएस्य लक्षणम्॥

इससे यह स्पष्ट है कि सद्गुरु प्रसन्न हो जाए, तो अपनी सारी शक्ति एक क्षण में अपने शिष्य को दे सकते हैं। यही बात भगवद्भक्त सन्त तुकाराम एक अभंग में इस प्रकार कहते हैं, "सद्गुरु के बिना रास्ता नहीं मिलता, इसलिए सब काम छोड़कर पहले उनके चरण पकड़ लो, वह तुरन्त अपने जैसा बना लेते हैं, इसमें उन्हें ज़रा भी देर नहीं लगती।"

गुरु कृपा से जब शक्ति प्रबुद्ध हो उठती है, तब साधक को आसन, प्राणायाम, मुद्रा आदि करने की कुछ भी आवश्यकता नहीं रहती। प्रबुद्ध कुंडलिनी ऊपर ब्रह्मरन्ध्र की ओर जाने के लिए छटपटाने लगती है। उसके उस छटपटाने में जो कुछ क्रियाएं अपने-आप होती हैं, वे ही आसन, मुद्रा, बन्ध और प्राणायाम हैं। शक्ति का मार्ग खुल जाने के बाद ये सब क्रियाएं अपने-आप होती हैं, और उनसे चित्त को अधिकाधिक स्थिरता प्राप्त होती है।

मेरे द्वारा जीवन में अभी तक सौ से ज़्यादा शक्तिपात हो चुका है। ऐसे साधक देखे गए हैं, जिन्होंने कभी स्वप्न में भी आसन-प्राणायामादि का कोई विषय नहीं जाना था, न ग्रन्थों में देखा था, न किसी से कोई क्रिया ही सीखी थी, पर उनमें शक्तिपात हुआ, तब वे इन सभी क्रियाओं को अन्तः स्फूर्ति से ऐसे करने लगे, जैसे उन्हें अनेक वर्षों का अभ्यास हो। यथावश्यक रूप से प्राणायाम भी होने लगता है, और दस-पन्द्रह दिन की अवधि के अन्दर दो-दो मिनट का 'कुम्भक' अनायास ही लगने लगता है। इस प्रकार होने वाली यौगिक क्रियाओं से साधक को कोई कष्ट नहीं होता, किसी अनिष्ट के भय का कोई कारण नहीं रहता, क्योंकि प्रबुद्ध शक्ति स्वयं ही ये सब क्रियाएं साधक से उसकी प्रवृत्ति के अनुरूप करा लिया करती हैं।

शक्तिपात से प्रबुद्ध होने वाली शक्ति के द्वारा साधक से जो क्रियाएं होती हैं, उनसे शरीर रोगरहित होता है। शक्ति का जागना जहां एक बार हुआ वहां फिर वह स्वयं ही साधक को परम पद की प्राप्ति कराने तक अपना काम करती रहती है, इस बीच साधक के जितने भी जन्म बीत जाएं, एक बार जागी हुई कुंडलिनी फिर कभी लुप्त नहीं होती।

मानसिक शान्ति, जीवन की उन्नति एवं पूर्णता चाहने वालों के लिए इस काल में शक्तिपात का सुगम साधन अन्य कोई नहीं है, इसलिए ऐसे शक्तिसम्पन्न गुरु जब सौभाग्य से किसी को प्राप्त हों, तब उसे चाहिए कि ऐसे गुरु का कृपा प्रसाद प्राप्त करे। इस प्रकार गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए साधक को जीवन की पूर्णता के लिए सदा प्रयत्नवान होना चाहिए।

प्रसादे सति देवेशो दुर्ज्ञेऽपि सुरर्षभा।
शक्यते मनुजैर्द्रष्टं प्रत्यंगात्म तया सदः॥

शक्तिपात से साक्षात्कार

जब मुझ पर शक्तिपात हुआ

'शक्तिपात' जीवन का सर्वश्रेष्ठ वरदान है, यह बिरले सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है, जिस शिष्य पर गुरु प्रसन्न होते हैं, उसके विचार, भावनाएं, सेवा, त्याग, सरलता, निष्कपटता और समर्पण से प्रभावित होकर ही गुरु अपनी अमोघशक्ति शिष्य को देने के लिए 'शक्तिपात' का उपयोग करते हैं।

शक्तिपात अपने-आप में सम्पूर्ण क्रिया है, जब गुरु शक्तिपात करने के लिए उद्यत होता है, तो वह अपने एक हाथ में शिव की शक्ति को तथा दूसरे हाथ में अपने गुरु की शक्ति को भरकर शिष्य के शरीर में प्रवाहित कर देता है। ऐसा करते समय गुरु के शरीर की समस्त नाड़ियां उद्वेलित-उत्तेजित हो जाती हैं, पूरा शरीर ताम्रवर्ण-सा हो जाता है, चेहरा उगते हुए सूर्य की तरह लाल सुर्ख़ होकर दमकने लग जाता है, दृष्टि भ्रू-मध्य में स्थिर हो जाती है और दोनों हाथ पूर्ण शक्ति के साथ शिष्य के सिर पर जम जाते हैं और गुरु के हाथों के माध्यम से शक्ति – अप्रतिम शक्ति, अलौकिक ज्योत्स्नित शक्ति, शिष्य के शरीर में गरम लावे की तरह प्रवाहित हो जाती है, जिससे शिष्य का सारा शरीर एकबारगी ही रोमांचित हो उठता है। आगे के पृष्ठों में दो महानुभावों के शक्तिपात के अनुभवों का वर्णन कर रहा हूं जो कि उन्होंने अनुभव किया था।

अखंड परमानन्द में लीन हो गया

उत्तराखंड हिमालय के सुविख्यात योगी, वेद-वेदान्ताचार्य, हिमालय योगी संघ के प्रवर्तक, 'प्रकाश्य' ग्रन्थ के महाभाष्यकार योगीराज मन्महेन्द्रनाथ भारतवर्ष के प्रसिद्ध योगी हैं। काफ़ी वर्ष पहले उन्होंने पूज्य श्रीमाली जी से दीक्षा प्राप्त कर शक्तिपात लिया था। उस समय उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ निम्न शब्दों में व्यक्त किया है –

मेरे जीवन का वह स्वर्णिम दिन था, जब पूज्यपाद स्वामी जी गुरुदेव श्री श्रीमाली जी

ने मुझे अपनाकर मेरी कातर प्रार्थना स्वीकार करते हुए शक्तिपात करने की सहमति प्रदान की। मैं श्रीमाली जी को तब से जानता था, जब वे साधु जीवन में निखिलानन्द जी के नाम से विख्यात थे। यह ईश्वर की अनुकम्पा है कि मुझे उनके चरणों में काफ़ी समय तक सेवा करने का अवसर मिला। मेरे जीवन की साध थी कि मुझ पर शक्तिपात पूज्यपाद गुरु जी के द्वारा ही हो। मैं जब भी संकोचवश धीरे से अपना मन्तव्य उनके सामने प्रकट करता, वे जानकर भी अनजान बने रहते। मैंने साहस बटोरकर एक-दो बार खुले शब्दों में भी याचना की, पर वे टाल गए। इसके बाद मैं अपना यही भवितव्य समझकर चुप रह गया, और गुरु-सेवा में ही अपने-आप को लीन कर दिया।

वह प्रभात मेरे जीवन का अवर्णनीय प्रभात था। उस दिन मैं सन्ध्या-वन्दनादि करके उठा ही था कि सामने गुरुदेव खड़े दिखाई दिए, सौम्य, सरल, शान्त, दिव्य, अद्भुत वर्चस्वयुक्त। मैं उठकर उनके चरणों में लिपट गया। तभी मुझे आवाज़ सुनाई दी, मन्महेन्द्र, आज शक्तिपात करूंगा, अभी, जा पुनः स्नान करके आ जा।

मैं हर्षातिरेक से विह्वल हो गया, बरसों की मेरी साध पूरी होने जा रही थी। स्वामी श्रीमाली जी के द्वारा मुझे शक्तिपात मिलेगा, मेरा शरीर रोमांचित हो रहा था और मेरे नेत्रों में हर्ष के आंसू छलछला आए थे।

मैंने नदी तट पर जाकर स्नान किया, शुद्ध काषाय वस्त्र धारण किए और गुरु चरणों में नतमस्तक बैठ गया। पूज्य गुरुदेव व्याघ्र-चर्म पर पद्मासन में बैठे थे। मैं उनके सामने ही बैठ गया। गुरु आज्ञा से मैंने ऊपर का वस्त्र हटा लिया और नीचे गेरुआ वस्त्र धोती की तरह पहन लिया।

संन्यासीवत होते हुए भी गुरुदेव ने मुझे यज्ञोपवीत पहनने को दिया, ललाट पर भस्म लगाने की आज्ञा दी और पद्मासन पर शान्त स्थिर निश्चल बैठ, गुरु-ध्यान करने को कहा। मेरे गुरु तो साक्षात मेरे सामने सशरीर खड़े थे, फिर ध्यान क्या करता? नेत्र बन्द करने पर भी उन्हीं की छवि तो सामने साकार थी।

मेरा पद्मासन बंधा हुआ था और आंखें अधखुली थीं, मैंने मन-ही-मन गुरुदेव का ध्यान कर अपनी इन्द्रियों को खींच, उन्हें गोलक में स्थापित किया तथा भूत, भविष्य और निकट-दूर की वस्तुओं में दौड़ने वाले चित्त को हृदय में स्थिर किया। पूर्वाभ्यासानुसार अपने प्राण और अपान को सम करके सुषुम्ना को संचालित किया। कुछ समय मेरे मन में विकल्प उठते रहे, परन्तु ज्यों ही गुरुदेव के हाथ का हल्का-सा स्पर्श मेरे सिर पर हुआ कि वे संकल्प-विकल्प धीरे-धीरे नष्ट हो गए। इन्द्रियों को इन्द्रियों के विषयों से पृथक करके बाहर के और अन्दर के भेद को दूर कर दिया।

मेरी आंखें आधी खुली थीं और मैं अपने सामने गुरु को खड़े देख रहा था, परन्तु

ऐसा लग रहा था कि मैं अपने आसन पर नहीं बैठा हूं अपितु हवा में स्थिर बैठा हूं। उन्होंने सर्वप्रथम 'भूतिशुद्धि' करके अपने दोनों हाथ आकाश की तरफ़ उठा लिए। मैंने देखा कि उनके हाथ विद्युत की तरह प्रकाशित हो रहे हैं, और उनके दोनों हाथों में आकाश तथा दशों दिशाओं से विद्युत एकत्र हो रही है। विद्युत की यह सनसनाहट तथा प्रकाश, मैं अपनी आंखों से देख रहा था। कुछ ही क्षणों तक यह स्थिति रही, गुरुदेव का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया, ऐसा लग रहा था मानो वे सारी शक्ति को और विद्युत प्रवाह को अपने चेहरे और हाथों में पुंजीभूत कर रहे हैं। दूसरे ही क्षण उन्होंने वे दोनों हाथ मेरे सिर पर रख दिए।

हाथ स्पर्श होते ही ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर किसी विद्युत तार से टकरा गया हो और दूसरे ही क्षण सारा शरीर झनझना उठा। एक क्षण में मन के 'संकल्प-विकल्प' समाप्त हो गए और हृदय के अन्दर ऐसा अनुभव हुआ जैसे धीरे-धीरे सूर्य का उदय हो रहा हो। मन में स्थित सारा अन्धकार एकबारगी समाप्त हो गया, और कुछ क्षणों बाद हृदय के अन्दर एक अत्यन्त रमणीय तेजपुंज प्रकट हुआ, यद्यपि यह तेजपुंज अपार था, तथापि उसके अनन्त स्वरूप में पूर्णता थी। मेरा मन इस तेजपुंज के साथ निर्विषय होकर लय को प्राप्त हो गया।

एक क्षण के लिए इस लय के कारण बृहद आकाश उपस्थित हुआ, जिसमें पूरे ब्रह्मांड को मैं स्पष्ट रूप से देख रहा था। मैं बिल्कुल सही-सही रूप में आकाश, पृथ्वी, सूर्यलोक, चन्द्रलोक आदि घूमते हुए देख रहा था। यह बोध करते ही कुछ जड़ समाधि का-सा अनुभव हुआ, परन्तु मेरा मन इस जड़ता और स्थिरता दोनों ही अवस्थाओं को पार करके एक ही क्षण में उस स्थिति से मुक्त हो गया।

वस्तुतः यह रसमयता ही सर्वकल्प समाधि है, इसमें मेरा ध्यान त्रिपुटी में स्थिर हो गया और मन में अपार शान्ति का सागर लहराने लगा, एक ऐसा सागर जिसमें न चैत्य है और न वैत्य, केवल चित् ही चित् है, तरंग-फेन आदि से रहित अनन्त-शान्त महासागर जिसमें बाहर-भीतर, स्थूल-सूक्ष्म, आदि-अनादि का भेद नहीं किया जा सकता, वैसी ही वह स्थिति थी। यह स्थिति कितने समय तक रही, मैं नहीं कह सकता। परन्तु ऐसा लग रहा था कि मैंने एक अनन्त लय में अपने-आप को लीन कर दिया है और मेरा स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं रहा है।

जब मेरी समाधि खुली तब मैंने अनुभव किया कि मैं उसी आसन पर स्थिर हूं, मेरे गुरुदेव बैठे हुए मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। मेरे मन का सारा भ्रम, सारा सन्देह, सारी समस्याएं, सारा दुख, एकबारगी ही समाप्त हो गया, और उस अस्तित्व में अपने-आप को लीन करने में समर्थ हो गया था जो कि जीवन का परम सुख और परमानन्द है।

भावातिरेक से मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े, वास्तव में यह अनुभव मेरे जीवन

का सर्वोच्च अनुभव था। मैं उठकर प्रणिपात रूप में गुरुचरणों में लेट गया। मेरे सिर पर और मेरी पीठ पर उनका शीतल हाथ घूम रहा था और मैं अपने आंसुओं से उनके चरणों को धो रहा था।

उसके बाद तो मेरी समाधि तुरन्त लग जाती और घंटों मैं उस परमानन्द में लीन रहता। वस्तुतः मेरे जीवन का वह सौभाग्यशाली दिन था, जब मैं इस देह में उस ब्रह्मज्योति में अपने-आप को शक्तिपात के द्वारा लीन कर सका था।

पूरा ब्रह्मांड मेरे चित्त में समा गया

श्रीमती शकुन्तला अडियार दक्षिण भारत की सुप्रसिद्ध गायिका और सामाजिक कार्यकर्त्री हैं, पूरे दक्षिण भारत में उनके गायन की ख्याति है। साथ ही साथ सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है, वह अपने-आप में आश्चर्यजनक है। लगभग चालीस से ज़्यादा सामाजिक संगठनों की अध्यक्ष या मन्त्री हैं तथा उनके जीवन का प्रत्येक क्षण समाज-सेवा तथा देश-सेवा के लिए समर्पित है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध विदुषी श्रीमती अडियार ने श्रीमाली जी से दीक्षा ली थी और उन्होंने शक्तिपात प्राप्त किया था। इसमें कोई दो राय नहीं कि मैंने अपने जीवन को समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया था और मैं यह समझती थी कि जीवन में जितनी भी राजनीतिक और सामाजिक सेवा हो उतना ही ज़्यादा अच्छा है। यद्यपि मैंने गृहस्थ जीवन जिया है और मैं उससे पूर्णतः सन्तुष्ट हूं, परन्तु जीवन में शान्ति नहीं थी। मेरा मन हमेशा भटकता रहता था, और जब एकान्त में बैठती, तो सैकड़ों तरह के विचार मेरे दिमाग़ में आते और पूरे मानस को व्यथित कर देते। मैं समझती थी कि यदि मेरे मन को शान्ति नहीं मिली, तो यह सब-कुछ व्यर्थ है। क्या यह सब-कुछ व्यर्थ है? क्या यह सारा जीवन इसी प्रकार से बीत जाएगा? हो सकता है इससे और मेरे कार्यों से लोगों को लाभ होता हो, परन्तु मैंने अपने स्वयं के लिए, अपनी आत्मा के लिए क्या किया?

कई बार मैं अपने मन को समझाती कि इस संसार के व्यापारों से तेरा क्या प्रयोजन है? जिनको तू आकर्षण समझकर उसकी तरफ़ दौड़ रही है, वे तो दुःख के ख़ज़ाने हैं, उनमें शान्ति नहीं है।

इसी प्रकार कई बार मैं अपने मन को समझाती कि तू चाहे पाताल में जा, ब्रह्म लोक में जा, परन्तु जब तक तू अपने मूल को नहीं ढूंढ़ निकालेगी, तब तक तुझे रंचमात्र भी शान्ति प्राप्त नहीं होगी। यह तेरी इच्छाएं और आशाएं तो दुःख की जननी हैं, यह प्रिय और यह अप्रिय है, यह तो केवल तेरी कल्पना है, इसको पाने के लिए और हटाने के लिए जो तू प्रयत्न कर रही है, अन्धी होकर जिस प्रकार से तू भटक रही है, वह सब व्यर्थ है, और इससे कुछ भी प्राप्त नहीं होने वाला।

यह पुत्र मेरा है, यह मुझे सुख देगा, वह पति मेरे जीवन में सहायक होगा, यह तो केवल वासना है और वासना ही तो मेरे बन्धन का हेतु है। तुझमें सामर्थ्य आनी चाहिए कि तू इन वासनाओं के आवरण को छिन्न-भिन्न कर दे। यदि ऐसा नहीं करेगी तो जन्म और मृत्यु के चक्र में अज्ञात काल तक चूर-चूर होती रहेगी। यह तो निश्चित है कि तेरा नाश अवश्यम्भावी है, फिर तू उस परमानन्द को प्राप्त करने में विलम्ब क्यों कर रही है? तुझमें अहंकार है कि तू बहुत काम कर रही है। पर यह सब व्यर्थ है, जब जीवन का अन्तिम क्षण आएगा और यह आत्मा तुझसे पूछेगी कि तूने उस परमसत्ता को प्राप्त करने के लिए क्या किया, तो तेरे पास कोई उत्तर नहीं होगा, और उस समय हाथ मलने के अलावा तेरे पास कुछ भी नहीं रह जाएगा। इस प्रकार के विचार बराबर मेरे मानस में घुमड़ते रहते। मैं चाहती थी कि मुझे योग्य गुरु मिले जिनके चरणों में बैठ सकूं, अपने मन की व्यथा उनको कह सकूं और उनसे रास्ता ज्ञात कर सकूं, जिससे इस जीवन में ही उस परमज्योति में लीन होने में समर्थ हो सकूं, जो कि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

इसी प्रकार के उधेड़बुन के दिनों में एक बार श्रीमाली जी से भेंट हुई। मुझे पहली भेंट में ऐसा लगा कि यह सामान्य मानव हैं, यह मेरी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकेंगे। परन्तु दूसरी और तीसरी भेंट में मैंने अनुभव किया कि उनके पास बैठने से एक शान्ति, एक आनन्द का अनुभव होता है। हो सकता है, यहां पर मेरी समस्याओं का समाधान हो।

धीरे-धीरे मुझे उनके ज्ञान से, प्राणायाम की क्रियाओं से लाभ और शान्ति मिलने लगी, और कुछ वर्षों बाद वह समय आया कि उन्होंने स्वयं ही मेरे अनुरोध पर कहा, कि अब तुम उस स्थिति में हो कि शक्तिपात के द्वारा तुम्हारे चित्त को परमानन्द में लीन किया जा सके। वास्तव में वह दिन मेरे लिए अत्यन्त सौभाग्यशाली दिन था, जब मुझ पर शक्तिपात होने वाला था, इससे पूर्व मैं गुरु जी से दीक्षा ले चुकी थी और दीक्षा पूर्व उन्होंने कितनी बार ऐसी कठोर परीक्षाएं ली थीं, मैं ही जानती हूं। परन्तु मैं तो अपने मन में दृढ़ निश्चय कर चुकी थी कि हर स्थिति में मुझे अपने-आप पर नियन्त्रण रखना है और हर परीक्षा में, हर कसौटी में खरा उतरना ही है। शक्तिपात के दिन मैं सुबह से ही भूखी थी, क्योंकि उस दिन मुझे ऐसा ही आदेश मिला था। प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु पूजा, इष्ट पूजा समाप्त की तथा प्रातः लगभग दस बजे गुरुदेव के सामने आसन पर बैठ गई। पद्मासन बंधा हुआ था, मेरी आंखें अधखुली थीं। उन्होंने मुझे दो मिनट का कुम्भक करने के लिए कहा। मैंने उसे पूरा किया और ओंकार का उच्चारण प्रारम्भ किया।

मेरे सामने गुरुदेव खड़े थे, परन्तु मुझे उस क्षण ऐसा लग रहा था जैसे कोई विद्युत-स्फुलिंग मेरे सामने खड़ा हो। उनका सारा शरीर तमतमा रहा था, चाह कर भी

मेरी दृष्टि उनके चेहरे पर जम नहीं रही थी। उनके दोनों हाथ आकाश की तरफ़ उठे थे और मैं उनसे लगभग एक फ़ुट की दूरी पर बैठी थी, परन्तु धीरे-धीरे मैं विद्युत प्रवाह अनुभव कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि उनकी तरफ़ से विद्युत प्रवाह बहता हुआ मेरे पूरे शरीर को, मेरे पूरे रोम-रोम को जाग्रत कर रहा है, चैतन्य कर रहा है, देखते-देखते मेरा पूरा शरीर तापित होने लगा, और दूसरे ही क्षण उनके दोनों हाथ मेरे सिर पर स्थिर हो गए। मैं मुंह से ओंकार की ध्वनि दीर्घ घंटानाद के समान तेज़ स्वर से उच्चारण करते-करते मूर्च्छा का स्पर्श करने लगी और मेरी सुप्त चेतना जाग्रत होकर आकाश के समान निर्मल रूप से विस्तृत हो गई।

बाहर-भीतर, नीचे-ऊपर, कहीं पर भी कुछ भी क्षुद्रता दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी, पाप-पुण्यमय शरीर को भस्म करने वाली अग्नि शान्त हो गई और पूरे शरीर में तथा आंखों के सामने श्वेतवर्ण-सा साकार हो गया। ऐसा लग रहा था कि मेरे शरीर की सारी हड्डियां कर्पूर-चूर्ण की शैया पर शयन कर रही हैं और प्रणव की तीसरी मात्रा के साथ ही स्वतः पूरक प्राणायाम हुआ, और उसी क्षण ऐसा अनुभव हुआ मानो मेरे प्राण चेतनता की अमृतधार में डूब गए हों। इससे अत्यन्त शीतलता का अनुभव हुआ और मेरी प्राण वायु ने चन्द्र मंडल का स्वरूप धारण कर लिया। यह अमृत के समान था और दूसरे ही क्षण मेरी समाधि लग गई। समाधि में भी ऐसा लग रहा था कि मेरी भृकुटि से अमृत की धाराएं प्रवाहित हो रही हैं और वह पूरे शरीर को भिगो रही हैं। मेरे सामने कुछ ही क्षणों बाद वह अमृत-धारा एक सुन्दर चन्द्रमा के समान चतुर्बाहु के रूप में प्रकट हो गई, सुन्दर शरीर, खिले हुए कमल-सी आंखें – मानो साक्षात नारायण ही मूर्तिमान हो गए हों। मधु धारा से आप्लावित प्राणों में उनके शरीर ने प्रवेश किया और चक्रों में विस्तृत कुंडलिनी को परिपूर्ण कर दिया।

मैं एक अनिर्वचनीय आनन्द में लीन हो गई। मैं आज प्रयत्न करके भी उस आनन्द को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त नहीं कर पा रही हूं। वस्तुतः वह आनन्द मेरे जीवन का सर्वोच्च आनन्द था, उसके बाद मेरी समाधि लगभग छः घंटे बाद खुली। सूर्य मध्याह्न से आगे बढ़ चुका था।

इसके बाद तो कई बार मेरी समाधि लगी और आज भी मेरी समाधि कई-कई घंटों तक लगती रहती है।

यह अनुभूति अपने-आप में अवर्णनीय है और मेरा सौभाग्य है कि मैं इस जीवन में ही उस परमसत्ता के दर्शन कर सकी हूं और कई बार उस परमसत्ता की ज्योति में अपने-आप को लय करने में समर्थ हो चुकी हूं।

इस द्वन्द्वात्मक, संघर्षमय संसार में भी मैं जितनी शान्ति और आनन्द अनुभव कर रही हूं, वह सब गुरुदेव की कृपा का ही फल है।

गुरुर्विना गतिर्नास्ति

मां-बाप तो केवल जन्म देते हैं, पर मनुष्य संस्कारयुक्त गुरु के माध्यम से ही होता है। हम अपने जीवन में भटक रहे हैं या सही मार्ग पर चल रहे हैं, इसका निर्णय गुरु ही कर सकता है। हमारे जीवन में तन्तु किस उद्देश्य से प्रेरित हैं, हमारे जीवन का मन्तव्य क्या है? इन सब प्रश्नों के समाधान गुरु द्वारा ही सम्भव हैं, इसीलिए तो कहा गया है कि ''गुरुर्विना गतिर्नास्ति''।

गुरु के लिए घर-घर, गांव-गांव, जंगल-जंगल भटकने की ज़रूरत नहीं है। यह तो भाग्य का प्रभाव है, जब हमारे जीवन के पाप क्षय हो जाते हैं, और पुण्य का उदय होने लगता है, तब अकस्मात अलौकिक रूप से गुरु के दर्शन हो जाते हैं, और हम अचकचाकर रह जाते हैं, अरे ये तो यहीं थे, पहले पता क्यों नहीं लगा?

इस लेख में कुछ ऐसे ही प्रसंगों का वर्णन है, जब भटकते हुए साधकों को अचानक गुरुदर्शन हुए और उनकी पूरी जीवन-धारा ही बदल गई, जीवन का अर्थ ही बदल गया।

एक विद्युत-चमक ने मेरे पैर बांध दिए

'योगी-कथामृत' ग्रन्थ के रचयिता परमहंस योगानन्द स्वामी युक्तिनाथ जी के शिष्य थे। बचपन से ही इन्हें जीवन को समझने की प्यास थी – ललक थी, पर कोई पथ-प्रदर्शक मिले तब न। यहां उनकी कथा है –

और एक दिन अचानक बनारस की गलियों में भटकते समय गुरुदेव के पावन दर्शन हो गए, जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई और एक क्षण में ही ऐसा लगा, जैसे इन गुरुदेव का साथ तो वर्षों से है, जन्म-जन्मान्तर से है। एक दिन प्रातःकाल एक सात्त्विक रोष की हार्दिक यन्त्रणा के साथ मैंने अपने कमरे में प्रवेश किया, जब तक सुनिश्चित उत्तर न मिले तब तक ध्यान में बैठे रहने का निश्चय किया।

करुणामयी जगज्जननी, या तो तुम स्वयं ही मुझे अमानुषी आकृति द्वारा ज्ञान दो अथवा अपने भेजे गुरु द्वारा।

घंटे पर घंटे बीतते गए, पर मेरे क्रन्दनपूर्ण अनुनय का कोई उत्तर नहीं मिला। हठात ऐसा लगा मानो मैं सशरीर असीम शून्य में पहुंच गया हूं, मानो महाशून्य में न जाने कहां से एक मधुर और दिव्य नारी-स्वर गूंज उठा – ''तुम्हारे गुरु आज ही आ रहे हैं...''

इतने में एक निश्चित स्थान से एक चीत्कार ने उस अनुभूति को एकदम छिन्न-विछिन्न करके रख दिया। नीचे रसोईघर में से हाबू नामक एक युवक पुजारी मुझे पुकार रहा था, ''मुकुन्द, अब बहुत ध्यान लगा चुके, तुम्हें इसी समय एक काम पर जाना है।''

यदि कोई दूसरा दिन होता, तो शायद मैं धीरज खोकर कोई कड़ा उत्तर दे देता, परन्तु आज मैंने आंसुओं के कारण सूजे हुए मुंह को साफ़ किया और निरीह भाव से आज्ञा का पालन किया। हाबू और मैं दोनों साथ-साथ बनारस के बंगाली टोले में कुछ दूर स्थित एक बाज़ार की ओर चल पड़े। हम लोग बाज़ार में घूम-घूम कर सामान ख़रीदने लगे। यद्यपि सूर्य तप रहा था, तथापि अभी तक मध्याह्न का समय नहीं हुआ था। हम दोनों गृहिणियों के समूहों, पंडों-पुरोहितों, सफ़ेद वस्त्रों वाली विधवाओं, गम्भीर स्वभाव के ब्राह्मणों और सर्वविचरणशील सांड़ों के बीच में से रास्ता बनाकर आगे बढ़ने लगे। जब हाबू और मैं दोनों चले जा रहे थे, तो मैंने अपनी गर्दन घुमाकर एक अनजानी संकरी गली की ओर देखा।

गली के छोर पर एक गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी महापुरुष निश्चल खड़े थे। दृष्टिपात करते ही ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उनके साथ मेरा युग-युगान्तर का परिचय हो। एक क्षण के लिए मेरी क्षुधित दृष्टि उन पर अटक गई, पर तत्काल ही मन में एक शंका जाग उठी, ''इस परिव्राजक संन्यासी का चेहरा शायद किसी परिचित से मिलता-जुलता है, इस कारण तुम्हें धोखा हो रहा है।'' मैंने सोचा, 'स्वप्नदर्शी चलते चलो।'

दस मिनट पश्चात मेरे पैर सुन्न हो गए। ऐसा लगने लगा, मानो वे पत्थर हो गए हों, और उनकी चलने की शक्ति खो गई हो। अति कठिनता के साथ मैं पीछे की ओर घूमकर खड़ा हो गया। तत्क्षण ही मेरे पैरों की स्वाभाविक अवस्था लौट आई। विपरीत दिशा में मुड़ने पर उनमें फिर पहले जैसा भारीपन आ गया।

''साधु महाराज मुझे चुम्बकीय दृष्टि से अपनी ओर खींच रहे हैं,'' इस विचार

से मैंने अपने पार्सल हाबू को दे दिए। हाबू विस्मित होकर मेरा इधर-उधर पैर पटकना देख रहा था और अब खिलखिलाकर हंस पड़ा। "तुम्हें क्या कष्ट है? क्या तुम पागल हो गए हो?"

मेरे मन की बेचैनी ने मुझे उत्तर देने से रोक लिया, मैं चुपचाप तेज़ी से चला गया। अब तो जैसे मेरे पैरों में पर लग गए हों। पवन गति से मैं उस संकरी गली में जा पहुंचा, सरसरी दृष्टि से मुझे ज्ञात हुआ कि वह शान्त मूर्ति मेरी ओर स्थिर दृष्टि से निरन्तर देख रही थी, कुछ ही उत्सुक क़दम चलकर मैं उनके चरणों पर गिर पड़ा।

"गुरुदेव!" यह दिव्य चेहरा ठीक वही था, जिसे मैंने हज़ारों बार स्वप्नों में देखा था। शान्त, स्निग्ध, तेजस्वी नेत्र, सिंह के सदृश सिर, नुकीली दाढ़ी और लहराते केश – यह आकृति तो प्रातः ही मेरे निशा-स्वप्नों को भेदकर झांका करती, और कुछ इंगित किया करती थी, जिसे मैं पूर्णतः समझ नहीं पाया था।

"और मेरे प्रिय, तुम मेरे पास आ गए," आनन्दकम्पित स्वर में बंगला भाषा में मेरे गुरुदेव बार-बार बोल रहे थे, "मैं कितने वर्षों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

इस समय पूर्ण निस्तब्धता के बीच हम दोनों एकाकार हो उठे। शब्दों का कोई प्रयोजन नहीं रह गया था। अभ्रान्त अन्तर्दृष्टि से मुझे यह आभास हो गया कि मेरे गुरु ने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया है, और वे मुझे भी ईश्वर के सान्निध्य में पहुंचा देंगे। इस जीवन का अन्धकार पूर्ण जीवन की स्मृतियों के मधुर अरुणोदय में अदृश्य हो गया। काल नाटक-तुल्य अतीत, वर्तमान और भविष्य उसके परिवर्तनमान दृश्य हैं, उन पवित्र चरणों में यह मेरा कोई प्रथम बार का प्रणाम नहीं था।

एक विद्युत-स्फुलिंग मेरी आंखों में कौंध गया

योगीराज खेड़ा बाबा उच्चकोटि के साधक हैं और कई वर्षों से गंगोत्री पर तपस्यारत हैं। सौ से अधिक उम्र हो जाने पर भी उनका शरीर यौवन ऊष्मा से पूर्ण है। खेड़ा बाबा के गुरु स्वामी हंसानन्द परमहंस हैं, साधना की उच्चतम भावभूमि पर प्रतिष्ठित हैं। खेड़ा बाबा को अपने गुरु का प्रथम साक्षात्कार किस प्रकार हुआ, यह उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है –

मेरा जीवन एक प्रकार से भटक गया था, क्योंकि मैं निरन्तर इस संसार में भटकता रहता था। मेरे जीवन का कोई उद्देश्य निश्चित नहीं था। यह तो मेरे मन में स्पष्ट रूप से था कि मुझे गृहस्थी के जंजाल में नहीं बंधना है, मुझे अपने जीवन को ऊंचा उठाना

है और उस परमसत्ता में अपने-आप को लीन कर देना है, जो कि प्रत्येक मानव की उच्चतम इच्छा होती है।

परन्तु यह इच्छा पूरी कैसे हो? मैं जितना ही ज़्यादा इस प्रश्न पर मनन करता, उतनी ही ज़्यादा उलझन बढ़ती रहती, क्योंकि किसी दिव्य आत्मा से मेरा सम्पर्क नहीं था, जो कि मुझे रास्ता दिखाती। मैं किसी ऐसे साधु या योगी की खोज में था, जो मेरा गन्तव्य मुझे समझा सके।

इसी बीच मैं कई साधुओं के सम्पर्क में आया, परन्तु मुझे वे सब ज्ञान की दृष्टि से छिछले लगे। उनमें गम्भीरता नहीं थी, ऐसा कुछ नहीं था जो मुझे प्रभावित कर पाता।

इसी ऊहापोह में मैं उत्तरकाशी की तरफ़ बढ़ गया और गांव के बाहर जाड़ेश्वर महादेव के मन्दिर में जाकर लेट गया। दोपहर को मैं वहां जाकर लेटा था, शाम हो गई। धीरे-धीरे रात घिर गई, परन्तु मेरे हृदय को चैन नहीं था। यद्यपि मानसिक सन्ताप काफ़ी समय से था, पर इस रात तो बहुत अधिक बढ़ गया था और इस चिन्तन में, ऊहापोह में, पूरी रात बीत गई। भोर का प्रकाश चारों ओर फैल गया।

मैं उठा, और बोझिल मन से भागीरथी के किनारे की ओर बढ़ गया। मैं भागीरथी के तट पर बालुका पर कुछ समय तक पड़ा रहा, फिर उठकर उसकी धारा में खड़ा हो गया, यह निश्चय कर लिया कि या तो आज कुछ होकर रहेगा, या मैं अपने-आप को भागीरथी में समर्पित कर दूंगा।

लगभग एक घंटे तक जल में स्नान करता रहा, अपने सिर पर पानी डालता रहा, परन्तु फिर भी मेरा सिर गर्म लावे की तरह दहक रहा था। किसी भी प्रकार से मन को शान्ति नहीं मिल पा रही थी। धीरे-धीरे मैं भागीरथी के जल से बाहर निकल आया।

अचानक मुझे अपने पीछे पैरों की पदचाप सुनाई दी। मैंने पीछे घूमकर देखा, तो एक तेजस्वी संन्यासी खड़ा दिखाई दिया। उसके वस्त्र गरिमापूर्ण थे, चेहरे पर एक दिव्य प्रकाश था और एक ही क्षण में मुझे ऐसा लगा जैसे कोई विद्युत-स्फुलिंग मेरी आंखों में कौंध गया हो।

मेरे पैर वहीं जड़ हो गए, मुझे इस बात का भी भान नहीं रहा कि मेरे शरीर से पानी चू रहा है, मेरे वस्त्र भीगे हुए हैं और मैं लगभग नंगा-सा हूं। उस क्षण न तो मुझे अपने-आप का ध्यान रहा और न आसपास के वातावरण का ही भान रहा।

तभी एक मधुर-सी आवाज़ सुनाई दी, "शिष्य! मैं तुझे कितने ही वर्षों से ढूंढ़ रहा हूं, और तू यहां खड़ा है।"

यह आवाज़ मेरे पूरे मानस में फैल गई और दूसरे ही क्षण मेरा पूरा शरीर दंडवत उनके चरणों में पड़ गया। वे ज्यों के त्यों खड़े रहे और मैं उनके चरणों को मज़बूती से पकड़े हुए लेटा रहा।

"उठो, और अपने-आप को संभालो," आवाज़ मेरे कानों तक पहुंची तो मुझे भान हुआ कि मैं किसी के चरणों में लेटा हुआ हूं। मैं उठा और उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

मैं चाह कर भी उनके चेहरे से अपनी आंखें हटा नहीं पा रहा था। मैं उन्हें देखता ही रहा, और जितना ही ज़्यादा देखता उतनी ही ज़्यादा मेरी प्यास बढ़ती जाती।

"चलो, कपड़े बदल लो," यन्त्रवत मैंने अपने कपड़े बदले और अपने शरीर को पोंछा, तब तक गुरुदेव पत्थर की एक चट्टान पर अवस्थित हो गए थे।

मैं उनके सामने बैठ गया, उन्होंने कहा, "तुम्हें अपने घर चले जाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे मां-बाप तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

मैंने विनम्र भाव से उत्तर दिया कि मैं अपना घर हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ आया हूं। ये मां-बाप तो इस बार हैं, इससे पहले भी कई जन्मों में मां-बाप आदि रहे होंगे। मैं क्या करूं? मैं अब घर नहीं जाना चाहता।

गुरुदेव मुस्कुरा दिए और मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, "तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है, तुम्हारा जीवन एक विशेष उद्देश्य के लिए है और तुम्हें उसी उद्देश्य की पूर्ति में अपने जीवन को लगा देना है।"

उस क्षण ने मेरे जीवन की धारा ही बदल दी।

जैसे कि मेरे चारों ओर अमृत वर्षा हो रही हो

योगी प्रवर स्वामी आनन्द, श्रीमाली जी के शिष्यों में से हैं, उन पर शक्तिपात हुआ है, और वे योग तथा साधना की उच्च भावभूमि पर हैं।

गुरुदेव से प्रथम साक्षात्कार का विवरण इन्होंने बड़े ही मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया है।

मैं लौकिक अर्थ से पूर्णतः सुखी था, क्योंकि मेरी भरी-पूरी गृहस्थी थी, पास में पर्याप्त द्रव्य था और सुन्दर-मनोहर शरीर था। परन्तु इतना सब-कुछ होने पर भी मेरे को शान्ति नहीं थी, हर क्षण मेरा मन बार-बार एक ही प्रश्न पूछता कि "क्या तुम्हारे जीवन का उद्देश्य यहीं तक सिमटकर रह गया है? क्या तुम्हें इस छोटे से घेरे में ही चक्कर लगाते रहना है? क्या सुबह उठना और शाम को सो जाना ही तुम्हारे जीवन का मर्म है? और यदि यही सब-कुछ है तो फिर मन में यह चिन्ता, यह बेचैनी क्यों है?"

मैं जितना ही सोचता, उतना ही ज़्यादा परेशान होता। दिन-भर मैं परिश्रम करता परन्तु रात को मुझे नींद नहीं आती। सारी रात इसी उधेड़बुन में बीत जाती कि मैं क्या करूं? कहां जाऊं? किसको जाकर अपनी व्यथा कहूं? किस प्रकार से मुझे रास्ता मिल सकेगा? और सोचते-सोचते पूरी रात बीत जाती। जब मैं न्यायालय में जाता तब भी मुझे चैन नहीं मिलता। मैं यद्यपि वादी और प्रतिवादी दोनों के बयानों को सुनता, परन्तु कई बार मैं कुछ और ही ख़्यालों में चला जाता और वकील लोग जो बहस करते, उसका एक भी अक्षर मेरे कानों में नहीं पड़ता। मैं सोचता, यह तो ग़लत है, अपनी नौकरी के प्रति विश्वासघात है। मुझे यदि नौकरी करनी है, तो दिल लगाकर करनी है। इस प्रकार मन भटकता रहा तो सम्भवतः मेरे द्वारा कोई ग़लत निर्णय भी हो सकता है।

न मुझे दिन को चैन मिलता और न रात को, भली प्रकार से नींद भी नहीं आती। मैं खाना-पीना, हंसना-खेलना व्यर्थ समझता, मुझे इन कार्यों में कोई रुचि नहीं रही थी। मेरे जीवन का तो एक ही उद्देश्य था कि मैं अपने 'मानव' होने को सार्थक करूं। प्रभु ने मुझे मानव जीवन दिया है, इस जीवन का पूरा-पूरा उपयोग करूं और अपने-आप को सामान्य मानव से ऊंचा उठा सकूं। परन्तु मेरे सामने कुछ भी स्पष्ट नहीं था, मैं कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रहा था। कौन मुझे सलाह देगा? किससे मैं अपनी बात कहूं? एक दिन मैं एक बुक स्टाल पर खड़ा था कि मुझे एक पुस्तक ने आकर्षित किया और मैं उसे ख़रीदकर घर ले आया। रात को मैंने उस पुस्तक को पढ़ा और पहली बार मुझे गहरी नींद आई। ऐसा लगा कि शायद मेरी मंज़िल पास में ही है, मैं जो कुछ चाह रहा हूं वह शीघ्र ही पूरा हो सकता है। परन्तु इसके बाद भी काफ़ी समय बीत गया और मैं कोई निर्णय नहीं कर पाया।

एक दिन मैं अपने पूजा स्थान में भगवान शंकर के सामने बैठ गया और निश्चय कर लिया कि या तो भगवान शंकर मुझे रास्ता दिखाएं या फिर मुझे समाप्त कर दें। इस प्रकार का जीवन मैं अब नहीं जी सकता था। मेरी पत्नी मेरी व्यथा को समझ रही थी, पर वह भी निरुपाय थी, क्योंकि वह सेवा कर सकती थी, परन्तु इस मार्ग पर वह कुछ भी सहयोग नहीं दे पा रही थी। यह छटपटाहट केवल मेरे हृदय में नहीं थी, अपितु मेरी पत्नी के मन में भी ऐसी ही छटपटाहट और बेचैनी थी।

जिस दिन मैं भगवान शंकर के सामने दृढ़ निश्चय करके बैठा था, तभी मुझे सुनाई दिया कि तुम्हें शीघ्र ही गुरु प्राप्त होने वाले हैं, मुझे उसी क्षण वहीं बैठे-बैठे स्वतः ही वह पुस्तक स्मरण हो आई जो कि मैंने कुछ समय पहले पढ़ी थी। मैंने अपनी बात पत्नी को कही और हम दोनों यात्रा की तैयारी करने लग गए। मैंने एक महीने की छुट्टी ले ली, और अपनी पत्नी के साथ मैं जोधपुर की तरफ़ बढ़ गया।

मेरे मन का अन्तर्द्वन्द्व मिटा नहीं था, मैं कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रहा था कि मैं इस अज्ञात स्थान की यात्रा पर क्यों आ गया हूं। केवल पुस्तक पढ़ने से और मन के संकेत से ही मैं इधर बढ़ आया था।

मैं लगभग शाम को 5 बजे श्रीमाली जी के मकान पर पहुंचा। वे उस समय लान में बैठे हुए थे। लम्बा शरीर, सुगठित देहयष्टि, उन्नत ललाट, देदीप्यमान मुखमंडल और सांचे में ढला हुआ शरीर – कुछ ऐसा लग रहा था कि जिसे मैं इतने वर्षों से खोज रहा था, यह व्यक्ति वही था। ज्यों ही मैं फाटक पारकर दो क़दम बढ़ा कि उन्हें देखकर पांव जड़वत हो गए, प्रयत्न करने पर भी मेरे पांव आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। पहले तो मैंने एक झलक ही देखी थी, पर अब मैं पूरी तरह से उन्हें देख रहा था। प्रयत्न करने पर भी मेरी आंखें उनके चेहरे से हट नहीं रही थीं।

"आगे आ जाओ," शब्द कानों में पड़ते ही मेरी तन्द्रा टूट गई और मुझे वातावरण का बोध हुआ। मैंने देखा कि मेरी पत्नी की गति भी ठीक वैसी ही हो गई थी जैसी कि मेरी थी।

मैं आगे बढ़ा और कुछ क्षणों के लिए उनके सामने खड़ा हो गया। उनकी दृष्टि बराबर मेरे चेहरे पर थी, वे खड़े थे, और उस क्षण उनकी दृष्टि से कुछ ऐसा हो रहा था कि जैसे मेरे चारों ओर अमृत वर्षा हो रही हो। कुछ ही क्षणों के बाद मेरे हाथ स्वतः ही उनके चरणों की ओर झुक गए और मेरा चेहरा उनके पांवों को छूने लगा। आनन्द के अतिरेक से मेरी आंखों से आंसू बह-बह कर उनके चरणों को भिगोते रहे और मैं स्वतः पुलकित आह्लादित होता रहा। पता नहीं कितना समय बीत गया, मुझे तो कुछ ऐसा लगा कि जैसे समय थम गया हो। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा, और कन्धे से पकड़कर मुझे खड़ा किया।

मेरे मुंह से अनायास शब्द निकल पड़े, "मैं वर्षों से आपको पाने के लिए भटक रहा था। मेरा एक-एक क्षण बोझिल होता जा रहा था, आपने तो बहुत विलम्ब कर दिया, यदि मुझे ज्ञात होता तो मैं कभी का भागकर आपके चरणों में आ गया होता।" पता नहीं इसके बाद भी क्या-क्या शब्द मेरे मुंह से निकलते रहे और वे शान्त, गम्भीर

समुद्र की तरह बैठे-बैठे सब-कुछ सुनते रहे। उनके चेहरे पर एक अनिर्वचनीय मुस्कुराहट थी।

इसके बाद भी मैं और मेरी पत्नी काफ़ी समय तक उन्हें निहारते रहे, अमृत-सुधा पीते रहे और अपने जीवन को, मन और प्राणों को उस अमृत में भिगोते रहे। उन्होंने कहा, "मैं तो काफ़ी समय से तुम लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था। तुम कहां भटक गए थे? चलो कोई बात नहीं, विलम्ब से ही सही पर अपने स्थान पर पहुंच तो गए।"

मैंने घर आकर नौकरी से त्याग-पत्र दिया, क्योंकि जिन चरणों का आश्रय मुझे मिल गया था, उसके बाद यह नौकरी एक तुच्छ वस्तु थी। वास्तव में ही वह घड़ी, वह क्षण, मेरे लिए अमूल्य था। जब मैं उनके दर्शन कर सका था और मेरा जीवन उनके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो सका था।

जब मैं पूरे ब्रह्मांड का एक अंश बन गई

साधिका मां भारती भारत प्रसिद्ध साधिका हैं और वे ज्ञान की एक महान पूंजीभूत रूप हैं। अपने गुरु स्वामी हरीदास जी से मिलने का उनका वर्णन अपने-आप में अन्यतम है –

बचपन से ही मां काली, मेरी इष्ट रही हैं, और जब भी मैं व्यथित होती, तो मां काली के सामने जाकर बैठ जाती, परन्तु प्रयत्न करने पर भी न तो मां मुझे कुछ कहतीं और न मुझे कुछ आभास होता कि वह मेरी बात सुन रही हैं या नहीं।

मैंने अपने जीवन में यह निश्चय कर लिया था कि मैं अब विवाह नहीं करूंगी, क्योंकि विवाह जीवन के अधःपतन का एक रूप है। इसके माध्यम से मनुष्य जन्म-मृत्यु के चक्र में घूमता रहता है। वह इतने अधिक बन्धनों में बंध जाता है कि चाहकर भी उससे छूट नहीं पाता। इसकी अपेक्षाकृत स्वतन्त्र जीवन अपने-आप में उच्चतर जीवन है। यह सही है कि यौवन के उन्माद में कुछ क्षण या कुछ समय 'काम' का वेग परेशान करता है, परन्तु यदि संयम बरता जाए तो 'काम' पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सकता है।

यद्यपि मेरी अवस्था उस प्रकार की थी, जिसे लौकिक भाषा में यौवन कहा जाता है, यह भी सही है कि कई बार मैं 'काम' की मार से तड़प जाती, परन्तु मेरा विवेक मुझ पर हावी रहता, और मैं उस पर भली प्रकार से नियन्त्रण कर लेती। माता-पिता ने मेरे विवाह के लिए कई प्रयत्न किए, कुछ लड़के मुझे देखने के लिए भी आए, परन्तु मैंने उन्हें स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि विवाह के उपरान्त भी यदि वे मेरे भाई के रूप

में रहें तो विवाह कर सकती हूं। मेरा उत्तर सुनकर कोई पागल ही विवाह के लिए तैयार होता।

परन्तु मुझे चैन नहीं था, क्योंकि मैं साधना क्षेत्र में कुछ ऐसा करना चाहती थी, जो अपने-आप में अप्रतिम हो। इसके लिए मार्गदर्शक की नितान्त आवश्यकता थी, परन्तु मुझे कोई गुरु नहीं मिल पा रहा था, जो कि मुझे सही रास्ते से परिचित कराता। किसी पर मेरी आस्था ही नहीं जम पा रही थी। एक दिन दोपहर को मैं अपने घर में बैठी हुई इन्हीं विचारों में लीन थी कि बाहर से आवाज़ आई, 'भिक्षां देहि।' आवाज़ कुछ परिचित-सी लगी। मैं भिक्षा के लिए धान्य लेकर बाहर आई, तो ठक से रह गई, मेरे सामने लगभग 50 वर्ष की उम्र के एक संन्यासी खड़े थे जिनके चेहरे पर अभूतपूर्व प्रकाश था। मैं कुछ क्षणों के लिए ठगी-सी खड़ी रही, परन्तु तुरन्त ही चैतन्य हो गई और मैंने हाथ में धान से भरा हुआ जो पात्र था वह आगे बढ़ा दिया। संन्यासी हंसे, बोले, "मैं अनाज लेने के लिए नहीं आया हूं, अपितु मुझे तुम्हारा ज्ञान चाहिए, तुम्हारी साधना और तुम्हारे विचार चाहिए, तुम कब तक भटकती रहोगी?"

वे शब्द ऐसे लगे जैसे मैं इन शब्दों को पहले भी कहीं सुन चुकी हूं। मेरे मन ने कहा, 'जिस गुरु की खोज में तुम तड़प रही थी, वे ही सामने खड़े हैं। जिस व्यक्तित्व से तुम दीक्षा लेना चाहती थी, वह स्वयं चलकर तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ा है।' मैं यन्त्रवत उनके चरणों में झुक गई। उनका हाथ मेरी रीढ़ की हड्डी पर लगा, और एक सनसनाहट-सी पूरे शरीर में दौड़ गई। बाद में मालूम हुआ कि वह स्पर्श कुंडलिनी जागरण के रूप में था। मेरी आंखों के सामने से अज्ञान का अन्धकार हट गया और मैं अपने-आप को पूरे ब्रह्मांड का एक अंग अनुभव करने लगी।

वस्तुतः वह क्षण मेरे लिए कल्पनातीत था, जब कि मेरे गुरु स्वयं चलकर मेरे द्वार पर आए थे जो कि साक्षात शंकर का ही रूप थे।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रिय आभूषण, दीर्घायु प्रदान करने वाला तथा अकाल मृत्यु को समाप्त करने वाला है। यह जहां गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अर्थ और काम को प्रदान करने वाला है, वहीं पर संन्यासियों के लिए धर्म और मोक्ष देने वाला है। इससे स्त्रियों को पुत्र लाभ होता है, मनुष्य की शारीरिक व्याधियों को दूर करने वाला, मन को शान्ति प्रदान करने वाला तथा योगियों की कुंडलिनी जाग्रत करने वाला है। जिसके घर में रुद्राक्ष होता है, वहां भूत-प्रेतादि का उपद्रव नहीं होता तथा यह प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए सफलतादायक माना गया है।

रुद्राक्ष परिचय

यह मध्यम क़द का वृक्ष होता है, जो हिमालय की तलहटी, नेपाल तथा भूटान की तरफ़ विशेष रूप से पैदा होता है। इस पौधे के पत्ते छोटे और कुछ-कुछ गोल होते हैं। इसके बीजों को रुद्राक्ष कहा जाता है। अलग-अलग प्रान्तीय भाषाओं में इसके अलग-अलग नाम हैं। हिन्दी में इसे रुद्राक्ष, बंगला में रुद्रव्य, मराठी-गुजराती में रुद्राक्ष, तमिल में अक्कम, तेलुगु में रुद्रचल्लु, असमिया में रुद्रई, लुद्राक, उद्रोक, संस्कृत में रुद्राक्ष, शिवाक्ष, सर्वाक्ष, भूतनाशन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष और शिवप्रिय तथा अंग्रेज़ी में अल्ट्रा सम बीड ट्री (ALTRA SUM BEED TREE) कहते हैं।

आयुर्वेदिक विचार

आयुर्वेद के अनुसार यह खट्टा, गर्म वायु को नष्ट करने वाला, क़फ़ दूर करने वाला, सिर दर्द मिटाने वाला तथा भूख बढ़ाने वाला है।

चेचक, बोदरी तथा अछबड़ा की बीमारी में रुद्राक्ष की माला धारण करने से ये बीमारियां समाप्त हो जाती हैं और यदि पहले से ही धारण किया जाए, तो ये होती

ही नहीं। इसके धारण करने से मानसिक उन्माद तथा भूत-प्रेत बाधा नहीं होती, यदि बालक को क़फ़ हो गया हो या छाती में क़फ़ जम गया हो तो शहद में रुद्राक्ष के दो-तीन दाने घिसकर चटा देने से छाती में जमा हुआ क़फ़ निकल जाता है तथा बालक को पूर्ण आराम मिल जाता है।

रक्तचाप के रोगियों के लिए तो यह प्राणदायक माना गया है। यदि रुद्राक्ष की माला धारण की जाए, तो यह रोग नहीं रहता। यदि रक्तचाप बढ़ा हुआ हो तो असली रुद्राक्ष के दो दाने दो औंस जल में भिगोकर रात-भर रखें तथा सवेरे ख़ाली पेट उस जल को पी लिया जाए, तो इस प्रकार एक सप्ताह में ही रक्तचाप कम हो जाता है, और नियमित सेवन करने से यह रोग हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। हृदय की बीमारियों में यह गले में धारण किया जाता है, जिससे हृदय रोग समाप्त हो जाता है। ऐसा प्रयोग तीन महीने तक करना चाहिए।

चेचक पर रुद्राक्ष का दाना पानी में घिसकर लगाने से चेचक रोग समाप्त हो जाता है।

आध्यात्मिक विचार

जो व्यक्ति रुद्राक्ष को धारण करता है, वह स्वयं रुद्र तुल्य हो जाता है। यह शिव जी को अत्यन्त प्रिय है, इसके दर्शन करने से ही पापों का क्षय हो जाता है। जो मनुष्य भक्ति, मुक्ति, मोक्ष और भोग समान रूप से चाहता है, उसके लिए रुद्राक्ष अत्यन्त अनुकूल कहा गया है। रुद्राक्ष की माला धारण करने से मनुष्य, काल से भी भयभीत नहीं होता। इसकी माला जपने से मन्त्र सिद्धि में सफलता मिलती है। शिव पुराण के अनुसार यदि कोई मनुष्य धर्म से हीन तथा कुकर्मी हो, पर वह रुद्राक्ष से प्रेम करता हो या रुद्राक्ष धारण करता हो, तब भी वह समस्त प्रकार के पापों से छूट कर शिव पद प्राप्त करता है।

किसी भी वर्ण का व्यक्ति रुद्राक्ष धारण कर सकता है, परन्तु उसे शुद्ध और पवित्र रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। दिन को रुद्राक्ष धारण करने से रात्रिजनित पाप समाप्त हो जाते हैं और रात्रि में रुद्राक्ष धारण करने से दिन-भर के किए गए पाप क्षय हो जाते हैं।

रुद्राक्ष-उत्पत्ति

शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव ने रुद्राक्ष की उत्पत्ति के बारे में षण्मुख को बताया

था कि एक समय त्रिपुर नाम का एक दैत्य बड़ा ही दुर्जेय तथा पराक्रमी हो गया था उसने ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवताओं का तिरस्कार करना शुरू किया, तब देवताओं ने मुझे त्रिपुर का वध करने को कहा और इस निमित्त मैंने महाघोर रूपी अघोर अस्त्र का चिन्तन किया और एक हज़ार वर्ष तक जब मैंने अपने नेत्र बन्द किए, तो मेरे नेत्रों से जो जल बिन्दु गिरे, पृथ्वी पर उन अश्रु-बिन्दुओं से रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हुए।

रुद्राक्ष धारण करने के नियम

1. सभी वर्ण के लोग रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं, पर ब्राह्मणों को चाहिए कि वे मन्त्र के साथ रुद्राक्ष धारण करें, पर अन्य वर्णों को बिना मन्त्र के भी रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा है।
2. रुद्राक्ष धारण करते समय 'ओऽम् नमः शिवाय' का जप करना चाहिए तथा ललाट पर भस्म लगानी चाहिए।
3. स्नान, दान, जप, होम, वैश्वदेव, देवताओं की पूजा, प्रायश्चित, श्राद्ध और दीक्षाकाल में बिना रुद्राक्ष धारण किए, जो कुछ भी वैदिक कार्य किया जाता है, वह व्यर्थ जाता है।
4. अपवित्रता के साथ रुद्राक्ष धारण न करें, रुद्राक्ष को भक्ति के साथ धारण करना चाहिए।
5. सोने तथा चांदी के तारों में पिरोकर इसकी माला धारण करनी चाहिए, लाल धागे में भी यह माला पिरोई जा सकती है।
6. पुरुष यज्ञोपवीत, हाथ, कंठ अथवा पेट पर रुद्राक्ष धारण कर सकता है।
7. जो शिव के भक्त हैं उनको अपने हाथ में रुद्राक्ष का कड़ा धारण करना चाहिए। विषम संख्या से युक्त रुद्राक्ष धारण करना उत्तम माना गया है।
8. सोने की अंगूठी में यदि रुद्राक्ष जड़वा कर दाहिने हाथ की किसी भी उंगली में धारण करें, तो उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है।
9. जो मनुष्य सिर में रुद्राक्ष धारण करके स्नान करता है, उसे गंगा स्नान के समान फल प्राप्त होता है।
10. जो नित्य रुद्राक्ष पूजन या रुद्राक्ष धारण करता है, वह राजा के समान धनवान होता है।

11. रुद्राक्ष धारण करने पर चालीस दिन के भीतर-भीतर कार्य सिद्धि होती है, पर इसमें अटूट श्रद्धा तथा विश्वास आवश्यक है।

12. मृग चर्म पर बैठकर पूर्व की तरफ़ मुंह करके रुद्राक्ष धारण कर किसी भी मन्त्र का जप किया जाए तो अभूतपूर्व सिद्धि प्राप्त होती है।

13. रुद्राक्ष के दर्शन करने से पुण्य लाभ, स्पर्श से करोड़ गुना पुण्य तथा धारण करने से सौ कोटि गुना पुण्य प्राप्त होता है। इसके जप करने से करोड़ गुना फल मिलता है।

फलस्य दर्शने पुण्यं स्पर्शात्कोटिगुणं भवेत्,
शतकोटि गुणं पुण्यं धारणाल्लभते नरः।
लक्षकोटि सहस्राणि लक्षकोटिशतानि च,
जपाच्च लभते नित्यं नात्र कार्य विचारणा।

14. शिव को प्रसन्न करने के लिए तथा शिव साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए रुद्राक्ष का दाना श्रेष्ठ माना गया है।

15. मृत्यु के समय जिसके गले में रुद्राक्ष होता है, वह निश्चय ही शिव लोक में गमन करता हैं।

16. शिव पुराण के अनुसार सिर पर रुद्राक्ष धारण करने से एक करोड़ गुना फल, कान में दस करोड़ गुना फल, गले में सौ करोड़ गुना फल तथा मणिबन्ध में रुद्राक्ष धारण करने से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है।

17. शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति दोनों भुजाओं में सोलह-सोलह, शिखा में एक, हाथ में बारह, कंठ में बत्तीस, मस्तक पर चालीस, कान में एक-एक, वक्षस्थल पर छः इस प्रकार जो एक सौ आठ रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् रुद्र के समान पूजनीय हो जाता है।

18. बेर के समान मध्यम, चने के समान आकार वाले रुद्राक्ष अधम तथा आंवले के समान आकार वाले रुद्राक्ष श्रेष्ठ माने गए हैं।

19. चार प्रकार के रुद्राक्ष होते हैं अतः ब्राह्मण को श्वेत वर्ण के रुद्राक्ष, क्षत्रिय को लाल, वैश्य को पीले तथा शूद्रों को काले वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए।

20. जो रुद्राक्ष दृढ़, चिकना और मोटा होता है, वह श्रेष्ठ रुद्राक्ष माना जाता है, इसके विपरीत जो कीड़ों से खाये हुए, बिना कांटों के, छिद्र करते समय फटे हुए तथा कृत्रिम रुद्राक्ष नुक़सान देने वाले माने गए हैं।

21. जिस प्रकार कसौटी पर घिसने से सोने की रेखा पड़ जाती है, उसी प्रकार जिस रुद्राक्ष से कसौटी पर रेखा पड़ जाए, वह श्रेष्ठ रुद्राक्ष माना जाता है।

माला-प्रकार

शास्त्रों के अनुसार अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मालाओं का विधान है —

1. पुत्रजीवा की माला धारण करने से पुत्र प्राप्ति होती है।
2. मोतियों की माला भाग्यवर्धन में सहायक होती है।
3. अर्थ प्राप्ति में मणियों की माला श्रेष्ठ मानी गई है।
4. कुश माला पापों का हरण करने वाली होती है।
5. सोने के मनकों की माला सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण करने वाली होती है।
6. मुक्ति के लिए श्वेत शिला की माला उत्तम मानी जाती है।
7. अरिष्टमूल की माला अरिष्ट शान्ति में सहायक मानी जाती है।
8. रुद्राक्ष की माला धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष—चारों फलों को देने वाली है।
9. एक सौ चार दानों की माला स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।
10. एक सौ आठ दानों की माला सभी कार्यों में सिद्धि देती है।
11. सौ दानों की माला मोक्ष प्रदान करती है।
12. सत्तावन दानों की माला सिद्धिदायक होती है।
13. सत्ताईस दानों की माला तान्त्रिक सफलता देने में सहायक होती है।
14. बत्तीस दानों की माला लक्ष्मी प्राप्ति में सहायक होती है।

रुद्राक्ष धारण विधि

इस लेख में पहली बार रुद्राक्ष धारण करने की विधि स्पष्ट की जा रही है। मुख्यतः चौदहमुखी रुद्राक्ष श्रेष्ठ माने गए हैं, यद्यपि भारत में इक्कीसमुखी रुद्राक्ष तक प्राप्त होते हैं। मैं नीचे शास्त्रों में वर्णित एकमुखी से लेकर इक्कीसमुखी रुद्राक्षों का वर्णन व धारण विधि स्पष्ट कर रहा हूं।

एकमुखी रुद्राक्ष

तान्त्रिक क्षेत्र में साक्षात शंकर के समान महाभोगी (लखपती) या महायोगी ही एकमुखी रुद्राक्ष धारण कर सकता है। एकमुखी रुद्राक्ष के स्वामी को जीवन में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं रहता और लक्ष्मी उसके घर में चिरस्थायी बनी रहती है। एकमुखी

रुद्राक्ष की एक पहचान और भी है कि यदि इसे एक कप पानी में डाल दिया जाए, तो बीस-पच्चीस मिनट बाद पानी खौलने लग जाता है।

एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से चित्त में प्रसन्नता, अनायास धन प्राप्ति, रोगमुक्ति, व्यक्तित्व में निखार तथा शत्रु पर विजय होती है। ऐसा व्यक्ति जीवन में मनोवांछित इच्छाएं पूर्ण करने में सफल होता है। इसके धारण करने से पुराना दमा ठीक हो जाता है, तपेदिक आदि रोगों में भी यह रामबाण है।

प्रत्येक रुद्राक्ष को सिद्ध करने का एक विशिष्ट मन्त्र है। अटूट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस रुद्राक्ष को सिद्ध किया जाता है।

यह साक्षात रुद्र स्वरूप है और यह विश्व में अत्यन्त दुर्लभ है। जिसके घर में यह रुद्राक्ष होता है, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। यह रुद्राक्ष ब्रह्महत्या के दोष को दूर करने वाला माना गया है।

मन्त्र

ओऽम् ऐं हं औं ऐं ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीं शिव मन्त्रस्य प्रासद ऋषिः पंक्ति छन्दः शिवो देवता हंकारो बीजम् औं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्‌यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वामदेव ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे, ऋ ऐं ऐं नमः हृदि, हं बीजाय नमो गुह्ये, ओऽम् शक्तये नमः पादयोः। ओऽम् ओऽम् हां अंगुष्ठाभ्यां नमः ओऽम् ऐं हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् हां हं मध्यमाभ्यां वषट् ओऽम् ॐ हीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति करन्यासः। अथांगन्यासः। ओऽम्-ओऽम् हां हृदयाय नमः। ओऽम् ऐं हीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् हीं हं शिखायै वषट्। ओऽम् औं हं कवचाय हुं। ओऽम् ऐं हां नेत्रत्रयाय वौषट् ओऽम् ओऽम् हं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

मुक्तापीनपयोदमौक्तिकजपार्णैर्मुखैः पंचभिः।
स्त्र्यक्षै राजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम्।
शूलं टंककृपाणवज्रदहनान्नागेन्द्रघंटाशुकं।
हस्ताजेष्वभयं वरांश्चदधतं तेजोज्ज्वलं चिन्तये।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य कुर्याज्जपसहस्रकं तदन्तरमाभि मुख्यसामीप्यं घटोपरि ताम्रपात्रं निधाय तत्र रुद्राक्षं क्षिप्त्वा पंक्तिप्राणायामं कृत्वा। पश्चात् वामे

जलपात्रं धृत्वा तत्र तले सव्यहस्तं धृत्वा दक्षिण पाणिना सहस्रजपं कुर्यात्। पुनस्तस्योपरि जलं क्षिपेत् रुद्राक्षं धारयेत्। एवं सर्वत्र विधिर्ज्ञेयः।।

द्विमुखी रुद्राक्ष

शास्त्रों में दोमुखी रुद्राक्ष अर्धनारीश्वर का प्रतीक माना जाता है, शिवभक्तों के लिए इस रुद्राक्ष को धारण करना ज़्यादा अनुकूल है। तामसी वृत्तियों के परिहार के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है, चित्त की एकाग्रता, मानसिक शान्ति; जीवन में आध्यात्मिक उन्नति, कुंडलिनी जागरण आदि के लिए इसका प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है। वशीकरण के लिए रुद्राक्ष का प्रयोग अचूक माना गया है।

यह अर्धनारीश्वर होता है। इसे साक्षात शिवस्वरूप माना जाता है तथा इसके धारण करने से गौ-वध का पाप भी दूर हो जाता है।

मन्त्र

ओऽम् श्रीं हीं क्षीं व्रीं ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीदेवदेवेशमन्त्रस्य अत्रिऋषि गायत्री छन्दः देवदेवेशो देवतां क्षीं बीजं क्षौं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। अत्रिऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। देवदेवेशाय नमो हृदि। क्षीं बीजाय नमो गुह्ये। क्षौं शक्तये नमः पादयोः (करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ओऽम् क्षीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ओऽम् हीं मध्यमाभ्यां वषट। ओऽम् क्षौं अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट, ओऽम् ओऽम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् क्षीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् हीं शिखायै वषट्। ओऽम् क्षौं कवचाय हुं। ओऽम् व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

तपनसोमहुताशनलोचनं।
घनसमानगलं शशिसुप्रभम्।
अभय चक्रपिनाकवरान्करै।
दैधतमिन्द्रधरं गिरीशं भजेत।

त्रिमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष अग्निस्वरूप माना गया है, यह त्रयाग्नि का प्रतिरूप है। इसे धारण करने से किसी भी प्रकार की बीमारी, बुख़ार या कमज़ोरी नहीं रहती। पीलिया के रोग में रामबाणवत् है, यदि दूध में घिसकर पिलाया जाए, तो आंखों का जाला कट जाता है। इसके धारण करने से व्यक्ति क्रियाशील रहता है। यदि किसी की नौकरी नहीं लग रही हो, बेकार हो, रुग्ण हो, तो इसके धारण करने से निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है। यह रुद्राक्ष अग्नि स्वरूप है, इसके धारण करने से स्त्री-हत्या का पाप दूर हो जाता है।

मन्त्र

ओऽम् रं इं ह्रीं हूं ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अग्निर्मन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निर्देवता ह्रीं बीजं हूं शक्ति-चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अग्निदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये। हूं शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यास) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् रं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् इं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् हूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ओऽम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् रं शिरसे स्वाहा। ओऽम् इं शिखायै वषट्। ओऽम् ह्रीं कवचाय हुं। ओम हूं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चै।
दीर्घरेभिर्धारयत जपामम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं।
ध्यायेद्ब्रह्मा बद्धमौलि जटाभिः॥ 3॥

चतुर्मुखी रुद्राक्ष

यह चतुर्मुखी ब्रह्म का प्रतिनिधि है। यह शिक्षा में सफलता देता है। जिसकी बुद्धि मन्द हो, वाक्शक्ति कमज़ोर हो, स्मरणशक्ति क्षीण हो, उसके लिए यह रुद्राक्ष कल्पतरु

के समान है। इसके धारण करने से शिक्षा, भेंट आदि में असाधारण सफलता मिलती है, सम्मोहन-वशीकरण के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसे दूध में उबालकर बीस दिन तक पीने से मस्तिष्क-सम्बन्धी विकार दूर होते हैं।

ऐसा रुद्राक्ष अग्नि पितामह ब्रह्म के स्वरूप वाला माना गया है, इसके धारण करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती है। नर हत्या के पाप से व्यक्ति इसके धारण करने से छूट जाता है।

मन्त्र

ओऽम् वां क्रां तां हां ईं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री ब्रह्ममन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुपछन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां बीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयेः।। (कथकरन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् वां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् तां अनामिकाभ्यां हूं। ओऽम् हां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ईं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयायनमः। ओऽम् वां शिरसे स्वाहा। ओऽम् क्रां सिखायै वषट्। ओऽम् तां कवचाय हुं। ओऽम् हां नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ईं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

प्रणम्य शिरसा शश्व।
दंष्ट्रवक्त्रं चतुर्मुखम्।
गायत्री सहितं देवं।
नमामि विधिमीश्वरम्॥ 4॥

पंचमुखी रुद्राक्ष

पंचमुखी रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रतिनिधि है। सामान्यतः यह बाज़ार में प्राप्त हो जाता है, तथा अन्य सभी रुद्राक्षों की अपेक्षा यह सस्ता होता है। शत्रुनाश के लिए यह रुद्राक्ष पूर्णतया फलदायी है, इसके धारण करने से सांप-बिच्छू आदि ज़हरीले जानवरों का डर नहीं रहता। विद्वेष एवं शत्रुस्तम्भन आदि कार्यों में यह परम उपयोगी है। मानसिक शान्ति एवं प्रफुल्लता के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है।

यह रुद्राक्ष उन्नतिदायक माना गया है और इसे कालाग्नि के नाम से पुकारा जाता है। परस्त्रीगमन के पाप से ऐसा व्यक्ति मुक्त हो जाता है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रां आं क्ष्म्यौ स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ओऽम् बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमो हृदि। ओऽम् बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् ह्रां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् आं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् क्ष्म्यौ अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। ओऽम् ह्रां आं क्ष्म्यौ स्वाहा, करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् ह्रां शिरसे स्वाहा। ओऽम् आं शिखायै वषट्। ओऽम् क्ष्म्यौ कवचाय हुं। ओऽम् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ह्रां आं क्ष्म्यौ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हावभावविलसार्द्ध नारिकं।
भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं।
चिन्तये जपविधौ विभूतये॥ 5॥

षण्मुखी रुद्राक्ष

साधक षण्मुखी रुद्राक्ष को गणपति का प्रतीक मानते हैं, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करने, कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करने तथा व्यापार में अद्‌भुत आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसे धारण करने से व्यक्ति के जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती, दारिद्रय नाश, लक्ष्मी प्राप्ति आदि के लिए भी यह रुद्राक्ष उपयोगी है। हिस्टीरिया, मूर्च्छा, प्रदर, स्त्रियों से सम्बन्धित रोग दूर करने में इसका प्रयोग पूर्ण सफल रहता है।

इसे कार्तिकेय का स्वरूप माना गया है, इसके धारण करने से घर में साक्षात अन्नपूर्णा का वास हो जाता है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः कार्तिकेयदेवता, ऐं बीजं सौं शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थ जपे विनियोगः। दक्षिणामूर्ति ऋषियेनमः शिरसि पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे। कार्तिकेयदेवतायै नमो हृदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः ओऽम् ह्रीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् श्रीं शिखायै वषट्। ओऽम् क्लीं कवचाय हुं। ओऽम् सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

क्रौंचपर्वतविदारणलोलो।
दानवेन्द्रवनिताकृतखण्डः।
चूतपल्लवशिरोमणिचोपी।
भीषउानन जगत्परिपाहि॥ 6॥

सप्तमुखी रुद्राक्ष

यह सात मातृकाओं का प्रतिनिधि रुद्राक्ष अत्यन्त उपयोगी तथा लाभप्रद है। दीर्घायु प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग उपयोगी है। ज्योतिष की दृष्टि से जब-जब भी किसी बालक या व्यक्ति का मारकेश समय अनुभव हुआ है और उसे यह पहनाया गया है, तब-तब आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले हैं। मेरा ऐसा अनुभव है कि जो व्यक्ति इस प्रकार का रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी मृत्यु शस्त्र से नहीं होती, और न उसे अकाल मृत्यु का ही सामना करना पड़ता है। सन्निपात, शीतज्वर, मिरगी आदि रोगों में भी इसका प्रयोग सफल रहता है। यह देवताओं की सप्त माताओं का द्योतक माना गया है। इसे पहनने से महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है और अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं क्रीं ग्लौं ह्रीं स्रौं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीअनन्त भगवान ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता, क्रीं बीजं हीं शक्तिः अभीष्ट सिद्ध्यर्थ रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अनन्त देवतायै नमो हृदि। क्रीं बीजाय नमो गुह्ये। हीं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् क्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् ग्लौं अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम् हीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् स्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् क्रीं शिखायै वषट्। ओऽम् ग्लौं कवचाय हुं। ओऽम् हीं नेत्रत्रयाय वौषट। ओऽम् स्रौं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अनन्त पुंडरीकाक्ष फणशतविभूषितम्।
विश्वबन्धुकर ओंकार कूर्मारूढं प्रपूजयेत।

अष्टमुखी रुद्राक्ष

यह अष्टदेवी का प्रतिनिधि रुद्राक्ष है। ज्ञान प्राप्ति, मनस्तोष तथा चित्त की एकाग्रता में इसका योगदान बेजोड़ है। जब काफ़ी प्रयत्न करने पर भी ध्यान एकाग्र न होता हो, या कुंडलिनी जागरण न होती हो, तब उस समय यह रुद्राक्ष इसमें सफलता देता है। व्यापारी वर्ग के लिए यह परम उपयोगी है। प्रत्येक व्यापार में उन्नति के लिए यह सहायक है। सट्टे, जुए, घुड़दौड़, आकस्मिक धनलाभ में यह पूर्णतः सहायक होता है।

प्रत्येक प्रकार के विघ्नादि शान्ति के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। जिस व्यक्ति के शरीर पर यह रुद्राक्ष हो, उस पर किसी भी प्रकार का तान्त्रिक प्रयोग सम्भव नहीं। यह प्रेम प्रसंगों में सफलता देता है। पक्षाघात, जलोदर आदि रोगों में इसका प्रयोग सफल रहा है।

यह अष्ट वसु का भी द्योतक है, किसी भी प्रकार का पाप इसके धारण करने से समाप्त हो जाता है, यह रुद्राक्ष मुक्ति प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सहायक माना गया है।

मन्त्र

ओऽम् हां ग्रीं लं आं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुपछन्दः विनायको देवता ग्रीबीजं आं शक्तिः। चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे। विनायक देवतायै नमः हृदि। ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये। आं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् हां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् लं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् आं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् श्रींकरतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हां शिरसे स्वाहा। ओऽम् ग्रीं शिखायै वषट। ओऽम् लं कवचाय हुं। ओऽम् आं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हरतु कुल गणेशो विघ्नसंधानशेषान्।
नयतु सकलसम्पूर्णतां साधकानाम्।
पिबतु बटुकनाथः शोषितं निम्नकानां।
दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः॥

नवमुखी रुद्राक्ष

यह नौ शक्तियों का प्रतिनिधि है। यह रुद्राक्ष भी कठिनता से प्राप्त होता है। समस्त प्रकार की साधनाओं में सफलता, प्रसिद्धि, सम्मान एवं यश प्राप्ति में यह रुद्राक्ष बेजोड़ है। दुर्गा से सम्बन्धित तन्त्र एवं साधनादि में इससे सफलता मिलती है। शत्रुओं को परास्त करने एवं मुक़दमे में सफलता के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। जो व्यक्ति हृदय से दुर्बल हैं, वे हृदय से सम्बन्धित किसी भी बीमारी को दूर करने में इसका प्रयोग कर सकते हैं।

इसे भैरव के नाम से पुकारा जाता है। जो व्यक्ति ऐसा रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी अकालमृत्यु नहीं होती और जीवन में आकस्मिक दुर्घटना का भय नहीं रहता।

मन्त्र

ओऽम् हीं वं यं रं लं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री भैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरवो देवता, वं बीजं, हीं शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारद ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि, वं बीजाय नमो गुह्ये, हीं शक्तये नमः पादयोः॥

(अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, ओऽम् ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् वं मध्यमाभ्यां वषट्, ओऽम् यं अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम् रं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ओऽम् लं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् ह्रीं शिरसे स्वाहा, ओऽम् वं शिखायै वषट् ओऽम् यं कवचाय हुं, ओऽम् रं नेत्रत्रयाय वौषट्, ओऽम् लं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

कपालहस्तं भुजगोपवीतं।
कृष्णच्छविंदण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्यमाद्यं मधुपानमत्तं
हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम्।

दशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष यम का स्वरूप है और लगभग दुर्लभ है। तान्त्रिक क्षेत्र में इसका बहुत अधिक महत्त्व है। जो व्यक्ति गले में यह रुद्राक्ष धारण करता है, उस पर मारण मोहन आदि का कोई प्रभाव नहीं होता। ऐसा व्यक्ति न तो अकाल मृत्यु का सामना करता है और न दुर्घटना का ख़तरा ही, सभी विघ्न-बाधाओं से वह व्यक्ति सुरक्षित रहता है। दूध के साथ यदि यह रुद्राक्ष घिसकर तीन बार चटाया जाए, तो कूकरखांसी का निवारण होता है। यह रुद्राक्ष साक्षात विष्णु के स्वरूप का माना गया है। इसके धारण करने से व्यक्ति समस्त संसार में प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करता है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं क्लीं व्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीजनार्दनमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुपछन्दः जनार्दनो देवता श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखः जनार्दनदेवतायै नमो हृदिः श्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।। (अथकरन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहाः ओऽम् ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् क्लीं अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम् व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ओऽम् ओऽम् करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् श्रीं शिरसे स्वाहा, ओऽम् ह्रीं शिखायै वषट्, ओऽम् क्लीं कवचाय हुं, ओऽम् व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ओऽम् ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

विष्णुः शारदचन्द्र कोटिसदृशं शंखं रथांगं गदा।
मम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्यां जगन्मोहनम्।
आबद्धांगदहारकुण्ड महामौलिस्फुरत्कंकणं।
श्रीवत्सांकमुदार कौस्तुभधरंवन्दे मुनीन्द्रैस्स्तुतम्।

एकादशमुखी रुद्राक्ष

यह एकादश रुद्र का प्रतीक है, प्रयत्न साध्य है। स्त्रियों के लिए रुद्राक्ष सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। पति की सुरक्षा, उसकी दीर्घायु एवं उन्नति तथा सौभाग्य प्राप्ति में यह रुद्राक्ष उपयोगी है। सन्तान प्राप्ति के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है। 'जाबाल्योपनिषद्' के अनुसार कोई भी स्त्री इस रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित कर धारण करे, तो उसे निश्चय ही पुत्रलाभ होता है। संक्रामक रोगों के नाश के लिए भी इस रुद्राक्ष का उपयोग किया जाता है।

यह साक्षात रुद्रस्वरूप माना गया है, इसके धारण करने से व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ओऽम् रूं क्षूं मूं यूं ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्यं श्रीरुद्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुपछन्दः रुद्रो देवता रूं बीजं, क्षूं शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। कश्यप ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे, रुद्र देवतायै नमो हृदि, रूं बीजाय नमो गुह्यं, क्षूं शक्तये नमः पादयो।। (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, ओऽम् रूं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् क्षूं मध्यमाभ्यां वषट्, ओऽम् मूं अनामिकाभ्यां हूं, ओऽम् यूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ओऽम् ओऽम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् रूं शिरसे स्वाहा, ओऽम् क्षूं शिखायै वषट्, ओऽम् मूं कवचाय हुं, ओऽम् यूं नेत्रत्रयाय वौषट्, ओऽम् ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

बालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेन्दुखण्डीज्ज्वलं।

नागेन्द्रैः कृतशेखरं जपवटी शूलं कपालं करैः।
खट्वांगं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पंचाननं सुन्दरं।
व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्री नीलकण्ठंभजेत्।

द्वादशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष भगवान विष्णु का स्वरूप समझा जाता है, साथ ही यह दुर्लभ भी है। इसे धारण करने से ब्रह्मचर्य-रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बनता रहता है। शक्तिहीनता की स्थिति में यह रुद्राक्ष जीवन-भर धारण करना चाहिए। पांडु रोगों में यह रुद्राक्ष परम उपयोगी है। भव्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व की रक्षा के लिए भी इसे धारण करना चाहिए।

इसे अन्नपूर्णायुक्त रुद्राक्ष माना जाता है, इसके धारण करने से शस्त्र आदि का भय नहीं रहता और उस पर किसी प्रकार का तान्त्रिक प्रभाव कार्य नहीं करता, इसे सूर्य का अवतार भी कहा गया है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री सूर्यमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेश्वरो देवता ह्रीं बीजं, श्री शक्तिः घृणिः कीलकं, रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, विश्वेश्वरो देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ओऽम् ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् क्षौं मध्यामाभ्यां वषट्, ओऽम् घृणिः अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम् श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् श्रीं हृदयाय नमः। ओऽम् ह्रीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् क्षौं शिखायै वषट्, ओऽम् घृणि कवचाय हुं। ओऽम् श्रीं नेत्रत्राय वौषट्। ओऽम् ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

शोणांभोरुहसंस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयी विग्रहं।
दानांभोजयुगाभयानि दधतं हस्तैः प्रबाल प्रभम्॥

केयूरांगदकंकणद्वयधरं कर्णैर्लसत्कुण्डलं।
लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूर्यं गुणाब्धिं भजेत्॥ 12॥

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष

यह कामदेव का प्रतीक है, सौभाग्यशाली लोगों के पास ही यह रुद्राक्ष होता है। इसके धारण करने से सैकड़ों लाभ हैं। मानसिक इच्छापूर्ति में यह रुद्राक्ष पूर्णतः सहायक है। धन, यश, मान, पद-प्रतिष्ठा आदि के लिए यह रुद्राक्ष परम उपयोगी एवं सफलतादायक है। इस रुद्राक्ष को कई प्रकार से सिद्ध कर मानसिक इच्छाएं पूर्ण की जा सकती हैं। शारीरिक सुन्दरता बनाए रखने के लिए इसे दूध के साथ औटाकर पीना चाहिए। यह कामदेव का सूचक माना गया है। इसके धारण करने पर व्यक्ति पूर्ण पुरुष बनता है तथा नपुंसकता दूर होती है।

मन्त्र

ओऽम् ईं यां आपः ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्य श्री इन्द्र मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिः छन्दः इन्द्रो देवता ईं बीजम, आपः शक्तिः रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिः छन्दसे नमो मुखे। इन्द्रो देवतायै नमो हृदि। ईं बीजाय नमो गुह्ये आपः इति शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः)। ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् यां मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् आपः अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् ओऽम् कनिष्ठिकाभ्यां वषट्। ओऽम् ईं यां आपः, ओऽम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् ईं शिरसे स्वाहा, ओऽम् यां शिखायै वषट्। ओऽम् आपः कवचाय हुं। ओऽम् ओऽम् नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ईं यां आपः ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

पीतवर्ण सहस्राक्षं वज्रपद्मधरं विभुम्।
सर्वालंकारसंयुक्तं नौमीन्द्रादिकमीश्वरम्।

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष त्रिपुरारि का प्रतिनिधि है और 'जाबाल्योपनिषद्' के अनुसार इसकी उत्पत्ति रुद्र की आंखों से हुई है। स्वास्थ्य लाभ, रोगमुक्ति एवं उन्नति के लिए यह रुद्राक्ष

रामबाणवत है, प्रत्येक प्रकार के रोग में इसके धारण करने से निश्चय ही लाभ प्राप्त होता है। यह रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति निरोग रहता है।

ऐसा रुद्राक्ष हनुमान का स्वरूप माना जाता है। इस रुद्राक्ष के अनन्त लाभ और गुण हैं। इसको धारण करने वाला व्यक्ति साक्षात शिव स्वरूप हो जाता है।

मन्त्र

ओऽम् औं हस्फ्रै खबफ्रै हस्रौ हसब्फ्रौ। इति मन्त्रः।

अस्य श्री हनुमन्मन्त्रस्य रामचन्द्रः ऋषिः जगती छन्दः श्री हनुमद्देवता औं बीजं, हस्फ्रै शक्तिः अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। रामचन्द्र ऋषिये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमो मुखे। हनुमद्देवतायै नमो हृदि। औं बीजाय नमो गुह्ये। हस्फ्रै शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः)। ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओम् औं तर्जनीभ्यां स्वाहा ओऽम् हस्फ्रै मध्यमाभ्यां वषट्, ओऽम् खब्फ्रै अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् हस्रौ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ओऽम् हसब्फ्रौ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् औं शिरसे स्वाहा। ओऽम् हस्फ्रै शिखायै वषट्। ओऽम् खबफ्रै कवचाय हुं। ओऽम् ह स्रौ नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् हसब्फ्रौ अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

उद्यन्मार्तण्डकोटि प्रकटरुचियुतं चारु वीरासनस्थं।
मौर्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभितं कुण्डलाभ्याम्।
भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिनं वेदनाद-प्रमोदं।
ध्यायैद्देवं विधेयं प्लवगकुलपति गोष्पदी भूतवौद्धिम।

पंचदशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष पशुपति का पर्याय है, आर्थिक दृष्टि से उन्नति करने के लिए यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है। यह रुद्राक्ष धारण करने वाला ख़ाली हाथ नहीं रहता तथा इसके पहनने से चर्मरोग नहीं होता।

मन्त्र

ओऽम् हैं सं हीं ऐं ओऽम्। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अग्निमन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निदेवता हीं बीजं, ऐं

शक्ति चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। अग्निदेवतायै नमो हृदि। हीं बीजाय नमो गुह्ये। ऐं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठास्यां नमः। ओऽम् हैं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् सं मध्माभ्यां वषट्। ओऽम् हीं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् ऐं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ओऽम् ओऽम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हैं शिरसे स्वाहा। ओऽम् सं शिखायै वषट्। ओऽम् हीं कवचाय हुं। ओऽम् ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ओऽम् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चै।
दीर्घैरेभिर्धारयतं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं।
ध्यायेद्ब्रह्म बद्धमौलि जटाभिः।

षोडशमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष कालविजय का प्रतिनिधि है। इसके धारण करने से सर्दी-गर्मी का प्रकोप नहीं रहता, जो साधु जंगलों में निर्द्वन्द्व विचरण करते रहते हैं, उनके लिए यह विशेष उपयोगी है। जिस घर में यह रुद्राक्ष होता है, उस घर में आग लगने, चोरी, डकैती का भय नहीं रहता।

मन्त्र

ओऽम् वां क्रां तां हां ऐं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री ब्रह्ममन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुपछन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां बीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयोः।। (अथकरन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् वां तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् तां अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् हां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् वां शिरसे स्वाहा। ओऽम् क्रां शिखायै वषट्। ओऽम् तां कवचाय हुं। ओऽम् हां नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

प्रणम्य शिरसा शश्व।
दंष्ट्रवक्त्रं चतुर्मुखम्।
गायत्री सहितं देवं।
नमामि विधिमीश्वरम्।

सप्तदशमुखी रुद्राक्ष

यह विश्वदेव विश्वकर्मा का प्रतिनिधि है। आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह रुद्राक्ष उपयोगी है। जिस व्यक्ति के गले में यह रुद्राक्ष होता है, उसे जीवन में कई बार आकस्मिक धन लाभ होता है, भौतिक सम्पदा, वाहन, मकान, सुख आदि के क्षेत्र में भी यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है।

मन्त्र

ओऽम् हां क्रां क्षौं स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ओऽम् बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो सुखे। श्री सदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हदि। ओऽम् बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। (अथकरन्यासः) ओऽम् ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् हां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् क्षौं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् हां क्रां क्षौं स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम्-ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हां शिरसे स्वाहा। ओऽम् क्रां शिखायै वषट्। ओऽम् क्षौं कवचाय हुं। ओऽम् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् हां क्रां क्षौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हावभावविलासार्द्धनारिकं ।
भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं ।
चिन्तये जपविधौ विभूतये॥

अष्टादशमुखी रुद्राक्ष

यह पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है, इसके धारण करने से व्यक्ति स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट एवं प्रसन्न रहता है। गर्भरक्षा के लिए यह रुद्राक्ष विशेष उपयोगी है। जिन महिलाओं के बार-बार गर्भपात होता हो, उन्हें यह रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। शिशु रोगों के निवारण में इसका प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है।

मन्त्र

ओऽम् ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं ह्रीं। इति मन्त्रः

अस्य श्री ब्रह्ममन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः पंक्तिश्छन्दः कार्तिकेयदेवता, ऐं बीजं, सौं शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे। कार्तिकेयदेवतायै नमो हदि। ऐं बीजाय नमो गुह्ये। सौं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ओऽम्-ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा-ओऽम् श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् क्लीं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ओऽम्-ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् ह्रीं शिरसे स्वाहा। ओऽम् श्रीं शिखायै वषट्। ओऽम् क्लीं कवचाय हुं। ओऽम् सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

क्रौंचपर्वतविदारणलोलो।
दानवेन्द्रवनिताकृतखण्डः।
चुतपल्लवशिरोमणिचोपी।
भोषडानन जगत्परिपाहि।

उन्नीसमुखी रुद्राक्ष

यह नारायण का प्रतीक है। इसके धारण करने से सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। उत्तरोत्तर व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति तथा सभी प्रकार के दैहिक-भौतिक सुखों के लिए इस रुद्राक्ष को धारण किया जाता है।

मन्त्र

ओऽम् हं सं ऐं ह्रीं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री अनन्त मन्त्रस्य भगवान ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तोदेवता क्रीं बीजं, ह्रीं शक्ति अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः। भगवान् ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। अनन्त देवतायै नमो हृदि। हं बीजाय नमो गुह्ये। सं शक्तये नमः पादयोः (अथ करन्यासः) ओऽम्-ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् हं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् सं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हं शिरसे स्वाहा। ओऽम् सं शिखायै वषट्। ओऽम् ऐं कवचाय हुं। ओऽम् ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

अनन्त पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम्।
विश्वबन्धूक आकारं, कूर्मारूढं प्रपूजयेत्।

बीसमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष सामान्यतः बाज़ार में प्राप्त हो जाता है। यह ब्रह्मा का प्रतीक है, इसके धारण करने से ज्ञान एवं भक्ति में उत्तरोत्तर उन्नति होती है तथा मन एकाग्र रहता है। नेत्र-ज्योति बढ़ाने के लिए इस रुद्राक्ष का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ओऽम् ज्ञां ज्ञीं लं अं ऐं श्रीं। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषि। अनुष्टुपछन्दः विनायको देवता ग्री बीजं, आं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे। विनायक देवतायै नमः हृदि। ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये आं शक्तये नमः पादयोः। (अथ करन्यासः) ओऽम्-ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् हां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ओऽम् ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। ओऽम् लं अनामिकाभ्यां हुं। ओऽम् अं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ओऽम् ग्रौं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम् ओऽम् हृदयाय नमः। ओऽम् हां शिरसे स्वाहा। ओऽम् ग्रीं शिखायै वषट्। ओऽम् लं कवचाय हुं। ओऽम् वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ओऽम् श्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

हरतु कुल गणेशो विघ्नसंधानशेषान्।
नयतु सकलसम्पूर्णता साधकानाम्।
पिबतु बटुकनाथः शोषितं निम्नकानां।
दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः॥

इक्कीसमुखी रुद्राक्ष

यह रुद्राक्ष अत्यन्त दुर्लभ है। भाग्यवान व्यक्ति ही इसे प्राप्त करते हैं। समस्त प्रकार के सुखों, ऐश्वर्य एवं भोग-विलास के लिए इसका उपयोग किया जाता है, यह कुबेर का प्रतिनिधि है। दरिद्र व्यक्ति भी यदि इसे धारण कर ले, तो वह निश्चय ही धनी हो जाता है। समस्त प्रकार के दैहिक रोगों की निवृत्ति के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

मन्त्र

ओऽम् ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ऐं। इति मन्त्रः।

अस्य श्री भैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्री छन्दः भैरवो देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।। (अथ करन्यासः) ओऽम्-ओऽम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओऽम् ऐं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ओऽम् ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्, ओऽम् ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं, ओऽम् श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ओऽम् श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ओऽम्-ओऽम् हृदयाय नमः, ओऽम् ह्रीं शिरसे स्वाहा, ओऽम् ह्रीं शिखायै वषट्, ओऽम् श्रीं कवचाय हुं, ओऽम् श्रीं नेत्रत्रयाय, वौषट्, ओऽम् ऐं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

कपालहस्तं भुजगोपवीतं।
कृष्णच्छविंदण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्यमाद्यं अधुपानमत्तं।
हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम्।

गौरी-शंकर

यह रुद्राक्ष शिव और शक्ति का मिश्रित स्वरूप माना जाता है और अत्यन्त दुर्लभ होता है। जो व्यक्ति एकमुखी रुद्राक्ष धारण न कर सके, उसे यह रुद्राक्ष ज़रूर धारण करना चाहिए या घर में पूजा-गृह में रखना चाहिए। तिजोरी में रखने से यह आर्थिक दृष्टि से विशेष सफलतादायक रहता है। वास्तव में ऐसे रुद्राक्ष बिरले लोगों के घर में ही पाए जाते हैं, परन्तु इस प्रकार के रुद्राक्ष में नकली से सावधान रहें। समझ करके ही शुद्ध और प्रामाणिक गौरी-शंकर रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

इन्द्राक्षी माला

संसार में ऐसे नर बिरले और सौभाग्यशाली ही होंगे, जिनके पास इन्द्राक्षी माला हो। इस माला में एकमुखी रुद्राक्ष से इक्कीसमुखी रुद्राक्ष तक का एक-एक दाना पिरोया हुआ होता है। जहां तक ज्ञात है, विश्व में अब तक मात्र पांच व्यक्तियों के पास ही इस प्रकार की मालाएं हैं, जिनमें से चार भारत के ही सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं। जिस व्यक्ति के गले में यह माला होती है, उसके लिए समस्त विश्व का वैभव भी तुच्छ है। धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, भक्ति आदि सभी उसे सहज प्राप्त हो जाते हैं। इस माला को पहनकर व्यक्ति मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है और उसके लिए कुछ भी अपर्याप्त नहीं रहता। विश्वप्रसिद्ध सम्मान तथा कुबेरवत सम्पदा का भोग करने में वह समर्थ होता है। लेखक के पास इस प्रकार की माला कई वर्षों से रही है, और वह इस माला के चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित हैं।

देश के एक धनकुबेर से चर्चा के दौरान ज्ञात हुआ कि वे कुर्ते के नीचे हमेशा इन्द्राक्षी माला धारण किए रहते हैं जो कि वंश परम्परा से बड़े पुत्र को प्राप्त होती है। उनके अनुसार उनके पितामह अत्यन्त ग़रीब थे पर जब एक साधु से इस प्रकार की माला प्राप्त हुई तब से वे निरन्तर प्रगति करते रहे और आज देश के अग्रगण्य व्यक्ति माने जाते हैं।

मां भैरवी देश की प्रसिद्ध तान्त्रिक हैं और सिद्धियों की भंडार हैं, उन्होंने इसका रहस्य इस प्रकार की माला को ही बताया, जो कि उनके गले में झूलती रहती है। स्वामी सत्यप्रसन्नानन्द, स्वामी सुबोधानन्द, स्वामी अद्वैतानन्द, स्वामी सूर्यानन्द प्रभृति साधक रुद्राक्ष को विश्व का सर्वश्रेष्ठ वरदान मानते हैं। वस्तुतः भारत में अद्भुत रहस्य भरे पड़े हैं, आवश्यकता है इन्हें समझने की और इसके रहस्यों को विश्व के सामने प्रकट करने की। अब वह समय आ गया है, जब कि हम पुनः जाग्रत होकर भारतीय तन्त्र-मन्त्र को सही वैज्ञानिक रूप में विश्व के सामने रखें। वस्तुतः इन मन्त्र-तन्त्र सिद्धियों के मूल में रुद्राक्ष का योगदान बेजोड़ है।

कनकधारा यन्त्र पर मेरे कुछ अनुभूत प्रयोग

धनपति बनना बुरी बात नहीं है। सम्पन्न होना अपराध नहीं है। गृहस्थ जीवन की सुख-शान्ति का आधार जहां मधुर पारस्परिक सम्बन्ध है, वहां आर्थिक सम्पन्नता भी है। धन-प्राप्ति के लिए कनकधारा यन्त्र साधना शीघ्र फलदायक तथा विशेष प्रभावयुक्त है।

आप भी धन प्राप्त करना चाहते हैं न? तो फिर कनकधारा यन्त्र साधना सम्पन्न कीजिए और सुख भोगिए आर्थिक अनुकूलता का। किसी जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं – बस, घर, दुकान में कनकधारा यन्त्र की स्थापना कर दीजिए, नित्य प्रति कनकधारा स्तोत्र का पाठ कीजिए और देखिए इसका चमत्कारी प्रभाव।

गृहस्थ जीवन मनुष्य का श्रेष्ठतम वरदान है। गृहस्थ जीवन का आधार जहां पत्नी, पुत्र, बन्धु-बान्धव हैं, वहीं दूसरी ओर आर्थिक पक्ष भी है। आर्थिक न्यूनता की वजह से परिवार में जो शान्ति और सुख होना चाहिए वह सम्भव नहीं हो पाता। परन्तु जिस प्रकार से जीवन भाग रहा है, और जैसी महंगाई चारों तरफ़ व्याप्त है, उससे केवल मात्र अर्थोपार्जन से ही सारी समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता। इसके लिए श्रेष्ठ अर्थोपार्जन तथा धन-संचय आवश्यक है।

लक्ष्मी प्राप्त करना या लक्ष्मी पति बनना कोई बुरा कार्य नहीं है। धन संचय करना या श्रीसम्पन्न होना अपराध नहीं है। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने, साधु और महर्षियों ने कुछ ऐसे प्रयोग भी हमें दिए हैं, जिन्हें अपनाकर हम अल्प समय में विशेष सम्पन्न और धन संचय करने में सक्षम हो पाते हैं।

जहां तक मेरा अनुभव है, आर्थिक सम्पन्नता एवं लक्ष्मी प्रसन्नता के लिए जितने भी मन्त्र-तन्त्र एवं अनुष्ठान हैं, उनमें कनकधारा साधना सबसे अधिक प्रभावयुक्त, महत्त्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है। इस यन्त्र में कुछ ऐसी विशेषता है कि यह स्वयं

ही अर्थोपार्जन के कुछ ऐसे नये रास्ते बनाता है जिस पर चलकर साधक या गृहस्थ अल्प समय में ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में सफलता प्राप्त कर लेता है।

यदि कनकधारा यन्त्र के सामने कनकधारा स्तोत्र का पाठ किया जाए, तो तुरन्त फलदायक होता है। मनुष्य अपने क़र्ज़ से शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त करता है और अपनी दरिद्रता को दूर भगाने में समर्थ हो पाता है। कनकधारा स्तोत्र की शब्द-रचना ही कुछ इस प्रकार से गुम्फित है कि एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। मैंने कई लोगों से कनकधारा यन्त्र साधना सम्पन्न करवाई है, और इससे जो अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए हैं यदि उनको लिपिबद्ध किया जाए, तो वस्तुतः एक बहुत बड़ा ग्रन्थ बन सकता है। मैं कुछ प्रामाणिक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं कि किस प्रकार से कनकधारा यन्त्र साधक की समस्याओं के निराकरण में सहायक हुआ है।

कनकधारा यन्त्र मन्त्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठायुक्त होता है, अतः इस पर विशेष प्रयोग या विधि-विधान करने की आवश्यकता साधक को या गृहस्थ को नहीं होती। उसको घर में स्थापित करने के लिए भी कोई विशेष जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि नित्य इसके सामने अगरबत्ती और दीपक जलाया जाए। यह कार्य स्वयं गृहस्वामी या स्वामिनी, पुत्र, पुत्र-वधू, पुत्री या श्रेष्ठ वर्ण का कोई नौकर कर सकता है। यदि कभी यह भी न हो या घर से बाहर जाते समय दीपक, अगरबत्ती जलाना सम्भव न हो, तो भी इससे कोई बाधा नहीं होती, क्योंकि यह यन्त्र मन्त्रसिद्ध होने के कारण स्वतः ही चैतन्य रहता है। इसके लिए नित्य स्नान या पूजा करने की भी आवश्यकता नहीं होती। यदि इस यन्त्र के सामने साबक या घर का कोई व्यक्ति अथवा ब्राह्मण कनकधारा स्तोत्र का पाठ करे तो अद्भुत फल प्राप्त होता है। कनकधारा का हिन्दी पाठ भी किया जा सकता है।

अब मैं कुछ प्रामाणिक और विश्वसनीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं –

जोधपुर के एक व्यापारी अत्यन्त समृद्ध थे। उनकी कई दुकानें थीं और लाखों में खेलते थे। परन्तु समय ने ऐसा पलटा खाया कि धीरे-धीरे उनका व्यापार कमज़ोर हो गया और वे दिवालिया होने की स्थिति में आ गए। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि एक-दो दिन में ही दिवाला निकलने वाला है। इससे पूर्व उनकी दुकान की साख दूर-दूर तक फैली हुई थी। उन्होंने काफ़ी प्रयत्न किया, इधर-उधर भाग-दौड़ की, परन्तु कोई ऐसा रास्ता न निकल सका जिससे दिवालिया होने से बचा जा सके।

एक दिन जब क़र्ज़दारों ने उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा परेशान किया, तो उनकी आत्मा कुंठित हो गई और अपने पूजा-घर में जाकर कनकधारा यन्त्र के सामने गिर गए। उनकी

आंखों से आंसुओं की धाराएं बहने लगीं। मुंह से बोल नहीं फूट रहे थे। गले में हिचकियां भर गई थीं। फिर उन्होंने अपनी व्यथा यन्त्र के सामने यह कहकर संकल्प लिया कि मैं जब तक कनकधारा स्तोत्र के 101 पाठ नहीं कर लूंगा, तब तक मैं न तो बाहर निकलूंगा और न कुछ खाऊंगा। यदि इस बार भी मेरी समस्या का समाधान न हो सका तो या तो मृत्यु दे दे अथवा मुझे संकट से उबार ले।

उन्होंने वहीं पर बैठे-बैठे कनकधारा स्तोत्र के पाठ प्रारम्भ किए और लगभग 6 घंटों में उन्होंने 101 पाठ सम्पन्न कर लिए। आश्चर्य की बात यह है कि जब 6 घंटे बाद सेठ जी पूजा-गृह से बाहर आए, तो उनके मित्र बम्बई निवासी रामदयाल जी वहां उपस्थित थे। किसी समय सेठ जी ने रामदयाल जी के यहां नौकरी की थी और उसके बाद एक समय ऐसा भी आया था, जब सेठ जी ने लगभग ढाई लाख रुपया रामदयाल जी को उधार दिया था। मगर इसके बाद कुछ कारणों से आपस में ग़लतफ़हमियां पैदा हो गई थीं। सेठ जी ने उन पर ढाई लाख रुपयों के लिए मुक़दमा दायर कर दिया था। पर वे हाईकोर्ट तक मुक़दमा हार गए। इस प्रकार सेठ जी ने निश्चय कर लिया था कि अब यह रुपए मेरे जीवन में वापस नहीं आ सकेंगे।

इधर रामदयाल जी वृद्ध हो गए थे। एक दिन बैठे-बैठे उनके दिमाग़ में आया कि यद्यपि मुक़दमा हम जीत गए हैं, परन्तु यह बात तो स्पष्ट ही है कि उनसे ढाई लाख रुपया लिया था और हमने लौटाया नहीं है। अब मेरी अन्तिम अवस्था है, मरने के बाद मैं ईश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा? यह विचार आते ही उसी समय ढाई लाख रुपए लेकर जोधपुर आकर सेठ जी को देने और क्षमा मांगने का निश्चय किया।

ज्यों ही सेठ जी पूजा-गृह से बाहर निकले, रामदयाल जी ने लपककर उनके चरण छू लिये। सेठ जी ने उन्हें उठाकर अपने गले से लगा लिया और कहा, "भाई रामदयाल, यह क्या ग़ज़ब कर रहे हो। तुम आयु में मुझसे बड़े हो। चरण छूने का अधिकार तो मुझे मिलना चाहिए।" फिर वे दोनों निजी कक्ष में गए जहां रामदयाल जी ने थैली में से ढाई लाख के नोट निकालकर उनके सामने रख दिए, और कहा, "यद्यपि मुक़दमा मैं जीत गया हूं, पर नैतिकता की दृष्टि से तुम हमेशा जीते हुए हो। तुम्हारा ढाई लाख मुझ पर बकाया निकलता था और जब तक मैं ये तुम्हें नहीं देता, तब तक मेरे मन को किसी प्रकार से शान्ति नहीं मिल सकती। अब कृपया इन ढाई लाख रुपयों को स्वीकार कर, मुझे क्षमा कर दो।"

आश्चर्यजनक यन्त्र के आश्चर्यजनक प्रभाव को देखकर सेठ जी गद्गद हो गए और उन रुपयों से उन्होंने अपनी दुकान की प्रतिष्ठा बनाए रखी।

एक दिन बातों-ही-बातों में सेठ जी ने मुझसे कहा था, "पंडित जी, उस दिन के बाद से मैंने इसके पाठ को एक दिन के लिए भी नहीं भुलाया था। चौबीस घंटों में एक बार कनकधारा यन्त्र के सामने स्तोत्र का पाठ अवश्य कर लेता हूं। इस बीच मेरे जीवन में सैकड़ों कठिनाइयां भी आई हैं, पर वे समस्याएं अपने-आप सुलझती चली गईं।"

मुरादाबाद के सेठ रमेशकुमार गुप्ता प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने सारे व्यापार को इधर-उधर से समेटकर एक मैदा मिल में अपनी सारी पूंजी लगा दी। इसके साथ-ही-साथ उन्होंने शक्कर बनाने का कारख़ाना भी स्थापित कर लिया। परन्तु घटनाचक्र कुछ इस प्रकार से घूमा कि उनका व्यापार लगभग ठप्प हो गया। जो कुछ पूंजी थी, वह व्यापार में फंसा चुके थे। और इसके बाद जितना ही ज़्यादा धन इसमें लगाते उतना ही वह डूबता जाता। साल दो साल के बाद वे बुरी तरह घबरा गए और उनकी आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया। वे कमज़ोर हो गए और चेहरे पर झुर्रियों ने दुख का स्थायी प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया।

उन्हीं दिनों गुप्ता जी मेरे सम्पर्क में आए और उन्होंने अपनी पूरी करुण कथा मुझे सुनाई। उन्होंने यह भी कह दिया कि अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं बचा है और मैं चाहते हुए भी इस कारख़ाने को बेच नहीं सकता, क्योंकि बेचने पर भी मैं अपने सारे क़र्ज़ों से मुक्त नहीं हो सकता।

मैंने उन्हें एक कनकधारा यन्त्र घर में और एक-एक यन्त्र कारख़ाने तथा मैदा मिल में स्थापित करने की सलाह दी और कहा कि आप नित्य एक बार यन्त्र के सामने कनकधारा स्तोत्र का पाठ अवश्य कर लें। यह प्रयोग देखने में भले ही छोटा हो, परन्तु आपको महीने-भर में ही इसका प्रभाव अवश्य दिखाई देगा।

उन्होंने मेरे कहने के अनुसार कनकधारा यन्त्र स्थापित किए और संस्कृत न जानने के कारण स्तोत्र का हिन्दी पाठ नित्य शुरू किया।

गुप्ता जी और उनका व्यापार साक्षी है कि छः महीनों के भीतर-भीतर वे अपने व्यापार को कितना अधिक ऊंचे स्तर पर ले गए हैं। अब तो उन्होंने अपने पूरे स्वजनों में कनकधारा यन्त्र बांट दिए हैं। उन्होंने कहा कि यह एक पुण्य का कार्य है, डूबते हुए व्यक्ति को बचाने का कार्य है। जो भी उनसे मिलता है, उससे कनकधारा स्तोत्र की प्रशंसा करते वे नहीं थकते। दिल्ली के लाला हंसराज किराने के एक सामान्य व्यापारी थे और बड़ी कठिनाई से उनकी गुज़र हो रही थी। घर में चार जवान पुत्र थे, परन्तु किसी की नौकरी नहीं लग रही थी, और दुकान से इतनी आय नहीं हो पाती थी, जिससे

कि वे आसानी से अपनी गृहस्थी चला सकें। इसलिए वे अत्यन्त दुखी थे। उन्होंने कहीं से क़र्ज़ आदि लेकर एक छोटा-सा व्यापार पुत्र के लिए प्रारम्भ किया, तो उस व्यापार में ज़बरदस्त घाटा हुआ और पूंजी भी डूब गई। साथ ही उन पर क़र्ज़ा हो गया जिससे कि वे चिन्ता में घुलने लगे और उनका स्वास्थ्य चौपट हो गया।

उनकी पत्नी भली महिला थी और उनका ननिहाल जोधपुर था। एक बार वे मेरे घर आई हुई थीं। बातचीत में उन्होंने मेरी पत्नी से अपनी व्यथा और आर्थिक विषमता की कहानी कही, तो पत्नी ने सारी बात मेरे सामने रख दी। मैंने बताया कि बड़ा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है। तुम मेरे यहां से कनकधारा यन्त्र ले जाकर बुधवार के दिन अपने घर में स्थापित कर लो और फिर नित्य इसके सामने एक कनकधारा स्तोत्र का पाठ अवश्य करो। ईश्वर चाहेगा तो कुछ ही दिनों में क़र्ज़े से मुक्ति मिल जाएगी और समस्याओं का समाधान भी हो जाएगा। उन्होंने गत वर्ष जनवरी में कनकधारा यन्त्र अपने घर में स्थापित किया था और यह आश्चर्य ही है कि केवल एक वर्ष में ही उनके दो पुत्रों की नौकरी लग गई और बाक़ी दो पुत्रों ने अलग-अलग स्थानों पर किराने की दुकानें खोल ली हैं, जो कि अच्छी चल रही हैं। लाला हंसराज जी का क़र्ज़ा कभी का समाप्त हो चुका है। आज उनके घर में टी.वी. और फ्रिज जैसे भौतिक साधन भी उपलब्ध हैं। वे अत्यन्त सुखी हैं और इतने कम समय में कनकधारा यन्त्र के प्रभाव को देखकर आश्चर्यचकित हैं।

वास्तव में यह यन्त्र अत्यन्त शक्ति-सम्पन्न है और दरिद्रता मिटाने, व्यापार की उन्नति में सहयोगी होने तथा उन्नति में विशेष रूप से सहायक है। वास्तव में प्रत्येक गृहस्थ के घर में कनकधारा यन्त्र होना अमृत तुल्य है और यदि इतना श्रेष्ठ यन्त्र भारतवर्ष में होते हुए भी भारतवासी इसका लाभ नहीं उठा पाते, तो यह उनका दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। अतः आगे की पंक्तियों में कनकधारा स्तोत्र और उसका हिन्दी पाठ प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री कनकधारास्तोत्रम्

अंगं हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृगांगनैव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला मागंल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ॥ 1 ॥
मुग्ध्या मुहुर्विदधती वदनै मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरविमहोत्पले या सा मै श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ 2 ॥
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धमिन्दोवरोदरसहोदरमिन्दिरायः ॥ 3 ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम।
आकेकरस्थितकनी निकपक्ष्म नेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ॥ 4 ॥
बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतो पि कटाक्षमाला कल्याणभावहतु मे कमलालयायाः ॥ 5 ॥
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ 6 ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावानमांगल्यभाजि मधुमायनि मन्मथेन।
मध्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्द्ध मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ 7 ॥
दद्याद दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिंचनविहंगशिशौ विषण्ण।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥ 8 ॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यथा ययार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ 9 ॥
गीर्देवतैति गरुडध्वजभामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ 10 ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपात्रनिकेतानायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥ 11 ॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ 12 ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणाद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥ 13 ॥
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य कलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनांगमानसंस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ 14 ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमात्यशेभै।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ 15 ॥
दग्धिस्तिमिः कनककुम्भमुखावसृष्टिस्वर्वाहिनी विमलचारुजलप्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ 16 ॥
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरां गतैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिंचनानां प्रथमं पात्रकृत्रिमं दयायाः ॥ 17 ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरभूमिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ 18 ॥

इति श्री मच्छंकराचार्यविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

हिन्दी पाठ

जैसे भ्रमरी अधखिले कुसुमों से अलंकृत तमाल-तरु का आश्रय लेती है, उसी प्रकार जो श्रीहरि के रोमांच से सुशोभित श्री अंगों पर निरन्तर पड़ता रहता है, तथा जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, सम्पूर्ण मंगलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी का वह कटाक्ष मेरे लिए मंगलदायी हो ॥ 1 ॥ जैसे भ्रमरी महान कमलदल पर मंडराती रहती है, उसी प्रकार जो मुर-शत्रु श्रीहरि के मुखारविन्द की ओर बराबर प्रेमपूर्वक जाती और लज्जा के कारण लौट जाती है, समुद्रकन्या लक्ष्मी की वह मनोहर मुग्ध दृष्टिमाला मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान करे ॥ 2 ॥ जो सम्पूर्ण देवताओं के अधिपति इन्द्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ है, मधुहन्ता श्रीहरि को भी अधिकाधिक आनन्द प्रदान करने वाली है तथा जो नील-कमल के भीतरी भाग के समान मनोहर जान पड़ती है, उन लक्ष्मी जी के अधखुले नेत्रों की दृष्टि क्षण-भर के लिए मुझ पर भी थोड़ी-सी अवश्य पड़े ॥ 3 ॥ शेषशायी भगवान विष्णु की धर्मपत्नी श्रीलक्ष्मी जी का नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो, जिसकी पुतली तथा बरौनियां अनंग के वशीभूत (प्रेमपरवश) हो अधखुले, किन्तु साथ ही निर्निमेष नयनों से देखने वाले आनन्द कन्द श्रीमुकुन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती है ॥ 4 ॥ जो भगवान मधुसूदन के कौस्तुभमणि-मंडित वक्षस्थल में इन्द्रनीलमयी हारावली-सी सुशोभित होती है तथा उनके भी मन में काम (प्रेम) का संचार करने वाली है, वह कमल-कुंजवासिनी कमला की कटाक्ष माला मेरा कल्याण करे ॥ 5 ॥ जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार जो कैटभशत्रु श्रीविष्णु के काली मेघमाला के समान श्यामसुन्दर वक्षस्थल पर प्रकाशित होती हैं, जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी है, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करे ॥ 6 ॥ समुद्र-कन्या कमला की वह मन्द, अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित दृष्टि, जिसके प्रभाव से कामदेव ने मंगलमय भगवान मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था, यहां मुझ पर पड़े ॥ 7 ॥

भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म (धनागम-विरोधी अशुभ प्रारब्ध) रूपी धाम को चिरकाल के लिए दूर हटाकर विषाद-रूपी धर्मजन्यताप से पीड़ित मुझ दीनरूपी चातक पर धनरूपी जलधारा की वृष्टि करे ॥ 8 ॥ विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रीति पात्र होकर जिस दया दृष्टि के प्रभाव से स्वर्ग पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, पद्मासना पद्मा की वह विकसित कमल-गर्भ के समान कान्तिमयी दृष्टि मुझे मनोवांछित पुष्टि प्रदान करे ॥ 9 ॥ जो सृष्टि-लीला के समय वाग्देवता (ब्रह्म-शक्ति) के रूप में विराजमान होती है तथा

प्रलय-लीला के काल में शाकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखरवल्लभा पार्वती (रुद्र-शक्ति) के रूप में अवस्थित होती है, त्रिभुवन के एक मात्र पिता भगवान नारायण की उन नित्ययौवना प्रेयसी श्री लक्ष्मी जी को नमस्कार है॥ 10॥ मातः! शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है। रमणीय गुणों की सिन्धु रूपा रति के रूप में आपको नमस्कार है। कमल वन में निवास करने वाली शक्ति-स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुष्टि-रूपा पुरुषोत्तमप्रिया को नमस्कार है॥ 11॥ कमल-वदना कमला को नमस्कार है। क्षीरसिन्धु सम्भूता श्रीदेवी को नमस्कार है। चन्द्रमा और सुधा की सगी बहन को नमस्कार है। भगवान नारायण की वल्लभा को नमस्कार है॥ 12॥

कमल सदृश नेत्रों वाली माननीया मां! आपके चरणों में किए गए प्रणाम सम्पत्ति प्रदान करने वाले, सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाले, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पापों को हर लेने के लिए सर्वथा उद्यत हैं, वे सदा मुझे ही अवलम्बन दें (मुझे ही आपकी चरण-वन्दना का शुभ अवसर सदा प्राप्त होता रहे)॥ 13॥ जिनके कृपाकटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती है, श्रीहरि की हृदयेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मी देवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूं॥ 14॥ भगवति हरिप्रिया! तुम कमल वन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में नीला कमल सुशोभित है। तुम अत्यन्त उज्ज्वल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभित हो। तुम्हारी झांकी बड़ी मनोरम है। त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवि! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ॥ 15॥ दिग्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराए गए आकाश गंगा के निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्री अंगों का अभिषेक (स्नान कार्य) सम्पादित होता है, सम्पूर्ण लोकों के अधीश्वर भगवान विष्णु की गृहिणी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगज्जननी लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूं॥ 16॥ कमल-नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले! मैं अकिंचन (दीन-हीन) मनुष्यों में अग्रगण्य हूं, अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूं। तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरह तरंगों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी ओर देखो॥ 17॥ जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदत्रयी-स्वरूपा त्रिभुवन-जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुति करते हैं, वे इस भूतल पर महान गुणवान और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान पुरुष भी उनके मनोभाव को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं॥ 8॥

नवग्रह उपासना

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई-न-कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह ख़राब स्थान में बैठकर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं। इन ग्रहों की शान्ति के लिए उनकी उपासना करना चाहिए। प्रस्तुत है इस लेख में नवग्रह-उपासना पद्धति –

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्त्व है, जितना कि भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की उपासना का। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जितने भी उपनयन, विवाह आदि संस्कार होते हैं, इन सबमें नवग्रहों का विशेष महत्त्व है। किसी भी प्रकार का यज्ञ नवग्रह स्थापन के बिना अपूर्ण रहता है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रहों के माध्यम से ही होती है। इसलिए गणेश आदि की स्थापना के साथ-ही-साथ नवग्रह की स्थापना होनी भी आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल बारह राशियां होती हैं, और प्रत्येक राशि का स्वामी कोई-न-कोई ग्रह है। मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल, वृष और तुला का शुक्र, कन्या और मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु और मीन का गुरु तथा मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि है। मनुष्य की आयु 120 वर्ष की मानी गई है, इसमें से सूर्य की दशा छः वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, राहु की अठारह वर्ष, गुरु की सोलह वर्ष, शनि की उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष और शुक्र की बीस वर्ष मानी है। जन्मकुंडली के अनुसार जब कोई ग्रह ख़राब स्थान में बैठकर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को पीड़ा, कष्ट और दुःख भोगने के लिए विवश होना पड़ता है।

किस ग्रह की शान्ति के लिए क्या पाठ, जप, श्रवण आदि करना चाहिए, इसकी तालिका आगे दी जा रही है –

ग्रह	आराधन	धारण	दान
सूर्य	हरिवंशपुराणश्रवण	माणिक्य	गेहूं, गाय, गुड़, तांबा, सोना, लाल वस्त्र।
चन्द्रमा	शिव-स्तुति	मोती	चावल, कपूर, सफ़ेद वस्त्र, चांदी, शंख वंशपात्र, सफ़ेद चन्द्र, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती।
मंगल	शिव-स्तुति	प्रबाल	तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम।
बुध	अमावस्या-व्रत	पन्ना	कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंग, पन्ना, सुवर्ण, दासी, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस भोजन, घृत, सर्वपुष्प।
गुरु	अमावस्या-व्रत	पुखराज	लाल वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र।
शुक्र	गौ-पूजा	हीरा	चांदी, सोना, चावल, घी, सफ़ेद वस्त्र, सफ़ेद चन्दन, हीरा, सफ़ेद अश्व, दही, गन्धद्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।
शनि	मृत्युंजय जप	नीलम	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण।
राहु	मृत्युंजय जप	फिरोजा	अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कम्बल, खड्ग।
केतु	मृत्युंजय जप	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, बैदूर्य, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण।

यदि पाठक चाहें तो वे स्वयं सम्बन्धित ग्रह का मन्त्र जप कर सकते हैं। बीज मन्त्र के जप करने से विपरीत ग्रहों के प्रभाव में न्यूनता आती है और वे अनुकूल फल देने लगते हैं।

नीचे मैं प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित मन्त्र, बीज मन्त्र तथा जप संख्या का विधान स्पष्ट कर रहा हूं –

1. सूर्य (मंडल के मध्य में लाल, गोलाकार)

मन्त्र : ओऽम् आ कृष्णेन रजसा वर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानू पश्यन्॥
सूर्याय नमः।।

बीज मन्त्र : ओऽम् हां हीं हां सः सूर्याय नमः।

जप : 7000, समय उदयकाल।

2. चन्द्रमा (अग्निकोण से श्वेत, अर्धचन्द्र)

मन्त्र : ओऽम् इम देवा असपत्नं सुबध्वं महते क्षत्राय
महते ज्येष्ठ्याय महते जानराजयेन्द्रन्स्येन्द्रियाय।
इममुष्य पुत्रमुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वो मी राजा सोमो स्माकं ब्राह्मणानां राजा।।
सोमाय नमः॥

बीज मन्त्र : ओऽम् श्रीं श्रीं श्रां सः चन्द्राय नमः॥

जप : 11,000, सन्ध्याकाल।

3. मंगल (दक्षिण में लाल, त्रिकोण)

मन्त्र : ओऽम् अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेतां ग्वं सि जिन्वति। भौमाय नमः॥

बीज मन्त्र : ओऽम् क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः॥

जप : 10,000, समय घड़ी 2।

4. बुध (ईशानकोण में हरा, बाण)

मन्त्र : ओऽम् उद्बुध्यस्वाग्नो प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्तं स ग्वं सृजेथामयं अस्मिन्सधस्थे
अध्युत्तरस्मिनू विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥
च बुधाय नमः।

बीज मन्त्र : ओऽम् ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जप : 19,000, समय घड़ी 5।

5. गुरु (उत्तर में पीला, अष्टदल)

मन्त्र : ओऽम् बृहस्पते अति यदयो अर्हाद् द्युमद् बिभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छ्वस कृतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
बृहस्पतये नमः॥

बीज मन्त्र : ओऽम् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः ॥
जप : 19,000, समय सन्ध्याकाल।

6. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंचकोण)

मन्त्र : ओऽम् अन्नात्परिश्रुतां रसं ब्रह्मणां व्यपिवत् क्षत्र पयः सामं प्रजापतिः। कृतेन सत्यमिन्द्रियंपिवान् बुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयौ मृतं मधु॥ शुक्राय नमः।
बीज मन्त्र : ओऽम् द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
जप : 6000, समय सूर्योदय।

7. शनि (पश्चिम में काला, मनुष्य)

मन्त्र : ओऽम् शनो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। यौरभि स्रवन्तु नः॥ शनैश्चराय नमः।
बीज मन्त्र : ओऽम् प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥
जप : 23,000, समय सन्ध्या।

8. राहु (नैऋत्यकोण में काला, मकर)

मन्त्र : ओऽम् कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्ठया वृता। राहवे नमः।
बीज मन्त्र : ओऽम् भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः।
जप : 18,000, समय रात्रि।

9. केतु (वायव्यकोण में काला, ध्वजा)

मन्त्र : ओऽम् केतुं कृण्वन्नेकतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः। केतवे नमः॥
बीज मन्त्र : ओऽम् स्त्रां स्त्रौं स्त्रौ सः केतवे नमः।
जप : 17,000, समय रात्रि।

विधान

शास्त्रों के अनुसार सर्वप्रथम ग्रह शान्ति हेतु जिस ग्रह की उपासना करनी हो, उसका बीज मन्त्र लिखकर उसका पूजन किया जाना चाहिए और उसके बाद उसका मन्त्र जपना चाहिए। स्वस्थ शरीर, आयु, यश, धन-प्राप्ति तथा दुख-नाश के लिए वेद व्यास जी द्वारा वर्णित नव ग्रह स्तोत्र का नित्य पाठ अत्यन्त लाभदायक माना गया है।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमो रिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।
दधिशंखतुषारामं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।
धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।
प्रियंगुकलिकाश्याभ रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकस्य तं नमामि बृहस्पतिम्।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।
इति व्यासमुखोदगीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौर विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारी नृपाणां च भवेद्दुः स्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।

प्रत्येक साधक का पाठक किसी-न-किसी क्रूर ग्रह से प्रभावित रहता ही है। मंगल, शनि और राहु क्रूर ग्रह माने गए हैं तथा सूर्य और केतु विपरीत फल देने में सहायक होते हैं।

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियां, कार्य में विलम्ब, असफलता, मानहानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की समस्याएं नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें, तो यह जान लें कि किसी-न-किसी क्रूर या पापी

ग्रह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है। अतः बुद्धिमानीपूर्वक इसका शमन कर लेना चाहिए।

सर्व सुलभ विघ्नहर नवग्रह यन्त्र

जब जीवन में ज़रूरत से ज़्यादा बाधाएं और अड़चनें अनुभव होती हैं, तब इस प्रकार का यन्त्र धारण कर लेना चाहिए। यह यन्त्र प्रत्येक प्रकार के विपरीत ग्रहों के प्रभाव को दूर करने में समर्थ होता है।

अनुभव में यह आया है कि विघ्नहर नवग्रह यन्त्र प्रत्येक बालक, पुरुष और स्त्री के लिए आवश्यक है। पति की उन्नति एवं सुखमय गृहस्थ जीवन के लिए भी यह यन्त्र प्रत्येक स्त्री के लिए आवश्यक माना गया है। यदि किसी कन्या का विवाह नहीं हो रहा हो या सगाई-विवाह में बाधाएं आ रही हों, तो उसके लिए भी यह यन्त्र विशेष अनुकूल कहा जाता है। यदि घर में बीमारियों और परेशानियों ने डेरा जमा रखा हो तो यह यन्त्र तुरन्त धारण कर लेना चाहिए। यों भी मेरे अनुभव से प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बालक को यह यन्त्र धारण किए रहना चाहिए जिससे कि उसे जीवन में विशेष बाधाओं का सामना न करना पड़े। यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावपूर्ण है। इसको धारण करने के बाद किसी प्रकार की उपासना, जप आदि, रत्न धारण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

आजकल रत्न अत्यन्त महंगे हो गए हैं और उनकी परीक्षा तथा प्रामाणिकता भी सन्दिग्ध हो गई है। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र विशेष कारगर है और यह पूरे जीवन-भर के लिए अनुकूल बना रहता है। सुश्रुत के अनुसार बालकों पर आक्रमण करने वाले नव बाल ग्रह और हैं। ये दिव्य देहविशिष्ट हैं। इनमें से कुछ पुरुष हैं और कुछ स्त्रियां हैं। इनके नाम हैं – 1. स्कन्द, 2. स्कन्दापस्मार, 3. शकुनी ग्रह, 4. पूतनाग्रह, 5. अन्धपूतनाग्रह, 6. शीतपूतना, 7. रेवती ग्रह, 8. मुखमन्तिकग्रह और 9. नैगमग्रह।

इस यन्त्र को रविवार के दिन धूप देकर पुरुष की दाहिनी भुजा में तथा स्त्री की बाईं भुजा में बांध देना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का धागा प्रयोग किया जा सकता है। बालकों को यह यन्त्र गले में पहनाना चाहिए।

मन्त्रों के दस संस्कार

सभी मन्त्र किसी-न-किसी दोष से युक्त होते हैं – यह बात अटपटी तो लगेगी, लेकिन है सच। उन दोषों को दूर करने के लिए उनका संस्कार किया जाना चाहिए। वरना वे अक्षरों का समूह मात्र बनकर रह जाते हैं।

विशेष रूप से मान्त्रिकों के लिए उपयोगी इस लेख में मन्त्रों का संस्कार करने की विधि समझाई गई है, ताकि मन्त्र-जाप का पूरा-पूरा लाभ मिल सके। साधना करने वाले व्यक्तियों को कभी-कभी पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। इसका मूल कारण यह भी होता है कि मन्त्र का संस्कार नहीं किया गया था। वस्तुतः जो साधक बिना संस्कार किए, मन्त्र जपता रहे, उसे किसी भी प्रकार से सफलता प्राप्त नहीं हो पाती।

दोषानिमान विज्ञाय तो मन्त्रान् भजते जडः।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥

विश्व में सात करोड़ मन्त्र हैं, मगर सभी मन्त्र किसी-न-किसी दोष से युक्त हैं। मन्त्रों के सैकड़ों दोष होते हैं, अतः सामान्य रूप में मन्त्र जपने से सफलता सम्भव नहीं होती। अतः साधकों को चाहिए कि मन्त्र जपने से पूर्व उसका संस्कार कर लें, जिससे कि मन्त्र साधना में पूर्ण सफलता मिल सके।

1. जनन, 2. दीपन, 3. बोधन, 4. ताडन, 5. अभिषेक, 6. विमलीकरण, 7. जीवन, 8. तर्पण, 9. गोपन और 10. आप्यायन – ये दस संस्कार माने जाते हैं कि मन्त्र को शुद्ध करने के लिए आवश्यक है।

1. जनन

भोजपत्र पर गोरोचन, कुंकुम, चन्दनादि से आत्माभिमुख त्रिकोण लिखें, फिर तीनों कोणों में छः-छः रेखाएं खींचें। ऐसा करने पर 49 त्रिकोण कोष्ठ बनेंगे। उनमें ईशानकोण से मातृकावर्ण लिखकर देवता का आवाहन-पूजन करके मन्त्र का एक-एक वर्ण उद्धार करके अलग पत्र पर लिखें। ऐसा करने पर 'जनन' नामक प्रथम संस्कार होगा।

2. दीपन

हंस मन्त्र का सम्पुट करने से एक हज़ार जप द्वारा मन्त्र का दूसरा 'दीपन' संस्कार होता है। यथा – हंस रामाय नः सोऽहम्।

3. बोधन

हूं बीज सम्पुट मन्त्र का पांच हज़ार जप करने से 'बोधन' नामक तीसरा संस्कार होता है। यथा ह्रूं रामाय नमः ह्रूं।

4. ताड़न

फट् सम्पुटित मन्त्र का एक हज़ार जप करने से 'ताड़न' नामक चतुर्थ संस्कार होता है। यथा – फट् रामाय नमः फट्।

5. अभिषेक

भूर्जपत्र पर मन्त्र लिखकर 'रों हंसः ओं' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करें और एक हज़ार बार जपे हुए जल से अश्वत्थपत्रादि द्वारा मन्त्र का अभिषेक करें। ऐसा करने पर 'अभिषेक' नामक पांचवां संस्कार होता है।

6. विमलीकरण

'ओं त्रों वषट्' इन वर्णों से सम्पुटित मन्त्र का एक हज़ार जप करने से 'विमलीकरण' नामक छठा संस्कार होता है। यथा – ओं त्रों वषट् रामाय नमः वषट् त्रों ओं।

7. जीवन

स्वधा वषट् सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हज़ार जप करने से 'जीवन' नामक सातवां संस्कार होता है। यथा – स्वधा वषट् रामाय नमः वषट् स्वधा।

8. तर्पण

दुग्ध, जल, घृत से मूल मन्त्र से सौ बार 'तर्पण करना ही तर्पण' संस्कार होता है।

9. गोपन

'ह्रीं' बीज-सम्पुटित एक हज़ार जप करने से 'गोपन' नामक नवम् संस्कार होता है। ह्रीं रामाय नमः ह्रीं।

10. आप्यायन

'ह्लौं' बीज-सम्पुटित एक हज़ार जप करने से 'आप्यायन' नामक दसवां संस्कार होता है। यथा – ह्लौं रामाय नमः ह्लौं।

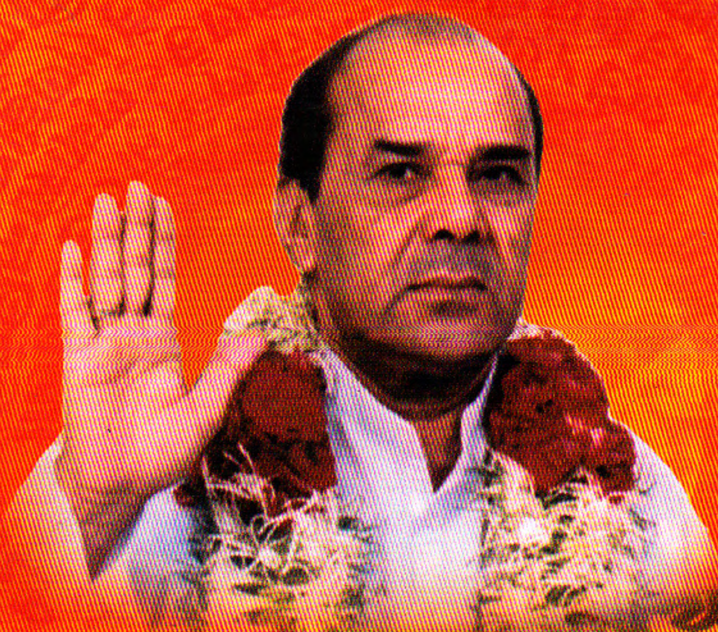
इस प्रकार संस्कृत किया हुआ मन्त्र शीघ्र सिद्धिप्रद होता है।

प्रसंगवशात् दीपस्थान (कूर्मचक्र) का भी निर्णय लिखते हैं। ऐसा कहा गया है, 'दीपस्थान' समाश्रित्यं कृतं कर्म फल प्रदम्।'

जिस स्थान में, क्षेत्र में, नगर में, वह गृह में पुरश्चरण करना हो उसके नौ समान भाग कल्पना करके मध्यभाग में स्वर लिखे और पूर्वादि क्रम से कवर्गादि लिखे ईशान कोण में ल, क्ष लिखें।

जिस कोष्ठ में क्षेत्र का पहला अक्षर हो, उस कोष्ठ को मुख समझना चाहिए। उसके दोनों ओर के दो कोष्ठ भुजा, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठ कुक्षि, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठ पैर, शेष कोष्ठ पुच्छ समझने चाहिए। मुख स्थान में जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है, भुजा में स्वल्पजीवन, कुक्षि में उदासीनता, पैरों में दुःख और पुच्छ में हत्या, बन्धन (जेल) आदि पीड़ा होती है।

•••



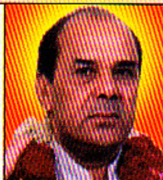
जीवन की पूर्णता मन्त्रों के माध्यम से ही सम्भव है। आने वाले समय की दुर्घटनाएं, संकट, बाधाएं और कठिनाइयां दूर करने का एकमात्र उपाय है मन्त्र, जिनके द्वारा जीवन के कांटों से भरे रास्ते को भी सरल और सुगम बनाकर उन्नति प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए मन्त्रों को जीवन का प्रकाश-स्तम्भ कहा गया है।

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने इस पुस्तक में वे मन्त्र दिए हैं, जो सर्वथा गोपनीय रहे हैं और दुर्लभ भी।

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य एक अनुभव-सिद्ध रचना है। डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से प्राप्त मन्त्र-साधनाओं का समावेश करके इसे अत्यधिक प्रामाणिक और उपयोगी बना दिया गया है।

 हिन्द पॉकेट बुक्स

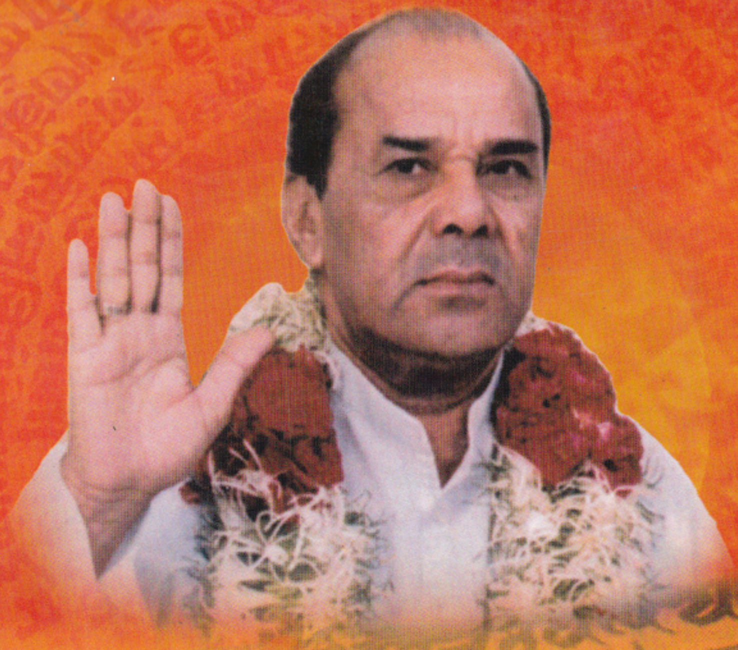
Rs. 125
तन्त्र-मन्त्र
TANTRA-MANTRA
AHW HPB HINDI SERIES
Please visit:
www.hindpocketbooks.in



ISBN 978-81-216-0258-7



FP1206



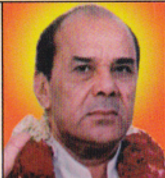
जीवन की पूर्णता मन्त्रों के माध्यम से ही सम्भव है। आने वाले समय की दुर्घटनाएं, संकट, बाधाएं और कठिनाइयां दूर करने का एकमात्र उपाय है मन्त्र, जिनके द्वारा जीवन के कांटों से भरे रास्ते को भी सरल और सुगम बनाकर उन्नति प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए मन्त्रों को जीवन का प्रकाश-स्तम्भ कहा गया है।

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने इस पुस्तक में वे मन्त्र दिए हैं, जो सर्वथा गोपनीय रहे हैं और दुर्लभ भी।

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य एक अनुभव-सिद्ध रचना है। डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से प्राप्त मन्त्र-साधनाओं का समावेश करके इसे अत्यधिक प्रामाणिक और उपयोगी बना दिया गया है।


हिन्द पॉकेट बुक्स

Rs. 125
तन्त्र-मन्त्र
TANTRA-MANTRA
AHW HPB HINDI SERIES
Please visit:
www.hindpocketbooks.in



ISBN 978-81-216-0258-7


FP1206



गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

5405-05-HH

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, भविष्यवक्ता और तन्त्र-मन्त्र विशेषज्ञ

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

मन्त्र–साधनाओं पर एक प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक रचना



प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, भविष्यवक्ता और तन्त्र-मन्त्र विशेषज्ञ

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

मन्त्र-साधनाओं पर एक प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक रचना



गोपनीय दुर्लभ मन्त्रों के रहस्य

मन्त्र-साधना वास्तव में जीवन में पूर्णता लाती है, इसके माध्यम से हम आने वाली बाधाओं और कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं तथा आर्थिक उन्नति भी प्राप्त कर सकते हैं।

पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा, बच्चों का बौद्धिक-विकास, पति-पत्नी सम्बन्धों में मधुरता, शत्रु-भय से मुक्ति, कन्या-विवाह, व्यापार-वृद्धि जैसे और भी अनेकानेक कार्य मन्त्रों की शक्ति से सिद्ध किए जा सकते हैं, इसीलिए इन्हें जीवन का प्रकाश-स्तम्भ कहा गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ज्योतिषाचार्य, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र विद्या विशारद और भविष्यवक्ता डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से प्राप्त मन्त्र-साधनाओं द्वारा इस पुस्तक को प्रामाणिक और महत्वपूर्ण बना दिया है।